Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

जन ज्ञान

मार्गशीर्ष संवत् २०२७
दिसंम्बर १९७०

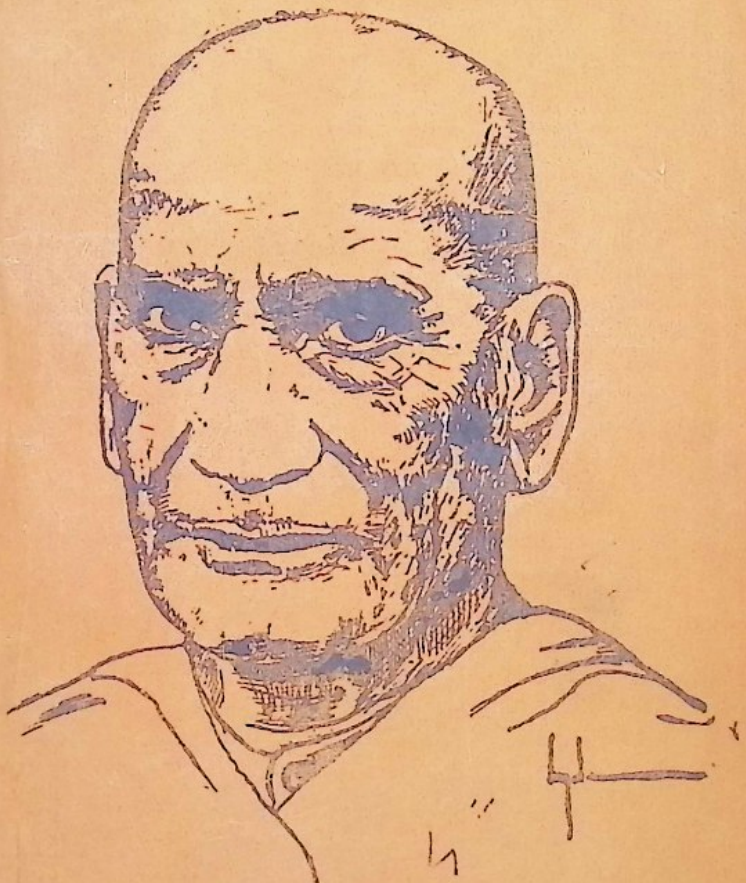

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

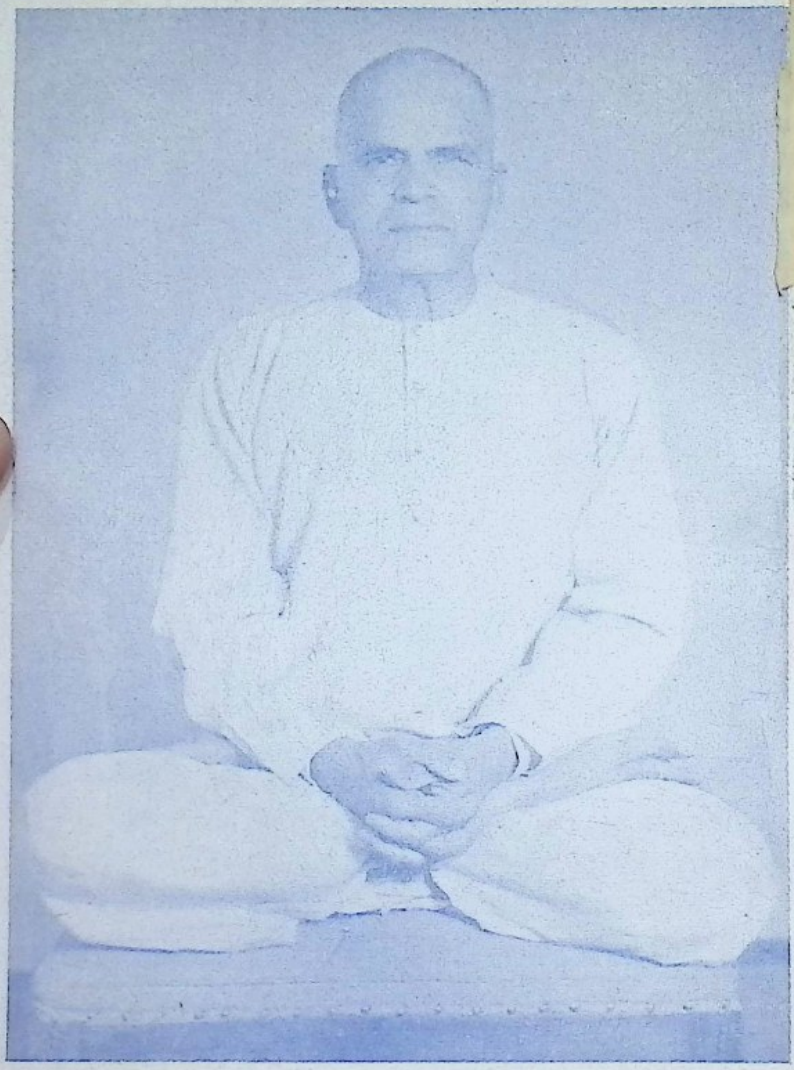

आदर्श योगी : स्वामी योगेश्वरानन्द जी सरस्वती

अन्य चित्र टाइटिल के पृष्ठ ३ पर व लेख जनवरी अंक में पढ़ें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदोपदेश

अपने प्रभु से !

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि
बलमसि बलं मयि धेह्योजोऽ स्योजो मयि धेहि
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि

भावार्थ :—हे परम पिता परमात्मन् ! आप तेजस्वरूप हैं, जीवों को प्रभावित एवं आकर्षित करने वाले हैं मेरे जीवन में तेज-पर—पराभव सामर्थ्य एवं आकर्षण शक्ति प्रदान कीजिए शक्तिशालिन् ! आप शक्ति के अनन्त भण्डार हैं, मेरे जीवन में भी शक्ति का संचार कीजिए । हे बलस्वरूप ! आप बल के आगार हैं मुझे भी बलशाली बनाइए । आप ओज स्वरूप हैं मुझ में भी ओज का आधान कीजिए । आप देव ! दुष्टों के दलनकर्ता हैं मुझे भी आततायी, देश, धर्म और संस्कृति पर प्रहार करने वाले शत्रुओं पर क्रोध करने का सामर्थ्य दीजिए । आप सहनशील हैं मुझे भी कष्टों में, आपत्तियों और विपत्तियों में सहनशील रहने की शक्ति प्रदान कीजिए । —जगदीश विद्यार्थी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आप इतना भी नहीं कर सकते ?

"जन-ज्ञान" का संचालन उस के सदस्य ही कर रहे हैं और उन्हीं के प्रयत्नों से ही संपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं।

किन्तु कभी-कभी आलस्य प्रमाद से हमारे कतिपय सदस्य चन्दा समाप्ति की सूचना मिलने पर न धन भेजते हैं, न उत्तर देते हैं और वी० पी० पी० भेजी जाती है तो लौटा देते हैं।

एक वी० पी० पी० लौटाने में १)५० की हानि होती है।

अतः अच्छा तो यही है कि धन समाप्ति की सूचना मिलते ही आप १० रु० मनीआर्डर से भेज दें और यदि किसी कारण से सदस्य न रहना चाहें तो दस पैसे खर्च कर एक कार्ड भेज कर हमें सूचित अवश्य कर दें।

वस्तुतः हम 'जन-ज्ञान' के ऐसे सदस्य चाहते हैं जो इसे अपना समझें। इस की उन्नति के लिए यत्नशील हों और इस के द्वारा महर्षि की लक्ष्य पूर्ति के लिये प्रयत्न शील हों। जो अपना कार्य समझ इस का प्रचार करें।

'जन-ज्ञान' के सदस्यों पर ही इसकी प्रगति और उन्नति निर्भर है। अतः यह साधारण सा सहयोग तो प्रत्येक सदस्य अवश्य ही दे कि चन्दा समाप्ति की सूचना मिलते ही—

या तो धन भेज दें या एक कार्ड डाल कर मना कर दें।

आप का यह साधारण सा सहयोग हमारे लिए बहुत बड़ा सहायक होगा। आशा है कि सभी इस ओर ध्यान देंगे।

विनीता

राकेश रानी

संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—संरक्षक—
चौ० प्रताप सिंह

★

संचालक
भारतेन्द्र नाथ

★

धरती के प्रत्येक मानव के हृदय मन्दिर पर 'वेद-ज्ञान' की पावन पताका फहराने के लिए

आर्य जनता का
अपना
प्रतिनिधि प्रकाशन

'जन-ज्ञान'

(मासिक)

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग
(निकट ३१ नाईवाला)
करोलबाग, नई दिल्ली-५

★

फोन : ५६६६३९

—संपादक—
—राकेश रानी—

★

वार्षिक मूल्य १०)
एक प्रति १)
विदेश में एक पौण्ड
वर्ष ३ अंक ८

बलिदान दे सकोगे क्या ?

अपने स्वार्थों का,
अपने पक्षपात का,
मन की कलुष कालिमा का,
असत्य का,
जो तुम्हारा अभिन्न साथी है।
तुम कहते हो, सच बोलो,
पर क्या कभी तुम सच बोलते हो ?
है साहस तुम में,
कि तुम कह सको
कि तुम में कितना झूठ भरा है
तुम सचमुच में क्या हो ?

इस धरती पर स्वर्ग है 'सत्य'
जिस की छाया से भी तुम डरते हो।
कायर, स्वार्थी, पशु बनकर,
सत्य का ढ़ोंग रचकर
असत्य की गाड़ी पर सवार तुम !
तुम्हें सब कुछ मिलेगा,
पर मंजिल नहीं मिलेगी।

तुम मनुष्य हो,
प्रभु की श्रेष्ठतम संतान,
पर प्रभु तुम्हें स्मरण नहीं,
अरे ! तुम तो अपने को ही भूल चूके

भटकते हुए, तुम से
मैं पूछता हूं·····क्या तुम
इस भटकने का बलिदान दोगे
झूठ को छोड़ सकोगे ?

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजी भाषा में

महर्षि का जीवन चरित्र

जिसका पहला संस्करण ७०० से अधिक पृष्ठों में है
स्व० श्री छज्जूसिंह जी द्वारा लिखित
आपके, प्रभु के विश्वास पर प्रेस में दे दिया है
हमारे पास एक पैसा भी नहीं और इसे छपाने लिए
हजारों रुपया चाहिए

★

जैसे आपने अंग्रेजी सत्यार्थप्रकाश छपा
दिया—उसी तरह इसे भी छपाइये ।

★

आपका आशीर्वाद ही हमारी शक्ति है ।

गुरुदेव दयानन्द का अंग्रेजी जीवन चरित्र छपाने हेतु आज ही अपनी आहुति भेजिये

—राकेश रानी
सम्पादक

कृपया अपना शुल्क

चन्दा समाप्ति की सूचना मिलते ही भेज दें ।

वी० पी० पी० की प्रतीक्षा न करें

यह आपका आगे बढ़ने हेतु हमें भारी सहयोग होगा

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

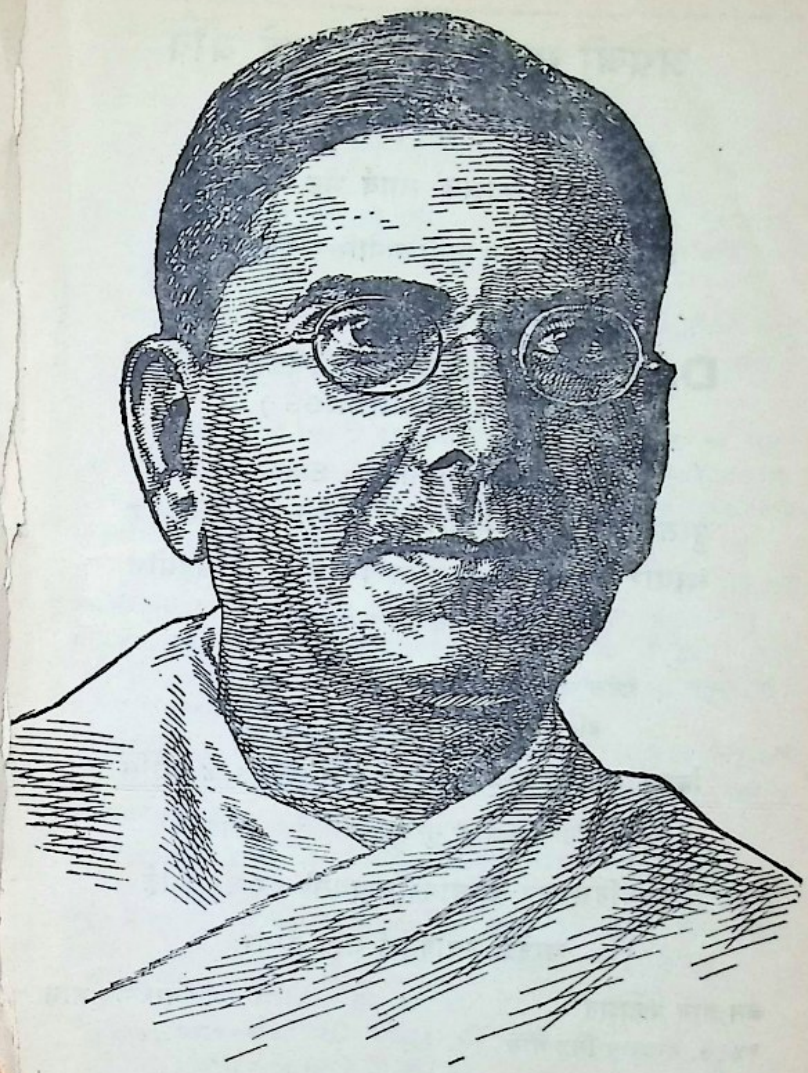

स्व० देशबन्धु चितरन्जन दास

आपकी जन्म शताब्दी सारे देश ने मनायी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश के बाद

अब

'जन ज्ञान प्रकाशन' सगर्व भेंट करता है

महर्षि दयानन्द का सबसे प्रामाणिक जीवन चरित्र

Swami Dayananda Saraswati

(LIFE & TEACHINGS)

By

Late Shri Chhajju Singh

पुस्तक को पं० लेखराम जी के जीवन-चरित्र के आधार पर लाला लाजपतराय आदि के सहयोग से तैयार किया गया था।

अनेक आकर्षक चित्रों सहित : २३×३६ साइज

बढ़िया कागज : सजिल्द मूल्य केवल ८)

किन्तु १५ दिसम्बर १९७० तक केवल ४) प्रति

अपनी प्रतियां आज ही सुरक्षित करा लें : शीघ्रता करें

१५ दिसम्बर के बाद रियायती दर पर कोई आदेश स्वीकार्य नहीं होगा

—भारतेन्द्र नाथ
संचालक

जन-ज्ञान प्रकाशन
१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग
नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रक्त पुकारता है . . .

प्रसिद्ध लोकोक्ति है कि रक्त जब पुकारता है तो जिनके शरीर में रक्त दौड़ता है, वे उसकी पुकार सुनते हैं और इस तरह धरती पर गिरा खून कभी व्यर्थ नहीं जाता।

श्रद्धानन्द ने भी बलिदान दिया था, उसने भी सीने पर गोलियां खाई थीं, उस का खून भी जब धरती पर गिरा था, तो उस ने किसी को पुकारा था, पर किसी ने क्या वह पुकार सुनी ?

शहीद संन्यासी के रक्त की पुकार सुनी गयी होती तो भारत का मान-चित्र आज कुछ और होता। सांप्रदायिकता का विषधर कहीं खोजने पर भी न मिलता और न होती वह तबाही, जो १९४७ से १९७० तक आजादी के साथ-साथ हम भुगत रहे हैं।

मत-मजहब की लाशें जब तक धू-धू कर पवित्र अग्नि में जला नहीं दी जायेंगी तब तक उनकी सडांध से दम घुटता रहेगा और फैलते विष से मानवता मरती रहेगी। संन्यासी का रक्त व्यक्ति या वर्ग विशेष की नहीं संसार से उन सब दीवारों की समाप्ति की मांग कर रहा है जो मनुष्य और मनुष्य के मध्य दीवार बन कर खड़ी हैं।

बलिदान दिवस मनाने का क्या लाभ जब हम अपने स्वार्थों की बलि नहीं दे सकते ? क्या औचित्य है उन लच्छेदार श्रद्धांजलियों का, जिनमें शब्द हैं पर श्रद्धा नहीं है ?

श्रद्धा और आनन्द का प्रेरक वीर श्रद्धानन्द तो बलिदान वेदी पर अमर हो गया किन्तु हम उसका नाम लेने वाले आज अश्रद्धा में पड़े दुःख इकठ्ठे करने में लगे हैं। वैदिक विचारधारा के शत्रु आज वैदिक विचारधारा प्रसारक संगठन पर अधिकार कर शहीद की फुलवाड़ी उजाड़ रहे हैं।

चमन वीरान होता जा रहा है,
अमन पर छा रही है मृत्यु की छाया,
विषैली आग बढ़ती जा रही है,
कौन ज्योतित कर सकेगा प्राण छवि अब ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धरती पर और मेरे देश में भी जो उलझने हैं उनमें सबसे बड़ी उलझन पशुता की ओर बढ़ते मनुष्य को मनुष्य बनाने की है। शहीद के रक्त की पुकार अगर सुनने की शक्ति किसी के मन में, मस्तिष्क में हो तो वह सुने और यत्न करे कि स्वयं मनुष्य बने फिर श्रद्धा के बल और आनन्द की प्रेरणा से प्रेम की गंगा बहाने का व्रत ले ताकि खून की पुकार प्यार के गीत सुन शांति प्राप्त कर सके।

अमरता मिले या न मिले, हम जिएं या मर जाएं, चिन्ता नहीं, हमारा काम तो केवल इस धरती पर साकार स्वर्ग लाना है। मनुष्य-मनुष्य के मध्य खड़ी समस्त मज़हब और जाति की दीवारें गिराकर एक ऐसा संसार बनाना है जिसके हर घर में शांति थिरकती हो और आनन्द गूंजता हो।

श्रद्धानन्द की शहादत का यही संदेश है—

हम काम करें !

अपनी बहनों से मैं विशेष रूप से यह कहना चाहती हूँ कि वे अपने मन में रचनात्मक कार्य करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करें। जहां-जहां भी स्त्री आर्य समाजें हैं वे अपना ऐसा कार्यक्रम बनाएं कि घरों में आर्य समाज का संदेश पहुंचा सकें।

भाषण देने या सुनने मात्र से हमारा भला होने वाला नहीं है। हमें अगर आगे बढ़ना है तो परिवारों तक अपनी विचारधारा पहुंचानी होगी। दुर्भाग्य से आज प्रदर्शनात्मक प्रवाह में सभी बह रहे हैं और आर्य बन्धु भी। यह प्रवाह न रुका तो सब कुछ बह जाएगा।

इसलिए मेरी प्रार्थना है कि बहिनें समय निकाल कर परिवारों में संपर्क की योजनाएं बनाएं। अपना साहित्य घरों में पहुँचाएं, और धीरे धीरे निजी प्रभाव से परिवारों के विचार बदलने का यत्न करें। महीने में ४ दिन यदि ४ परिवारों में हम १-१ घटा भी दें तो वर्ष में सैकड़ों परिवारों तक वेद का पावन सदेश पहुंचाने का पुण्य हमें प्राप्त हो सकता है।

आर्य बहनों का कर्त्तव्य है कि वे निष्ठा और श्रम पूर्वक "वेद-ज्योति" के प्रसार का पावन संकल्प लें। अपनी अंतरंग या साधारण सभा बुला कर वर्ष भर का कार्यक्रम निश्चित करें। काम और केवल काम लक्ष्य रहे। घर-घर तक वेद का संदेश पहुंचाने का संकल्प जिस दिन आर्य बहनें ग्रहण करेंगी उस दिन इतिहास का एक नया अध्याय आरंभ होगा।

—राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

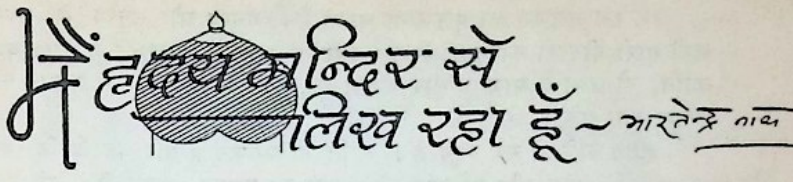

भूल बस इतनी है...

मृत्यु रूपी शेर यदि हमें दीखता रहे तो हमें पाप कैसे सूझेगा ? पाप करने के लिए निश्चिंतता चाहिए। मृत्यु का स्मरण सदा रहे तो हमें यह ज्ञान रहेगा कि यहाँ से पता नहीं कब जाना पड़े, इस के बाद पाप हमारे पास भी नहीं फटक सकता।

सचमुच जीवन में जीते हुए भी "जीवन" हम से कितनी दूर रहता है। आनन्द की खोज में हमें मिला है केवल दुःख:, कारण है अज्ञात। दुःख की राह पर चलकर हमने दुःख की खोज की पर विपरीत मार्ग पर चल मंजिल किसे मिली हैं जो हमें मिलती ?

बहुत सोचा है पर समस्या का हल नहीं मिलता कि इस मनुष्य नाम के प्राणी को हो क्या गया है। प्रभु को छोड़ वह शैतान की गोदी में बैठने के लिए क्यों उत्सुक है। उस का सारा ज्ञान उसे पशु बना रहा है। पशुता उभरती जा रही है, मनुष्य मरता जा रहा है उस की लाश से उठती बदबू से नाक फट रही है, पर कभी कभी हम सोचते हैं कि आखिर इस सब का अन्त क्या होगा ?

विद्या मंदिर हों या धर्म स्थान, उपदेश स्थल हों या मनोरंजन स्थल, सर्वत्र जो चिन्तन है वह पशुता का है। उन्नति और प्रगति का अर्थ हो गया बनावट। इस दौड़ में मनुष्य धन, संपत्ति, पद और विद्या पाकर भी शान्ति को प्राप्त नहीं कर पा रहा है।

सोचना हूँ यह कैसी विद्या है जो आनन्द नहीं देती। यह कैसा ज्ञान है जो अशान्ति देता है, वर्षों के अध्ययन का परिणाम है स्वार्थ साधन, आत्म-विस्मृति और शायद मुक्त उच्छृंखलता। विज्ञान हो या ज्ञान सब भटक रहे हैं।

मनुष्य और मनुष्य के बीच की दीवार ऊंची होती जा रही है, एकता है तो पशुता में। स्वार्थ की उलझनें कुछ ऐसी हैं कि सभी उलझ गए हैं, दार्शनिक भी, चिन्तक और विचारक भी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम इस उलझन को सुलझाना चाहते हैं। मनुष्य और मनुष्य के मध्य खड़ी सारी दीवारों का नामों निशान मिटाना चाहते हैं। चाहते हैं लाना वह क्रांति, जो जला दे आज के सारे अज्ञान को, और दे वह ज्ञान, जो मनुष्य को मनुष्य बना सके।

शांति नहीं तो सब व्यर्थ है। क्रांति भी असफल है यदि वह शांति की जनक नहीं। मन और मस्तिष्क की प्रेरणा का आधार अज्ञान है। हम उसे ज्ञान समझ बैठे हैं। यही हमारी भूल है। बस यह भूल सुधर जाए तो दुनिया बदल जाए।

इस भूल सुधार के लिए मेरे गुरु दयानन्द ने आर्य समाज को जन्म दिया था। श्रद्धानन्द का रक्त भी इसीलिए धरती पर गिरा था और मैं भी इसीलिए आपको जगाना चाहता हूँ कि आप भूलों को राह बता सकें।

हम यदि केवल इतना स्मरण कर लें कि हमें यहाँ से जाना भी है तो रास्ता बदल सकता है। भूल बस इतनी ही है कि हम समझते हैं कि हमने सदा यहीं रहना है।

नादान इन्सान ! सोच तो सही सदा कौन रहा है जो तू रहेगा ? फिर क्यों इकट्ठी कर रहा है पाप की गठड़ी ?

आहुति चाहिए : व्यक्तियों की

हमें कुछ ऐसे योग्य व्यक्ति चाहिएं जो अपना संपूर्ण जीवन ऋषि दयानन्द के लिए दे सकें। राजनीति की छाया से दूर रह कर जो वेद ज्योति को फैलाने का व्रत ले सकें।

आत्माहुति देने वाले व्यक्तियों के सादर भरण पोषण का, उनके परिवार के प्रत्येक दायित्व का बोझ हम पर होगा। वर्तमान से दूर सतयुग के विधान, सतयुग के निर्माण में सब कुछ सौंप देने वाले आर्य ऋषि पुत्र चाहिएं।

खोज का यह आरंभ १-२ से है बाद में हजारों व्यक्तियों की आहुति से हम उस पवित्र यज्ञ को सफल करना चाहते हैं जिसे देव दयानन्द ने आरंभ किया था।

अभी तो खोज आरंभ की है, प्रतिक्षण रहेगी उनकी, जो वैदिक धर्म की जय के लिए अपने को मिटाने को तत्पर हों। उत्तर की प्रतीक्षा में···आस लगाए बैठा हूँ

शाबास दे रहा हूँ !

धर्म के नाम पर अधर्म जिस प्रबल स्वर में फुंकार रहा है उसे देख हम यह सोचने पर विवश हैं कि हम कहां हैं ? हमारी नाक के नीचे राजधानी में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नेता जी ! आप सभी की सीमा बना रहे हैं। बच्चों की, सोने चांदी की, जमीन जायदाद की, रुपए पैसों की, पर भैया जी ! अपने भाषणों, नारों और झूठे वायदों की सीमा आप कब बनाएंगे ?·····

(शंकर वीकली से साभार)

एक ओर 'जय माता दी' के स्वर ने प्रबल बल पाया है तो दूसरी ओर 'हंस', 'निरंकारी' आदि के वार्षिक अधिवेशनों ने हमारी आखें खोली हैं।

किन्तु इससे क्या, राजधानी के १५० आर्य समाज और उनके अधिकारी तो घोड़े बेच कर सोए हैं। अनधिकृत व्यक्तियों के हाथों से आर्य समाज का गला घोटा जा रहा है। राजनीति के भूत ने रही सही कसर पूरी कर दी है और हम अनुभव कर रहे हैं कि दिल्ली में भवन चाहे कितने बड़े हों आर्य समाज में 'प्राण' नहीं हैं।

कोई स्वर नहीं जो दयानन्द के गीत गुंजा सके। बढ़ते अधर्म प्रवाह को रोक सके, सब शान्त हैं। ओ३म शान्ति, शान्ति, शान्ति का पाठ मृत्यु के गीत गाकर खूब मजे में हो रहा है।

बढ़ने दो पाप को, डुबा दो दयानन्द के नाम और काम को, शाबाश दे रहा हूँ तुम्हारी इस नींद पर कि वह सिर पर नगाड़े बजने पर भी खुलती नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आश्रम की स्थापना का प्रयास

मैं किसी ऐसे स्थान की खोज में हूं जहां देव दयानन्द के दिव्य स्वप्नों को मूर्त रूप देने का केन्द्र बनाया जा सके। हरिद्वार दिल्ली और आस-पास के क्षेत्र में कुछ स्थान देखे भी हैं पर अभी कुछ निर्णय नहीं कर सका।

गीता प्रेस गोरखपुर जैसा विशाल प्रकाशन संस्थान, और एक ऐसा पवित्र आश्रम बना कर बैठने की इच्छा है जहां वैदिक परिवार को मूर्त रूप दिया जा सके। देश-देशान्तरों में वेद-ज्योति प्रसारित करने के लिए साधना स्थल कर्म भूमि की खोज जारी है।

राजधानी का तामसिक वातावरण कल्पनाओं को पीछे ले जाता है, चाह भी अधूरी है। परीक्षण करना है अपना, कार्य करना है ऋषि का, देखें कब प्रभु कामना पूरी करेंगे। अपने को तिल-तिल जला कर भी ज्योति की एक भी किरण बखेर सका तो जीवन सफल समझूंगा।

उत्सवों पर : धर्म सम्मेलन

आर्य समाज के उत्सव होते हैं, उनमें पर्याप्त धन व्यय होता है किन्तु उन का क्या लाभ है. यह बहुत सोचने पर भी समझ नहीं आया। क्योंकि इन उत्सवों में सब कुछ होता है पर आर्यसमाज का संदेश नहीं होता।

वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना हमारा परम धर्म है पर इस धर्म का पालन करने वाला कोई नहीं। इस बीच राजधानी के कई उत्सव देखे हैं, विशाल आयोजन भी देखे, सब कुछ देखा पर उनमें वेद प्रचार नहीं देखा। सोचता हूँ कि यदि हमने ही वेद को भुला दिया तो फिर उनका प्रसार कौन करेगा ?

वेद की ऋचाओं के गीत आज हमें भाते नहीं। धर्म के स्वरूप को हमने समझा नहीं इसलिए भटकन बढ़ रही है। यदि आर्य समाजों के अधिकारी ध्यान दें सकें तो मैं उन से कहूँगा कि वे अपने वार्षिकोत्सव समारोह में धर्म सम्मेलन का आयोजन अवश्य करें।

इस सम्मेलन में धर्म और अधर्म के अंतर को स्पष्ट करें। धर्म क्या है अधर्म क्या हैं यह बताएं और समझाएं धर्म केवल एक है और वह अमृत है, मजहब जहर है मेरी दृष्टि में आज की सब से बड़ी आवश्यकता संसार को यह समझाने की है कि धर्म और मजहब में क्या अंतर है ?

आज संकट है धर्म पर, धर्म गया तो फिर रहेगा क्या ? इसलिए धर्म की रक्षा के लिए हम जो कुछ भी कर सकते हों करें।

काम करो ! काम.....

भाषण बहुत दे लिए, सुन भी बहुत लिए अब तो कुछ करने का, या मरने का समय आ गया है। बात कुछ ऐसी बिगड़ी है कि यदि सारी मोर्चा बन्दी न बदली तो फिर कुछ बचेगा नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पच्चीसवीं बार दल बदलने पर बधाई ! आशा है कि शीघ्र ही हमें शताब्दी मनाने का भी अवसर प्राप्त करायेंगे। —(शंकर वीकली से साभार)

आज आवश्यकता इस बात की है कि आर्य समाज के प्रतिनिधि इकट्ठे होकर शांत वातावरण में सोचें कि हमें करना क्या चाहिए। प्रचार के ढंग में तुरन्त आमूल परिवर्तन होना चाहिए। कार्य पद्धति भी बदलनी चाहिए।

यह सम्मेलन सार्वदेशिक सभा बुलाए तो उत्तम रहेगा, पर आन्दोलन की भाषा में नहीं, सोचें और कुछ करें। भाषण देने और सुनने की बीमारी जब तक खत्म नहीं होगी आर्य समाज आगे न बढ़ सकेगा। क्या आर्य समाज के अधिकारी नींद खोलने हेतु तैयार हैं ?

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान-प्रकाशन सगर्व भेंट करता है—

१९७१ का आकर्षक कलैंडर

२२×३२ साइज में

महर्षि दयानन्द के अपूर्व चित्र में :

मूल्य केवल ५० पैसे । डाक/रेल व्यय पृथक

रेल से कम से कम २५ प्रतियां मंगाएं

चित्र देखकर आप मुग्ध हो जाएंगे

आज ही अपना आदेश भेजिए

★

कतिपय नये प्रकाशन

२. **आर्य समाज के दस नियम**---आर्य समाज के दस नियमों की प्रभावशाली व्याख्या प्रसिद्ध विचारक श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक ने तैयार की है । पं० चमूपति जी के Ten Commandments के आधार पर) —१०) सैकड़ा

३. **आर्य कौन ?** श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक लिखित यह ट्रैक्ट प्रचार के लिए उत्तम है । —१०) सैकड़ा

४. **माँ गायत्री**—१०१ गायत्री मंत्रों की व्याख्या मूल्य १)

५. **अमर शहीद श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द का संक्षिप्त जीवन चरित्र** १५) सैकड़ा

६. **स्वास्थ्य शत्रु : अंडा**—आचार्य जगदीश विद्यार्थी लिखित । १०) सैकड़ा

७. **मर्यादा पुरुषोत्तम राम**—पं० दीनानाथ सिद्धान्तालंकार लिखित २०) सैकड़ा

अपना आदेश आज ही भेजिये

ज न ज्ञा न प्र का श न

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमर शहीद श्रद्धानन्द

*

महात्मा मुन्शीराम का जन्म १८५६ ई० में जालन्धर जिले के तलवन नाम के कस्बे में हुआ। ये एक क्षत्रिय कुल के थे, जिनमें भक्ति और निर्भीकता की परम्परा चली आती थी। इनके पिता लाला नानकचन्द ने १८५७ के विद्रोह में सरकार की सेवा की थी। उसके पारितोषिक रूप में उन्हें कोतवाल का पद प्राप्त हुआ था। उनके जीवन का अधिक समय पश्चिमोत्तर (संयुक्त) प्रान्त में बीता। वे कोतवाल के पद पर बनारस, मिर्जापुर, बलिया, बरेली, बदायूं, आदि स्थानों में ज्यादा रहे। मुन्शीराम उनकी सन्तानों में सबसे छोटा था, इसलिए इनसे घर में सबसे अधिक लाड़ चाव किया जाता था।

मुन्शीराम की प्रारम्भिक शिक्षा पहले तो पंडितों और मास्टरों के द्वारा घर पर और फिर नियमित रूप से एक हिन्दी स्कूल में हुई। तुलसीकृत रामायण का पाठ लाला नानकचन्द बड़े चाव से किया करते थे। मुन्शीराम ने इस ग्रन्थ के कई स्थल कण्ठस्थ कर लिए। बड़े होकर भी ये तुलसी के दोहों और चौपाइयों का उच्चारण मजे ले-लेकर करते थे। ऐंट्रेन्स की शिक्षा के लिए बनारस के स्कूल में भर्ती हुए। १८६४ में परीक्षा दी। इनका पास होना निश्चित था परन्तु एक विषय का पत्र प्रकट हो गया। उसकी परीक्षा फिर हुई और ये उसमें सम्मिलित न हो सके। ये अपने पूर्व से नियत समय विभाग के अनुसार तलवन पहुँच गये। पहले वर्ष के अध्ययन के भरोसे ये दूसरे वर्ष पुस्तकों से उपेक्षा किये रहे। विद्यालय जाना ही बन्द कर दिया। उपन्यास तथा नाटक पढ़ने की चाट तभी से पड़ी। यह उपेक्षावृत्ति यहाँ तक बढ़ी कि इस वर्ष परीक्षा में बैठे ही नहीं। आखिर अगले वर्ष अर्थात १८६६ में ऐंट्रेन्स पास की।

जिन दिनों मुन्शीराम इन परीक्षाओं की तैयारी के लिए काशी में निवास करते थे, इनके पिता बलिया में थे। इस प्रकार ये स्वतन्त्र थे। कुश्ती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गदका तथा लाठी का अभ्यास इन्होंने इस स्वतन्त्रता की अवस्था में किया। शरीर बलिष्ठ था। निर्बल लड़कों को गुण्डों से बचाने में बल का खूब सद्-प्रयोग हुआ। परन्तु उपन्यासों के अध्ययन और अनुचित संगति ने मदिरा-पान तथा हुक्के की लत भी पैदा कर दी। काशी के घाटों पर से दो देवियों को 'राक्षसों' के हाथों से बचा लाए। आर्य साहित्य का अभ्यास होता तो इनके अपने कथनानुसार ये उनके राखी बंधे भाई बन जाते।

"१८७८ में मुन्शीराम का विवाह हो गया। लाला देवराज की बहन शिवदेवी उनकी धर्मपत्नी थी। यह देवी पुराने ढंग की सरल प्रकृति की सती-साध्वी गृहिणी थी। ऐसी गृहिणियां आजकल कम मिलती हैं। एक तो उस समय उनकी आयु छोटी थी। दूसरे, लाला मुन्शीराम पर उस समय पाश्चात्यता सवार थी। वे एक सरल आर्य गृहिणी की महत्ता को नहीं समझ सकते थे। सती का जौहर उन पर खुला तो उस समय जब ये मदिरा से उन्मत्त होकर घर लौटे, किसी सहायक की सहायता से छत पर पहुँचे और वहां जाते ही कै कर दी। पतिपरायणा शिवदेवी ने इस वीभत्स अवस्था में भी उनसे घृणा के स्थान में प्रेम का व्यवहार किया। उनके वस्त्र बदलवाए उन्हें कुल्ला कराया और सुला कर आधी रात गये तक पतिदेव के सारे शरीर को दबाती रही। वे सो गए और यह जाग तथा भूखी रह कर उन की सेवा में तत्पर रही। उन्होंने भूखा रहने का कारण पूछा तो सरल स्वभाव से बोली पतिदेव से पूर्व भोजन कैसे करती? उस रात दम्पति ने मिलकर उपवास किया। आर्य विवाह केवल कपड़ों की नहीं, हृदयों की गांठ होती है—इसका अनुभव मुन्शीराम को इस रात हुआ।

"शिवदेवी की पति-भक्ति का दूसरा उज्ज्वल प्रमाण उस दिन मिला, जब इसी सुरा-पान ही के व्यसन ने उन्हें सैकड़ों रुपयों का ऋणी बना दिया वे रुपये की चिन्ता में चूर बैठे थे कि अर्धांगिणी ने अपने हाथों के कड़े उतार कर दे दिये और कहा—इन्हें बेच कर ऋण चुका दो।

"शराब पीने वाले देवियों पर कैसे घोर अत्याचार करते हैं, इसका एक उदाहरण इनके हम-प्याला मित्र ही की बैठक में उस मित्र के अपने हाथों उपस्थित हो गया। यह देखते ही उन्हें सुरापान से घृणा हो गई। मूर्ति-पूजा से विमुख हो जाने का कारण भी एक ऐसी ही घटना हुई। पुजारी ने पैर छू रही एक महिला का हाथ पकड़ लिया और वह चिल्ला उठी—इस दृश्य ने मुन्शीराम तथा उनके साथी को मन्दिर से उपरत कर दिया। इससे पूर्व काशी के मन्दिरों में रेवा की रानी की उपस्थिति के कारण अन्य दर्शनार्थियों पर शिवजी के दर्शन का द्वार निरुद्ध पाकर ये सोचने लगे थे कि क्या परमेश्वर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी राजा और रंक में भेद करता है ? इस प्रकार हिन्दू धर्म में इन्हें अनास्था हो गई, और एक कैथोलिक पादरी के साथ बप्तिस्मा का समय भी निश्चित कर लिया। परन्तु जब पादरी के घर गये तो वहां भी ऐसा ही दुराचार होता दिखाई दिया। उनकी दृष्टि एकाएक उस घिनौने दृश्य पर जा पड़ी और इन्होंने निश्चय किया कि सब धर्म सदाचार के शत्रु हैं।

इधर बरेली में अपने पिता जी के साथ ऋषि दयानन्द के व्याख्यानों में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हो गया। ऋषि काशी पधारे थे तो इनकी माता ने इस भ्रम से कि जादूगर आया है, जो हिन्दुओं का धर्म हर लेता है, इन्हें तथा इनके भाई को घर पर रोके रखा था। पर अब तो स्वयं पिता ही उस जादूगर की माया में फंस से गए थे। ऋषि के एक दिन के शास्त्रार्थ में लाला मुन्शीराम उपस्थित थे। ऋषि के स्थान पर जाकर उनका शंका-समाधान सुनने का शुभ अवसर भी इन्हें उपलब्ध हो गया। ये सब घटनाएं चुपके-चुपके किसी विचित्र भविष्य की तैयारी करा रही थीं। मुन्शीराम रिंद रह कर भी महात्मा बनने के परोक्ष संस्कार उपलब्ध कर रहा था। इन संस्कारों का परिपाक समय चाहता था जो प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने आप प्राप्त होता जा रहा था।

एफ० ए० के पहले वर्ष की परीक्षा तो मुन्शीराम ने पास कर ही ली परन्तु दूसरे वर्ष की परीक्षा एक बार बनारस से और दूसरी बार इलाहाबाद से दी और दोनों बार असफल हुए। दूसरी बार इन्होंने तैयारी भी अच्छी की थी परन्तु रोगी होने के कारण एक विषय में ८ अंकों की कमी रही, इसलिए ये अनुत्तीर्ण रहे।

पुत्र को इस प्रकार उच्च शिक्षा पाने में असमर्थ देखकर इनके पिता ने इन्हें बरेली का स्थानापन्न नायब तहसीलदार बनवा दिया। एक मास इन्होंने तहसीलदार का काम भी किया परन्तु सेना छावनी में इनके आदमियों को रसद की कीमत न मिली। इस पर इन्होंने अपने आदमियों को कर्नल के देखते-देखते लौटा लिया। कर्नल को साफ कह दिया कि मूल्य के बिना रसद नहीं मिलेगी। डिप्टी कलक्टर ने क्षमा मांगने को कहा परन्तु ये नहीं माने और पीछे चाहे इन्हें निर्दोष निश्चित कर आरोप हटा लिया तो भी इनका जी इस अपमान की चाकरी से खट्टा हो गया और अब ये वकालत की परीक्षा के लिए तैयार होने लगे।

१८८३ में इन्होंने मुख्तारी की परीक्षा पास की और मुकदमे लेने आरम्भ कर दिए। इस परीक्षा में एक वर्ष में उपस्थितियों की कमी के कारण और दूसरे वर्ष तैयारी पूरी न होने के कारण ये रह गए। १८८६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में वकालत की पहली परीक्षा दी। इसमें दो अंकों की कमी के कारण अनुत्तीर्ण ही रहते परन्तु यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार लार्पेण्ट महाशय ने घूस लेकर कई विद्यार्थियों को पास कर दिया। उस समय पंजाब यूनिवर्सिटी की विचित्र परिस्थिति थी। विशेष कर परीक्षा सम्बन्धी अराजकता उस समय बहुत थी इस सम्बन्ध में लार्पेण्ट साहब बहुत प्रसिद्ध थे। लार्पेण्टी ग्रेजुएटों के सम्बन्ध में कई गाथाएं प्रसिद्ध हैं। परन्तु हमारा उनसे क्या मतलब। मुन्शीराम ने उन्हें अखबारों द्वारा सारी पोल खोल देने की धमकी दी लार्पेण्ट ने डर के मारे इन्हें पास कर दिया। दूसरी परीक्षा दिसम्बर १८८६ में थी। उसके परिणाम में गड़बड़ रही। सैनेट ने केवल एक विद्यार्थी पास किया। आखिर जनवरी १८८८ में दूसरी बार इस परीक्षा में बैठकर पास हो गए। परीक्षाओं के इन अनुभवों ने पिछले संस्कारों को और भी दृढ़ कर दिया। शिक्षा का सच्चा मानदण्ड परीक्षा नहीं है। इनकी वर्तमान पद्धति में न आकस्मिक आपत्तियों के ही प्रतिकार का कोई स्थान है न विद्यार्थियों को विविध योग्यताओं के स्वतन्त्र विकास के लिए ही कोई अवसर है। महात्मा मुन्शीराम की इस सम्मति का परिणाम गुरुकुल की वर्तमान परीक्षा प्रणाली है। महात्मा मुन्शीराम के व्यक्तित्व के निर्माण में यूनिवर्सिटी की शिक्षा तथा परीक्षाएं असफल रहीं। इनका महान् जीवन कुछ और शक्तियों की कृति था। ये स्वभावतः उन्हीं को अधिक महत्व देते थे।

मुख्तारी की परीक्षा पास कर इन्होंने वकालत का काम आरम्भ कर ही दिया था। वकालत की शिक्षा के लिए लाहौर जाना होता था। वहां ये आर्यसमाज तथा ब्राह्मसमाज दोनों के अधिवेशनों में सम्मिलित होते थे। पुनर्जन्म के विषय पर ये ऋषि का शास्त्रार्थ देख चुके थे। ब्राह्मसमाज इन सिद्धान्तों के विरुद्ध था। इस पर उन्होंने दोनों पक्षों के साहित्य का अनुशीलन कर निश्चय किया कि आर्यसमाज का मत ठीक है। सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन इसी निमित्त से किया। बस फिर क्या ? ये झट आर्यसमाज के सदस्य बन गए। ला० साईं दास अपने पक्ष की इस जीत पर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने भविष्यवाणी की कि आज एक नई शक्ति का प्रवेश आर्यसमाज में हुआ है। देखें, इसका परिणाम अच्छा होता है या बुरा ? ला० देवराज ने जालन्धर समाज का प्रधानपद इनके लिए रिक्त कर दिया और स्वयं मन्त्री बन गए।

मुन्शीराम जी का मांसाहार का त्याग भी सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन का फल था। आर्यसमाज की सभासदी ने मुन्शीराम के अध्ययन को एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

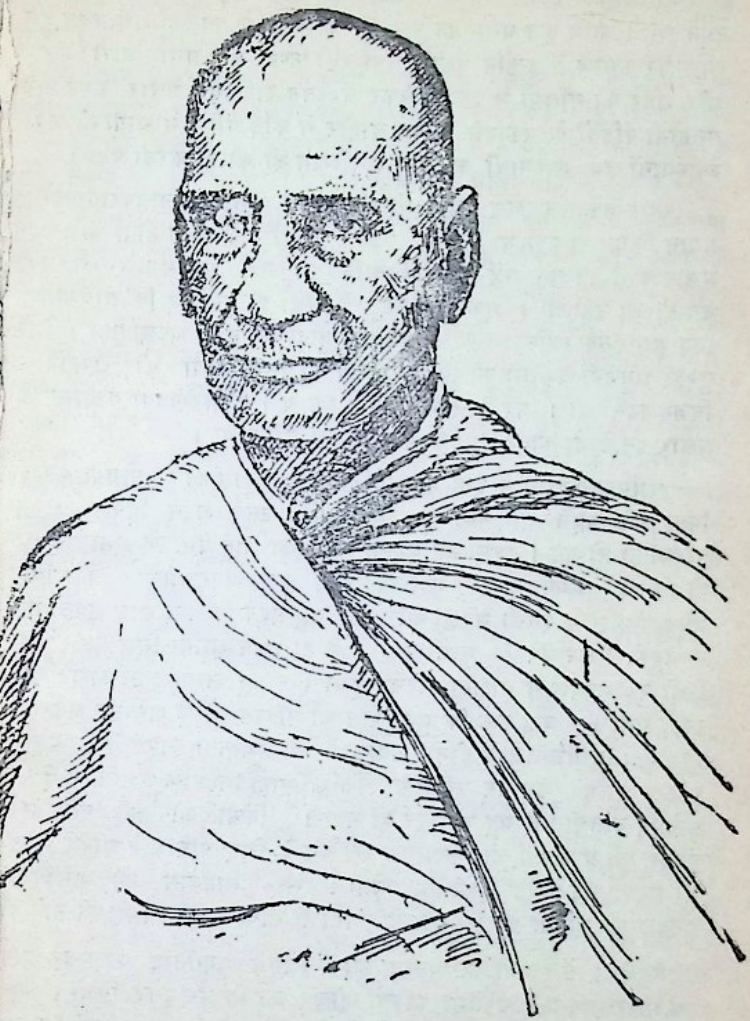

सन्यासी श्रद्धानन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निश्चित दिशा दे दी। अब ये अधिक समय आर्यसाहित्य के स्वाध्याय में लगे रहने लगे। ऋषि कृत ग्रन्थों का पाठ कर वेद-वेदांग के स्वाध्याय में प्रवृत हुए। जालन्धर समाज में इन्होंने धर्मपट तथा रद्दी-फण्ड की प्रथा जारी कर दी और शहर की गलियों में दुतारा लेकर संकीर्तन द्वारा धर्म प्रचार करने लगे। सनातनी पंडितों के मुकाबले में जब लाहौर से कोई पंडित न आया तो ज्वाला व्याख्यानों तथा शास्त्रार्थों का काम मुन्शीराम जी को ही करना पड़ा।

उधर वकालत चल रही थी और उसमें यथासंभव सत्यपरायणता व प्रयत्न किया जा रहा था। इसमे रुपये की दृष्टि से हानि होती थी। इध प्रचार कार्य की धुन इन्हें वादि-प्रतिवादि का नहीं आर्यसमाज का वकी बनाती जा रही थी। एक मुकदमा इन्हें मिला ही इसलिए कि आर्यसमाज दिए गए इनके व्याख्यान का प्रभाव एक वादी पर बहुत अच्छा पड़ा। उसने पुराने अनुभवी वकीलों को छोड़कर इन्हीं को पसन्द किया और इन्होंने उ विजय दिला दी। पर ये लाभ अपवाद रूप थे। साधारणतया वकालत औ प्रचार इन दोनों कार्यों का एक साथ चलना कठिन था।

धार्मिक कट्टरता ने इन्हें घोर पारिवारिक विरोध का ही सामना कराया पिता जी पहले तो रुष्ट हुए परन्तु पीछे उनके अपने विचार ही सहस परिवर्तित हो गए। ऋषि की पुरानी माया का जादू प्रेम के प्रभाव से ताज हो गया। रुग्ण अवस्था में उनकी सेवा कर अपना प्रभाव बैठा दिया पैतृक संपत्ति से इनकी उपेक्षा और फिर यह प्रश्न कि क्या आप अपनों संता से मक्कारी करायेंगे? मुन्शीराम के ये दो शस्त्र अमोघ सिद्ध हुए। इन दिनों पं० गुरुदत्त से साक्षात् परिचय हुआ। यह सम्बन्ध उत्तरोत्तर घनि होता गया। यहां तक कि मुन्शीराम जी पण्डित जी के अन्तरंग अनुरक्तों हो गए। आर्यसमाज में दोनों सदाचार की प्रधानता चाहते थे। पहले पंडित जी को इन पर संदेह था कि ये ब्राह्मसमाज के प्रभाव में हैं पर साक्षात् बातचीत से यह भ्रम दूर हो गया। किसी को क्या पता था गुरुदत्त की प्रवृत्तियों को क्रियात्मक रूप देने के लिए भार आगे आकर जालं की इस "नई शक्ति" पर ही पड़ेगा। ला० साईंदास की भविष्यवा गुरुदत्त की भावना की स्थिरता के सपनों से मानो सच्ची सिद्ध हो रही थी

१८८६ में स्वामी रामानन्द और स्वामी पूर्णानन्द जालन्धर आए स्वामी रामानन्द ने उपदेशक श्रेणी खोलने का विचार प्रकट किया। मु राम सहमत हो गए। नियमित श्रेणी तो नहीं खुली परन्तु ये स्वयं जिज्ञासु को शिक्षा देने लग गए। पूर्णानन्द की दर्शनों की शिक्षा का प्रबन्ध कपूर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के एक पंडित जी के पास हो गया। स्वामी जी (पश्चात् पंडित जी) को साथ लेकर ला० मुन्शीराम स्थान-स्थान पर आर्य समाज का प्रचार करने लगे। लाला जी की प्रधानता में एक उप-प्रतिनिधि सभा की भी स्थापना हो गई। इस सभा का काम दोआबा में प्रचार करना था।

जालन्धर के प्रत्येक कार्य में मुन्शी राम अग्रसर रहते थे। कन्या पाठशाला का प्रबन्ध, कन्या अनाथालय का प्रबन्ध, रहतियों की शुद्धि, नगर प्रचार जिज्ञासुओं को शिक्षादान, जालन्धर से बाहर जा-जा कर उपदेश करना ये सब कार्य ला० मुन्शीराम के भावी चौमुखे जीवन की मानों भूमिका रूप थे।

१ वैशाख, १८४६ (सन १८८७) को 'सद्धर्म प्रचारक' पत्र निकलना आरम्भ हुआ। ला० मुन्शीराम जी के हाथ में यह मानो कृष्ण का सुदर्शनचक्र आ गया था। इस के प्रभावों ने समाज को कई ऊंच-नीच दिखाए। पहले यह ८ पृष्ट का था फिर १६ का और फिर २० पृष्ठ का हो गया। पं० लेखराम की स्मृति में इसमें चार पृष्ठ और बढ़ाए गए। इस परिशिष्ट का नाम "आर्य मुसाफिर" रखा गया। १ मार्च १९०७ को प्रचारक को उर्दू से हिन्दी में कर दिया गया। उर्दू अक्षरों में भी प्रचारक की भाषा धीरे-धीरे हिन्दी होती गई। ला० मुन्शीराम के प्रभाव को बढ़ाने तथा फैलाने में 'प्रचारक' ने सबसे प्रबल साधन का काम किया। उसने संपूर्ण समाज में एक "प्रचारक-परिवार" स्थापित कर दिया जिसमें केन्द्रीय स्थान ला० मुन्शीराम का था। कन्या महाविद्यालय के लिए प्रचारक द्वारा प्रबल आंदोलन हुआ और जब प्रतिनिधि सभा की बागडोर लाला जी के हाथ में आ गई तब तो प्रचारक एक प्रकार से सभा ही का पत्र बन गया। सभा की नीति का निर्धारण तथा प्रचार इसी के द्वारा होता था।

३१ अगस्त १८७१ को लाला मुन्शीराम की धर्मपत्नी श्री शिवदेवी का देहान्त हो गया। देहान्त का सम्पूर्ण दृश्य उस पति-परायण आर्य महिला के पूर्व चरित्र के सर्वथा अनुरूप था। ला० मुन्शीराम उस दिन से अपनी संतान के माता-पिता हो ही गए। इसके पश्चात् का उनका संपूर्ण जीवन इस मातृत्व के विस्तार की साधना सा प्रतीत होता है। लाला जी की आयु इस समय ३५ वर्ष की थी। पुनर्विवाह के कई प्रस्ताव आए, पर सब व्यर्थ। इनके हृदय में जो प्रेम पहले अर्धांगिनी के लिए था, वह अब आर्यजगत् के लिए हो गया। महात्मा मुन्शीराम द्वारा किए गए ब्रह्मचर्य के प्रचार में सती शिवदेवी का बड़ा भाग है। सती की समर्पित मृत्यु ने मुन्शीराम को केवल ब्रह्मचारी ही नहीं, किन्तु ब्रह्मचर्य की मर्यादा का पुनरुद्धारक बना दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पत्नी ने अपनी आहुति पति के पवित्र चरणों में दे दी और पति ने भ
अपने आप को धर्म की आग में स्वाहा कर दिया। यह आहुति पति की थी
या पत्नी की? १८९२ से १८९५ तक ये निरन्तर प्रतिनिधि सभा के प्रधान
निर्वाचित होते रहे। इन्हीं की प्रधानता में वेद-प्रचार निधि की स्थापना
हुई। वकालत के काम से जब भी इन्हें छुट्टी होती, ये प्रचार के कार्य में ल
जाते। इस निमित्त से की गई यात्रा को ये धर्म-यात्रा कहते थे। ग्रीष्म
वकाश तथा मुहर्रम की छुट्टियां इन धर्म-यात्राओं के समर्पण होतीं।

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना

गुरुकुल के लिए पहले पहल आन्दोलन सन १८९७ में आरम्भ हुआ
उन दिनों महात्मा मुन्शीराम जालंधर से 'सद्धर्म प्रचारक' पत्र प्रकाशि
करते थे। सद्धर्म प्रचारक में इसके लिए प्रबल आंदोलन किया गया औ
'आर्य पत्रिका' आदि अन्य सामाजिक पत्रों ने इसका पोषण किया
नवंबर १८९८ के आर्य प्रतिनिधि के साधारण अधिवेशन में गुरुकुल खोल
का प्रस्ताव किया गया। यह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया।

गुरुकुल को खोलने का प्रस्ताव तो स्वीकृत हो गया, परन्तु धन के बि
गुरुकुल खुलना सम्भव कैसे था? धन एकत्रित करने का कार्य महात
मुन्शीराम जी ने अपने ऊपर लिया। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब
३० हजार रुपया एकत्रित नहीं कर लेंगे, अपने घर में पैर नहीं रखें
आजकल ३० हजार रुपये किसी सार्वजनिक कार्य के लिए एकत्रित क
कठिन कार्य नहीं है। पर अब से ५८ वर्ष पूर्व जब कि किसी सार्वजनि
कार्य के लिए दान देने का अभ्यास जनता को नहीं था, ३० हजार रु
इकट्ठा करना एक असाधारण बात थी। महात्मा मुन्शीराम जी गुरुकु
लिए धन एकत्रित करने निकले। आठ महिने लगातार घूमने के बाद
हजार रुपये इकट्ठे हुए। महात्मा मुन्शीराम जी की यह असाधा
सफलता थी, जो उनके अटल विश्वास और हार्दिक धर्म प्रेम की अद्
विजय थी। इस सफलता के अभिनन्दनस्वरूप लाहौर में आपका शानद
जलूस निकला। सर्वत्र फूलों के हारों तथा उत्साहपूर्ण जयकारों के म
उनका स्वागत हुआ।

महात्मा मुन्शी राम जी को गुरुकुल की स्थापना के लिए ३० ह
रुपये एकत्रित करने में लगभग ६ मास लगे। आपने यह धर्म यात्रा
अगस्त सन १८९८ के दिन आरम्भ की। उस दिन आप जालन्धर में
मकान में न ठहर कर उसके सामने सड़क के दूसरी पार बने हुए आर्य स

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

मन्दिर में ही ठहरे। इस दौरे के सिलसिले में आपने पंजाब के अतिरिक्त अन्य प्रांतों में भी व्याख्यान दिए और धन-संग्रह किया। आप जहां कहीं गए वहां आर्य जनता ने आपका हार्दिक स्वागत किया और यथाशक्ति धन दिया। लोगों के लिए गुरुकुल की बात बिल्कुल नई थी, देश के कई भागों में दुर्भिक्ष पड़ा हुआ था और उस समय जनता में शिक्षा के लिए अधिक दान देने की प्रवृत्ति भी उत्पन्न नहीं थी, तो भी मध्यम श्रेणी की आर्य जनता से नौ मास के समय में ३० हजार रु० की राशि एकत्र हो गई, इसे बहुत महत्व पूर्ण समझा गया। इसी भावना से प्रेरित हो कर आर्य जनता ने लाला मुन्शी राम जी को महात्मा पद से विभूषित किया। उस समय आप वकालत को तिलांजलि दे चुके थे और प्रेस और अखबार का काम भी कर्मचारियों पर डाल चुके थे।

जब गुरुकुल खोलने के लिए आवश्यक धन-राशि इकट्ठी हो गई तब यह प्रश्न उठा कि गुरुकुल कहां खोला जाय? इस विषय में पंजाब के आर्यजनों में भी कई मत थे। कुछ आर्य नेता जिनमें ला० रलाराम तथा राय ठाकुरदत्त धवन मुख्य थे, यह चाहते थे कि गुरुकुल कहीं लाहौर अथवा अमृतसर के पास ही खोला जाय। श्री हरगोबिन्दपुर के आर्य पुरुषों ने यह प्रस्ताव किया कि यदि वहां गुरुकुल खोला जाय तो वे लोग आवश्यक भूमि दे देंगे। नूरमहल के ला० जगन्नाथ जी ने तो अपने कारखाने में ही गुरुकुल खोलने की बात पेश कर दी थी। परन्तु महात्मा जी का गुरुकुल के सम्बन्ध में पहले से यह विचार था कि वह किसी नदी के तट पर एकान्त स्थान में स्थापित हो। वे अपनी भावना का आधार निम्नलिखित वेद-मंत्र को बतलाया करते थे :—

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्।
धिया विप्रोऽजायत॥ —यजुर्वेद

मनुष्य पहाड़ों की उपत्यकाओं और नदियों के संगमों पर गुरुओं से बुद्धि प्राप्त करके विद्वान् बनता है। महात्मा जी का संकल्प था कि गुरुकुल ऐसे ही किसी स्थान पर बनाया जाय। शुभ संकल्पों की पूर्ति में परमात्मा सहायक होते हैं। इसे ईश्वरीय प्रेरणा ही कहना चाहिये कि जिला बिजनौर के नजीबाबाद नगर के निवासी मुन्शी अमनसिंह जी के मन में यह प्रेरणा हुई कि वे गंगातट पर बसे हुए अपने काँगड़ी ग्राम को दान कर दें। बिजनौर जिले के जिन आर्य पुरुषों ने महात्मा जी की सहायता की उन में से नहटौर के चौ० चुन्नीसिंह जी, जि० सहारनपुर के बाबू मिट्ठनलाल खन्ना, राजपुर नवादे के चौ० फतेहसिंह जी और बिजनौर के चौ० शेरसिंह जी प्रमुख थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुन्शी जी ने महात्मा जी को पत्र लिखकर अपने संकल्प की सूचना दी। प्यासे को मानो पानी मिल गया। महात्मा जी अभी चन्दे का दौरा कर ही रहे थे कि उन्हें मुन्शी जी का पत्र मिला। वे दौरे को कुछ दिनों के लिए स्थगित करके हरिद्वार गये और गंगा के उस पार जा कर काँगड़ी की भूमि को देखा। वह स्थान उन्हें गुरुकुल के लिए आदर्श प्रतीत हुआ। काँगड़ी गाँ हिमालय की शिवालकधारा के नीचे बसा हुआ है उस की भूमि एक ओ पर्वत को छूती है तो दूसरी ओर गंगा की नीलधारा का स्पर्श करती है। आ प्रतिनिधि सभा द्वारा स्थान को स्वीकृति हो जाने पर गाँव से दूर गंगा के त पर १९०१ में गुरुकुल के छप्परों का निर्माण आरम्भ हो गया। यों गुरुकु की स्थापना गुजरानवाला में १६ मई, १९०० ई० को ही हो गई थी। वह २० बालक गुरुकुल में प्रविष्ट हो चुके थे। इन बीस में ही महात्मा जी के दोनों पुत्र भी थे।

१९०२ के फरवरी मास में गंगा तट के घने जंगल को साफ करके कुछ छप्पर तैयार हो गये थे। फलतः ४ मार्च १९०२ के दिन महात्मा जी गुजरान वाला जाकर गुरुकुल में विद्यमान ब्रह्मचारियों को काँगड़ी ले गये और उन थोड़े से फूस के छप्परों और २४ ब्रह्मचारियों के साथ गुरुकुल काँगड़ी विश्व विद्यालय का सूत्र पात हुआ।

बलिदान !

देश की साम्प्रदायिक परिस्थिति में अनेक कारणों से असाधारण खिचाव हो रहा था। जेल से छूट कर जुहू में विश्राम करते हुए महात्मा गांधी ने हिन्दु-मुस्लिम एकता के बारे में एक लेख लिखा था और उसमें सत्यार्थप्रकाश आर्यसमाज और स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध में जो अपरिपक्व विचार प्रकट किए थे, महात्मा जी ने उपद्रवों के कारणों का जो विश्लेषण किया था वह ठीक नहीं था। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उस लेख के पश्चात् देश के मुसलमानों की साम्प्रदायिक उग्रता घटने की जगह और बढ़ गई। अनेक स्थानों पर दंगे फसाद हुए, जिनमें हिन्दुओं को विशेष हानि हुई। ऐसा होते हुए भी महात्मा जी के लेख के कारण सर्वसामान्य काँग्रेसियों में आर्यसमाज और स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति जो दुर्भावना उत्पन्न हो गई थी, वह दूर न हुई। उससे लाभ उठाकर मुसलमान प्रचारकों और समाचार पत्रों ने आर्य समाज के लिए विषैले आन्दोलन को और भी तेज़ कर दिया। सबसे अधिक अनुचित बात यह थी कि बहुत से मुसलमान कांग्रेसी नेता उस विषैले आन्दोलन को प्रत्यक्ष रूप से उत्साहित करने लगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१९२४ की ईद के अवसर पर दिल्ली में एक भयंकर उपद्रव हो गया। दिल्ली के सदर बाजार में जो पहाड़ी धीरज के नाम से पुकारा जाता है उसमें मुख्य रूप से जाट और अन्य सैनिक जातियों के लोगों की बस्ती है। यह परम्परा चली आती थी कि वहाँ से होकर कुर्बानी की गाय न निकाली जाए। उस वर्ष कुछ मुसलमानों ने विशेष आवेदन पत्र देकर सरकारी अधिकारियों से यह अनुमति प्राप्त कर ली कि कुरबानी की गाय पहाड़ी धीरज के मुख्य रास्ते से होकर गुजारी जाय। इस समाचार से पहाड़ी धीरज के हिन्दू निवासियों में बड़ी हलचल मच गई। चर्चा के दूर-दूर तक फैलने में देर न लगी और ईद के सप्ताह भर पहले ही आसपास के इलाकों के जाट और अन्य लड़ाकू जातियों के हिन्दू बहुत बड़ी मात्रा में दिल्ली में एकत्र हो गये। ईद से पहले दिन तक उनका आगमन बराबर जारी रहा। सरकार यह सब कुछ देखती रही और चुप रही। ऐसा प्रतीत होता था कि वह उस बढ़ते हुए विप्लव का मजा लेना चाहती थी। बकरा-ईद से पहली रात में दोनों कैम्पों में लड़ाई की तैयारियां होती रहीं। सरकार को उनका पता था। दोपहर के समय लगभग दस हजार मुसलमानों की भाड़ के साथ कुरबानी के लिए गौओं का जलूस निकाला गया। उस समय पुलिस बड़ी मात्रा में जलूस के साथ जा रही थी। जब जलूस पहाड़ी धीरज के मध्य पहुँचा तो कुछ हिन्दू नौजवानों ने आगे बढ़कर गाय की रस्सी थाम ली। इस पर झगड़ा शुरु हो गया। हिन्दूओं के हाथों में लाठियां थीं और मुसलमानों के पास छुरे थे। सामने के संघर्ष में लाठियों की जीत हुई और दस हजार मुसलमान मुख्य बाजार में रेत की तरह बिखर गये।

मुख्य बाजार से बिखर कर वे लोग गली-कूचों मे घुस गये। वहां जाकर उन्होंने जो उत्पात किया, उसे यहां लिखने की आवश्यकता नहीं। संक्षेप में इतना ही बतलाना पर्याप्त है कि उन्होंने स्त्री, पुरुष, बूढ़े और बच्चे किसी का लिहाज नहीं किया। घरों के अन्दर घुसकर जिसे पाया उसे छुरे का निशाना बनाया। दो तीन घंटों तक उस इलाके में आततायियों का राज्य रहा। सरकार की पुलिस और मिलिटरी उस समय में कहां रही, कुछ पता नहीं, क्योंकि वह बाजार में दंगे को न रोक सकी और न गली-कूचों में छुरेबाजी को।

दंगे में पुलिस ने बहुत से मुसलमानों को गिरफ्तार किया और उन पर मुकदमे चलाये। १९२४ के सितम्बर मास में महात्मा गांधी दिल्ली में आए और हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए उपवास की घोषणा की और उपवास आरम्भ कर दिया। दिल्ली के हिन्दुओं को आपने यह प्रेरणा की कि वे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मारकाट के अपराध में गिरफ्तार मुसलमानों के विरुद्ध चलाए गए अभियोग को वापिस कराने का यत्न करें। महात्मा जी के उपवास के समाचार से देश में तहलका मच गया। समस्या को सुलझाने के लिए दिल्ली में एक विशाल एकता-सम्मेलन किया गया। इस सम्मेलन में स्वामी श्रद्धानन्द जी और लाला लाजपत राय जी आर्यसमाज के प्रतिनिधि माने गए। स्वामी जी ने आर्य समाज पर किए गए आक्षेपों का उत्तर देते हुए स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि अपने सिद्धान्तों के प्रचार का और मत परिवर्तन का प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है, तो भी मुसलमान प्रचारक यदि यह घोषणा कर दें कि तबलीग बन्द कर देंगे तो आर्यसमाज भी समय और परिस्थिति को देखते हुए उतनी देर तक शुद्धि के आन्दोलन को स्थगित करने पर विचार कर सकता है। इस पर कोई भी मुसलमान प्रतिनिधि या नेता यह कहने के लिये तैयार न हुआ कि इस समय या भविष्य में तबलीग बन्द कर दी जायेगी। परिणाम यह हुआ कि केवल लीपा-पोती और शुभ-कामनाओं के साथ एक राष्ट्रीय पंचायत बनाकर सम्मेलन समाप्त हो गया। सम्मेलन ने धार्मिक सिद्धान्तों को मानने धार्मिक विचारों को प्रकट करने और धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करने, धर्म-स्थानों की पवित्रता का ध्यान रखने और गोवध और मस्जिद के आगे बाजा बजाने के सम्बन्ध में सबका एक समान अधिकार माना, पर साथ ही उनकी मर्यादाओं का भी निदर्शन किया। अखबारों को चेतावनी दी कि वे साम्प्रदायिक मामलों में समझबूझ कर लिखा करें और जनता से अनुरोध किया गया कि गान्धी जी के उपवास के अन्तिम सप्ताह में देश भर में प्रार्थना की जाय। ८ अक्टूबर का दिन जन-सभाओं द्वारा ईश्वर का धन्यवाद देने के लिए नियत किया गया। सम्मेलन की समाप्ति पर महात्मा जी ने अपना २१ दिन का उपवास विधिपूर्वक समाप्त कर दिया।

उस एकता-सम्मेलन से और कोई परिणाम निकला हो या नहीं, दिल्ली के साम्प्रदायिक विचार रखने वाले मुसलमानों में यह विचार फैल गया कि महात्मा जी और कांग्रेस के अन्य नेता आर्यसमाज को और शुद्धि को एकता के भंग करने के लिए जिम्मेदार समझते हैं। 'यंग इण्डिया' के लेख ने सत्यार्थ प्रकाश, आर्य समाज और स्वामी श्रद्धानन्द जी पर जो आरोप लगाए थे, दिल्ली के और बाहर के मुसलमानों ने यह समझा कि एकता-सम्मेलन ने इस पर मोहर लगा दी है।

१९२६ के जून के महीने में एक नया मामला हो गया, जिसने जलती आग में घी का काम दिया। उस मामले का विवरण हम पण्डित सत्यदेव विद्यालंकार की लिखी हुई स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी से उद्धृत करते हैं :—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शुद्धि-संगठन को लेकर आम जनता को स्वामी जी के विरुद्ध भड़काने वालों को कराची की असगरी बेगम नाम की मुसलमान महिला की शुद्धि और मुकदमे से अच्छा अवसर हाथ आया। साम्प्रदायिक समाचार पत्रों में मुकदमे की अतिरंजित रिपोर्ट छपने लगी। आर्य समाजियों पर औरतों और बच्चों को भगाने का दोष लगाने वालों को इससे एक ऐसा प्रमाण हाथ आ गया कि मुकदमे का फैसला होने तक उन्होंने भी अपने दिल का गुबार निकालने में कोई कसर बाकी न रखी। असगरी बेगम कराची से अपने दो बच्चों और भतीजे के साथ देहली आर्य समाज में आई थीं। वहां इन्होंने हिन्दू धर्म स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की। उस की इच्छा के अनुसार उसका संस्कार किया गया और शान्ति देवी नाम स्वीकार कर उसने स्थानीय वनिता आश्रम में रहते हुए हिन्दी, संस्कृत आदि पढ़ना शुरू किया। कोई तीन मास बाद उसके पिता मौलवी ताज मुहम्मद खां उनको खोजते हुए दिल्ली आए। कुछ दिन बाद उस के पति हलीम भी आ गए। इन दोनों ने शान्ति देवी से मिल कर फिर से इस्लाम धर्म स्वीकार कर वापिस चलने के लिए आग्रह किया। पर उसने ऐसा करना स्वीकार न किया। इस प्रकार रुष्ट हो स्थानीय इस्लामी अन्जुमनों से भड़काए जाकर उसके पति ने शान्ति देवी, स्वामी जी, डा० सुखदेव, प्रो० इन्द्र, श्री देशबन्धु गुप्त, ला० गनपत राय और कराची आर्यसमाज के मन्त्री पर मुकदमा दायर कर दिया। शान्ति देवी पर बच्चों को भगाने और शेष पर उस की सहायता करने का आरोप लगाया था। मुकदमा खूब चला। जालंधर तथा लाहौर से बैरिस्टर बुलाए गए। स्थानीय अंजुमनों ने उसको अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया। जून से दिसम्बर तक मुकदमा चलता रहा। अन्त में ४ दिसम्बर १९२६ को सब अभियुक्त बरी कर दिये गये। जाहिल मुसलमानों को स्वामी जी के प्रति इतना अधिक भड़का दिया गया था कि उनके इस प्रकार बेदाग छूट जाने पर सुलगी हुई आग और जोरों से भड़क उठी। स्वामी जी को खून करने की धमकियों के और भी गुमनाम पत्र आने लगे। हापुड, मेरठ, देहली आदि में इस सम्बन्ध में कुछ पैम्फलेट भी निकाले गये। ख्वाजा हसन निजामी ने अपने पत्र 'दरवेश' में भी इसी प्रकार के कुछ इशारे किये थे और कुछ नज्में भी शाया की थीं। स्वामी जी उन सबको अपने स्वभावानुसार उपेक्षा की दृष्टि से देखते रहे।"

अभियोग के दिनों में स्वामी जी के पास कई गुमनाम पत्र ऐसे आये, जिन में मारने की धमकी दी गई थी। न तो स्वामी जी ने वे पत्र कभी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुलिस के पास भेजकर अपनी रक्षा की प्रार्थना की और न ही अपने आदमियों को पहरे आदि का विशेष प्रबन्ध करने दिया। जब कभी स्वामी जी के निवास स्थान पर स्वयं सेवकों का पहरा लगाया जाता था तब स्वामी जी अपनी आज्ञा से उन्हें हटा देते थे। धमकी से डरना स्वामी जी के स्वभाव में नहीं था। डराने का प्रयत्न उन्हें अपने निश्चय में और भी दृढ़ कर देता था।

उस वर्ष देश में कौंसिलों के चुनाव की धूम-धाम थी। पं० मदनमोहन-मालवीय और लाला लाजपतराय जी ने कांग्रेस से अलग एक नेशनलिस्ट पार्टी का संगठन किया था। कई हल्कों से नेशनलिस्ट पार्टी के उम्मीदवार खड़े किये थे। बनारस के हल्के से कांग्रेस ने बाबू श्री प्रकाश जी को अपना उम्मीदवार निर्वाचित किया था। नेशनलिस्ट पार्टी ने उनके विरोध में सेठ घनश्यामदास बिड़ला को खड़ा किया था। संघर्ष बहुत कड़ा था। बिड़ला जी ने बार-बार स्वामी जी से अपने चुनाव में सहायता करने की प्रार्थना की स्वामी जी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था और उन्हें कौंसिल के चुनाव जैसे काम में अभिरुचि भी नहीं थी। तो भी जब बिड़ला जी ने बहुत अधिक आग्रह किया और मालवीय जी और लाला जी ने भी जोर दिया तो स्वामी जी चुनाव में सहायता देने के लिए गोरखपुर चले, सर्दी का मौसम था। चुनाव की थकान लेकर स्वामी जी जब दिल्ली वापस आये तो रोगी होने की पूरी तैयारियां हो चुकी थीं। दिसम्बर के दूसरे सप्ताह में स्वामी जी के शिथिल शरीर पर ब्रान्कोनिमोनिया का आक्रमण हुआ, जिसने उन्हें चारपाई पर डाल दिया। डाक्टर अंसारी स्वामी जी के निकट मित्रों में से थे। उनके इलाज पर स्वामी जी की बहुत आस्था थी। उनके प्रयत्न से धीरे-धीरे स्वामी जी की अवस्था सुधर रही थी कि एक ऐसी घटना हो गई जिसने देश भर में तहलका मचा दिया। इस घटना ने इस सच्चाई को प्रमाणित कर दिया कि 'प्रत्येक' मनुष्य को वह मृत्यु मिलती है, जिसके वह योग्य होता है।

उस महत्वपूर्ण घटना का वर्णन हम पं० सत्यदेव विद्यालंकार द्वारा लिखित स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन-चरित्र से उद्धृत करते हैं।

प्रो० इन्द्र जी प्रतिदिन की भांति तारीख २३ दिसम्बर सन् १९२६ की दोपहर को स्वामी जी से मिलने के लिए गए। कमरे सब खुले पड़े थे और भीतर सब गाढ़ी नींद में सोये हुए थे। कई दिन-रात की सेवा से थके हुए स्वामी जी के मन्त्री श्री धर्मपाल विद्यालंकार पास के कमरे में और सेवक धर्मपाल स्वामी जी की चारपाई के पास दरी पर सोये हुए थे। सोते से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जगाना उचित न समझ शाम को दर्शन करने की इच्छा से आप लौट आये। ईसाई से आर्य समाज बने हुए एक लड़के को ऊपर भेज दिया, जिससे स्थान आरक्षित न रहे। लगभग ढाई बजे कुछ सज्जन आ बैठे, जिनमें डाक्टर सुखदेव जी, कन्या गुरुकुल की आचार्या विद्यावती जी, भक्त जमनादास जी इत्यादि भी थे। पौने चार बजे स्वामी जी नित्य कर्मों से निवृत्त होकर ऐसे बैठ गये, मानों अमृत पीने के लिए तैयार होकर बैठे थे।

कमोड उठाकर बाहर रखा था कि सीढ़ियों में एक व्यक्ति दिखाई दिया। डाक्टर का आदेश था कि अधिक लोग स्वामी जी के पास न आवें। आपको पूरा आराम करने दिया जाय। सेवक के रोकने पर भी उसने दर्शन करने का आग्रह किया। स्वामी जी ने आवाज सुनी और कहा—"कौन है, अन्दर आने दो।" अन्तिम दिन का संदेश लेकर जिसके आने की इतनी दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे, उसको सीढियों के ऊपर, घर के द्वार तक, आजाने के बाद खाली हाथ लौटाया जा सकता था? अन्दर आकर उसने स्वामी जी से कहा,—'स्वामी जी मैं आपसे इस्लाम के मुतल्लिक कुछ गुफ्तगू करना चाहता हूँ।" स्वामी जी ने उत्तर दिया,—"भाई मैं बीमार हूं, तुम्हारी दुआ से राजी हो जाऊँगा तो बातचीत करूँगा।" पानी मांगने पर स्वामी जी के आदेश से सेवक ने उसको पानी पिला दिया।

पानी पीकर भीतर आते ही उस हत्यारे ने मसनद के सहारे बैठे हुए स्वामी जी पर पिस्तौल दाग दी। आंख की एक झपक में दो फायर हो गये। लपक कर सेवक ने हत्यारे को पीछे से पकड़ा, इतने में उसने तीसरा फायर भी कर दिया। धर्मसिंह ने अपनी जान की ममता छोड़, सामने होकर उसका सामना किया, तो उस पर भी गोली दाग दी गई। रान पर गोली खाकर बेचारा धर्मसिंह जमीन पर लोट गया। हत्यारा भागने की चेष्टा में ही था कि धर्मपाल विद्यालंकार ने आकर उसको दबा लिया। एक हाथ रिवाल्वर वाले हाथ पर और दूसरा उस पर रखे हुए उसको आध घंटा दबाये रखा।

लुढ़कते-लुढ़कते धर्मसिंह ने मकान के छज्जे पर पहुँच कर शोर किया तो लोग दौड़े हुए चले आए। बिजली की तरह शहर में बात फैल गई। चारों ओर मातम छा गया। जिसने सुना वही सन्न रह गया। अच्छा होने का समाचार सुनते-सुनते सहसा वैसे अवसान का समाचार सुनने के लिये कोई तैयार न था। फिर देहली की हिन्दू आबादी के ठीक बीच नया बाजार में दिन के समय वैसी दुर्घटना का घटना, विश्वास से कुछ परे की चीज थी। लोग दौड़े चले आये। अन्तिम दर्शनों की लालसा न लोगों को विह्वल कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिया। देहली की सड़कों, बाजारों, गलियों, मुहल्लों, दुकानों और घरों में— सब जगह सबके मुँह पर एक चर्चा थी। वह दुर्घटना क्या थी, देहली पर कल्पनातीत भयंकर वज्रपात था। यह (२६ दिसम्बर सन् १९२६ गुरुवार) वह दिन था, जिस दिन सूर्य भगवान ने दक्षिण दिशा की ओर से उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान किया था और कोई पांच हजार वर्ष पहले महाभारत के भीष्म पितामह ने शर-शय्या पर पर पड़े हुए स्वेच्छा से प्राणों का विसर्जन किया था और अब देहली के भीष्म पितामह, जनता के हृदय सम्राट, स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने भारत की प्राचीन आर्य संस्कृति के कुरुक्षेत्र से छाती पर गोली खाकर अपने प्राणों का विसर्जन किया था।

डा० चिमनलाल, डा० अन्सारी और डा० अब्दुर्रहमान आदि ने परीक्षा की और शरीर बिल्कुल ठंडा होने की सूचना देदी। रोगी देह तो पहले ही ठंडा हो चुका था, गरम दवाईयों की गरमी से उसको जबरन गरम रखकर यमराज के साथ लड़ाई लड़ते हुए, प्रकृति की अवश्यम्भावी घटना को टालने की व्यर्थ कोशिश की जा रही थी। वह कैसे टल सकती थी? पर उस कर्मशील जीवन को इस बुढ़ापे में भी अन्तिम दिन अन्तिम सांस की बीमारी के बिस्तर पर ही सिसकते हुए नहीं लेनी थी। अपितु जीवन की अवश्यम-भावी उस अन्तिम घटना से भी अधिक स्फूर्तिदातक बना जाना था और इस संसार से जाते-जाते भी कुछ करते हुए ही जाना था। मुँहमांगी मुराद की तरह आपको वीरगति प्राप्त हुई। उकसाये हुए मतान्ध बेचारे अब्दुल रशीद को क्या मालूम था कि जो कुछ वह करने आया था, उससे ठीक विपरीत ही होगा। वह नहीं जानता था कि वह अधम कृत्य द्वारा इस्लाम की चादर पर कभी न धुलने वाला काला दाग लगा जायगा और जिसको वह इस संसार से मिटाने आया था, उसको सदा के लिए अमर बना जायगा और निश्चय ही स्वामी जी को वह अमर पद प्राप्त हुआ, जिसकी खोज में दुनियां पत्थर, पहाड़, कन्दरा, मन्दिर, मस्जिद, गिरजा और मथुरा, काशी, काबा आदि में भटकती फिरती है।

गोली चलने के आध घंटा बाद पुलिस घटनास्थल पर पहुंची। उसके थोड़ी देर बाद सीनियर सुपरिन्टेंडेंट पुलिस मार्गन और शेख नजरुल हक आये। हत्यारे को सिपाहियों के सुपुद कर जांच शुरू की गई। कुछ दिन मुकदमा चलने के बाद हत्यारे को फांसी की सजा हुई। प्रीवी कौंसिल तक मुकदमा लड़ा गया, पर वहां से भी फाँसी की सजा बहाल रही। इस्लाम को नापाक करने वाले मुसलमानों ने तो हत्यारे को गाजी पद से सुशोभित किया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और प्रीवी कौंसिल में की गई अपील के रद्द हो जाने पर भी स्वामी जी के औरस पुत्र के नाते प्रो० इन्द्र जी ने उसको फांसी न देकर इस्लाम के हाथों में उसकी किस्मत का फैसला छोड देने की सम्मति प्रगट की।

स्वामी जी के शव का देहली में, 'न भूतो, न भावि' सम्मान हुआ। सुदूर प्रदेशों से आकर लोग शामिल हुए। जिसके लिये देहली पहुंचना संभव था, वह सिर पर पैर रख कर आँखों के बल दौड़ा चला आया। हरिद्वार के गुरुकुल कांगड़ी के प्रायः सभी ब्रह्मचारी और कर्मचारी कुल-पिता के दर्शन करने देहली आ पहुँचे थे। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ भी उठकर देहली चला आया था। बलिदान के तीसरे दिन शनिवार को अर्थी का जो विराट जलूस निकला, वह सम्राटों को भी रिझाने वाला था। जनसमूह का उस दिन देहली में समाना कठिन था। दो ढाई मील तक नरमुण्ड ही नरमुण्ड दिखाई पड़ते थे। अर्थी इतर-फुलेल और फूलों की वर्षा से इतनी भारी हो रही थी कि उसको सम्भालना कठिन हो रहा था। शहर के मुख्य-मुख्य भागों में घूमता हुआ जलूस सवेरे का चला दोपहर बाद जमुना के किनारे पहुंचा। अपने हृदय सम्राट के नश्वर शरीरको अग्निदेव की भेंट कर देहली के निवासी अपने घरों को ऐसे खाली हाथ लौटे जैसे उनका सर्वस्व ही लुट गया था, मानो अबोध बालक मां-बाप की असामयिक मृत्यु से बिल्कुल अनाथ हो गया था और जैसे लखपति बनने की आशा में बैठे हुए साहूकार का दिवाला ही पिट गया था।

नेताजी उवाच !

मैं आपको वचन देता हूँ कि मंत्रिमंडल का चुनाव करते समय आप में से प्रत्येक को मंत्रीमंडल का सदस्य बनाया जाएगा।

(दिनमान से साभार)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य युवक रचनात्मक कार्य करें

श्री भारतेन्द्र नाथ का अध्यक्षीय भाषण

—निज संवाददाता द्वारा—

नई दिल्ली २९ नवम्बर, आर्य युवक अपनी पूरी शक्ति से रचनात्मक कार्यों में लगें और महर्षि दयानन्द के चरण चिन्हों पर चलते हुए, साधनों की चिन्ता किए बिना, अज्ञान के विरुद्ध युद्ध घोषणा करें। इन शब्दों के साथ सार्वदेशिक आर्य वीर दल के मंत्री श्री पं० भारतेन्द्र नाथ ने आर्य समाज पुलवंगश के वार्षिकोत्सव पर आयोजित युवक सम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए युवकों का कर्म क्षेत्र में आवाहन किया।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि आज मृत्यु हमारे सिर पर खड़ी है। संसार की सारी आसुरी शक्तियां हमें मिटाने के लिए योजना बद्ध ढंग से बढ़ रही हैं। ऐसे में निराश और हताश होने से नहीं, आगे बढ़कर शत्रु को ललकारने से विजय मिलेगी।

आप ने कहा कि अब समय आ गया है जब हमें अपनी परीक्षा देनी होगी। सच्चे अर्थों में आर्य समाज के संदेश को हृदयगम कर शैतान के बेटे को प्रभु का पुत्र बनाने के लिए जीवन लगाना होगा।

महिलाओं को संबोधित करते हुए आप ने कहा कि—

युवकों के निर्माण का भारी दायित्व माताओं पर है वे अपने बच्चों में त्याग और वीरता के भाव भरें। घरों में मम्मी-डैडी अंकल आंटी कहने को रोकें और विदेशी संस्कारों को न आने दें। इस से भावी सँतान सही दिशा में आगे बढ़ सकेगी।

आर्य समाज के अधिकारियों और सदस्यों से पंडित जी ने मार्मिक अपील करते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द की धरोहर आप के हाथ में है, आप शब्दों से नहीं व्यवहार से ऋषि दयानन्द की जय बोलें और अपने क्षेत्र के प्रत्येक व्यक्ति तक ऋषि का संदेश पहुंचाएं।

सम्मेलन के आरंभ में विभिन्न व्यक्तियों ने पुष्प मालाओं से पंडित भारतेन्द्र नाथ जी का भाव भरा स्वागत किया। समाज के अधिकारियों ने उत्साह से उत्सव को सफल बनाया। इस आर्यसमाज में जब से पं मेधा शास्त्री पधारे हैं तब से आर्य समाज रचनात्मक कार्यों में विशेष रुचि ले रहा है। सम्मेलन में प्रो० राजेन्द्र शुक्ल, श्री रमेश चन्द जी व श्री मेधा शास्त्री के भी प्रभावशाली भाषण हुए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—अवतार कृष्ण

जाड़े की मेवा : मूंगफली

आजकल सर्दी पड़ रही है। बढ़ी हुई मंहगाई के इन दिनों में हर कोई पिस्ते, चिलगोजे और बादाम आदि मेवाएं नहीं खा सकता। गरीबों की अगर कोई मेवा कही जा सकती है, तो वह मूंगफली ही है।

कितना स्वार्थ-त्याग है, इस छोटी-सी मूंगफली में, जो भड़भूजे के भाड़ में तप कर भी निःस्वार्थ भावना से जाड़ों में गर्मी दे कर सर्दी दूर करने का प्रयत्न करती है। मूंगफली को गुणों के अनुसार मेवा कहा जाता है। जिस प्रकार बादाम, किशमिश आदि स्वभाव से गर्म होते हैं, उसी प्रकार मूंगफली भी गर्म होती है।

भारत में यह काफी बड़े पैमाने पर पैदा की जाती है। मूंगफली की पैदावार उष्ण कटिबन्ध प्रदेशों में अच्छी होती है। नमी वाले क्षेत्र इसकी पैदावार में सहायक नहीं होते। प्रायः कृषक इसका बीज जून मास में खेत में डाल देते हैं और पांच-छः महीने में इसकी फसल पककर तैयार हो जाती है। किन्तु खेतों में इसका बीज डालने का समय विभिन्न प्रान्तों में थोड़ा-बहुत आगे-पीछे रहता है। उत्तर भारत तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्र में जून के मास में बोने पर मूंगफली की खेती को बरसात का पानी मिल जाता है। लेकिन जहां पर वर्षा कम होती है, वहां पर क्यारियां तथा नालियां बना कर कुंओं तथा ट्यूबवैलों से आवश्यकतानुसार सिंचाई कर लेते हैं।

जिस समय मूंगफली के पौधे हल्के पीले रंग के पड़ जाते हैं और मुरझा कर झड़ने लगते हैं तब समझ लेना चाहिए कि मूंगफलियां पक गई हैं। इनका नरम छिलका कड़ा हो जाता है और केवल दबाने से ही टूट सकता है।

मूंगफली की कुल पैदावार का बहुत बड़ा हिस्सा तेल निकालने में उपयोग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया जाता है। भारत के प्रत्येक कोने में मूंगफली के तेल की खपत होती है। गरीबों को घी का सहारा न मिलने के कारण, इसका ही आसरा लेना पड़ता है। दक्षिण भारत में अधिकांश खाद्य-पदार्थों के बनाने में मूंगफली के तेल का उपयोग किया जाता है। मूंगफली का तेल वनस्पति तेल बनाने में भी काम आता है। आपने वनस्पति घी के डिब्बों पर लिखा हुआ देखा भी होगा—मूंगफली का साफ किया गया और जमाया हुआ तेल। मूंगफली के तेल में बी० विटामिन है, प्रोटीन तथा निकोटिन एसिड होते हैं, जो कि मनुष्य के शरीर के लिए अनिवार्य तत्त्व है। मूंगफली खाने या उसका तेल काम में लाने में प्रमुख विटामिन तथा पौष्टिक तत्त्व कम कीमत पर ही हमें प्राप्त हो जाते हैं।

मूंगफली में 'अंडपति' नामक एक विशेष बलवर्द्धक तत्व है, जो कि मधुमेह आदि रोगों के लिए लाभकारी है। अधिक मात्रा में कोई भी वस्तु ली जाए वही हानिकारक सिद्ध होती है। उसी प्रकार मूंगफली को भी ज्यादा लेने पर 'पित्त' की मात्रा बढ़ने की आशंका रहती है।

मूंगफली से विदेशी मुद्रा कमाने में भी सहायता मिलती है। भारत सरकार इस का प्रति वर्ष अट्ठाइस हजार टन तेल बाहरी देशों को निर्यात करती है।

मूंगफली के तेल से अनेक प्रकार की औषधियों का निर्माण किया जाता है तथा खली भी बनाई जाती है। बहुतेरे स्थानों पर तो आटे के साथ इसे पिसवा कर मिश्रित कर दिया जाता है, जिससे अनेक प्रकार की स्वादिष्ट मिठाइयां, आइसक्रीम आदि प्रचुर मात्रा में तैयार करते हैं। भारत के अलावा अमेरिका जैसे सम्पन्न देशों में भी ऐसे आटे से बड़ी मात्रा में इसकी पेस्ट्री, केक, फ्रूट-ब्रेड आदि वस्तुएं तैयार की जाती हैं। इसीलिए अमेरिका में काफी बड़े पैमाने पर मूंगफली की खेती की जाती है।

मूंगफली में अनेक गुण हैं और इसकी उपयोगिता से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता। फिर भी जाड़े के मौसम में इनका भाव एक-दो रुपया प्रति किलो-ग्राम तक गिर जाता है। सस्ती और इतनी लाभदायक वस्तु आसानी से दूसरी नहीं खोजी जा सकती। मूंगफली की अपनी मधुरता और उपयोगिता के कारण ही यह इतनी लोकप्रिय बनी हुई है। मूंगफली सर्वसुलभ होने के कारण मानो 'समाजवाद' की प्रतीक ही बनी हुई हो। ऊंचे परिवारों से लेकर छोटे परिवार तक के लोग सब इसे प्राप्त कर सकते हैं और भुनी हुई मूंगफलियां चाव से खाते हैं। जाड़े की ऋतु की मेवा, अगर कोई हो सकती है, तो वह मूंगफली ही है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक अमूल्य औषधि —ओमप्रकाश

अदरक और सोंठ

सुखाई हुई अदरक को सोंठ कहा जाता है।

प्रायः लोगों को यह कहते हुए सुना जाता है। यह कोई सोंठ तो नहीं जो आप इस प्रकार छिपा कर रख रहे हैं। यह सत्य है कि सोंठ बहुत महंगी नहीं मिलती लेकिन यह इतनी उपयोगी होती है कि हर घर में इसका रखना बहुत आवश्यक और उपयोगी है।

यदि भोजन करने से पहले अदरक को या सोंठ को खा लिया जाय तो भूख बढ़ जाती है। शाक-सब्जियां व दालों में अदरक डालना बहुत लाभदायक होता है। ग्रीष्म या वर्षा के दिनों में अदरक का सत्त पेट में पाचन संबंधी गड़-बड़ी के लिए बहुत लाभदायक होता है। अन्य उदर रोगों में आधा तोला अदरक का रस तथा इतना ही पानी मिलाकर पीना चाहिए। जिन सज्जनों को दूध हजम न होता हो या दूध पीने से दस्त आ जाते हों तो उन्हें दूध में सोंठ पकाकर या सोंठ का चूर्ण डालकर पीना चाहिए। कब्ज को दूर करने के लिए पिसी हुई सोंठ को पानी के साथ फांकना चाहिए।

कभी-कभी खाली पेट पानी पी लेने से पेट में दर्द हो जाता है। यदि सोंठ के चूर्ण को गुड़ के साथ खा लिया जाए तो जल्द ही आराम हो जाता है।

संग्रहणी की शिकायत होने पर पिसी हुई सोंठ को गुड़ के साथ खाना चाहिए।

आंव हो जाने पर गुड़ और सोंठ की बनाई गोलियों का उपयोग ठीक रहता है।

पेट में ऐंठन या वायु गोला या योनि में शूल से चुभते हों तो चार तोले सोंठ, १६ तोले सफेद तिल और आठ तोले गुड़ का चूर्ण बना कर खाना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गर्भस्राव को रोकने के लिए दूध में सोंठ को पकाकर तथा उसको ठंडा कर के पीना चाहिए। गर्भपात व दर्द को रोकने के लिए सोंठ, मुलहटी और देवदार को समान मात्रा में मिला कर दूध के साथ पिलाना चाहिए। बच्चा होने के बाद भी सोंठ का उपयोग बहुत लाभदायक समझा जाता है।

बुखार में आनेवाली हिचकियों को रोकने के लिए सोंठ के चूर्ण को खांड के साथ मिलाकर पीया जाता है।

यदि ज्वर में बेहोशी आ जाए तो अदरक के रस की एक-दो बूंद नाक में टपकाना चाहिए।

जिन सज्जनों को पानी लगने की आदत हो उनको सोंठ, जीरा और हरड़ की चटनी बना कर भोजन से पहले खा लेनी चाहिए।

गला बैठ जाने पर या गले में टान्सिल हो जाने पर अदरक की गांठ चबा लेने से कफ निकल आता है और आराम हो जाता है।

यदि किसी को अपना स्वर सुरीला और मधुर बनाना हो तो उन्हें सोंठ को पीस कर उसमें उतनी ही खांड मिलाकर शहद के साथ खाना चाहिए। सोंठ और दालचीनी के काढ़े को मिश्री में मिलाकर स्वरभंग के लिए पिया जाता है।

खांसी, जुकाम, अरुचि तथा वात विकार की हालत में अदरक के रस को शहद के साथ चाटना चाहिए। खांसी तथा दमे में सोंठ और हरड़ का चूर्ण भी लाभदायक रहता है।

फ्लू में अदरक की चाय पीकर, अच्छी तरह सो जाना चाहिए और फिर बाद में अदरक को उबाल कर १०-१५ मिनट के लिए उसकी भाप लेना भी अच्छा रहता है।

पीलिया रोग में दशमूल के काढ़े और गरम घी के साथ सोंठ को पकाकर खाना लाभदायक रहता है।

मोटापा दूर करने के लिए खाने-पीने के पदार्थों में सोंठ का उपयोग करना चाहिए।

बवासीर की हालत में यदि टट्टी सख्त आती हो तो राब में सोंठ मिला-कर घी के सत्तू के साथ सेवन करना चाहिए।

दाढ़ में दर्द होने पर सोंठ के कषाय से कुल्ले करने चाहिए या सोंठ के चूर्ण को खोखली दाढ़ में भर लेना चाहिए।

आंखों पर सूजन आ गई हो, या खुजली होती हो तो सोंठ और नीम के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गों को पीसकर उसमें स्वाद के अनुसार सेंधा नमक मिलाकर उनकी टिकिया
ाकर और थोड़ा गर्म करके आंख पर बांध देना चाहिए। आंखों के अन्य
गों में भी सोंठ और गेरू को पानी में पीसकर आंखों के बाहर लेप के रूप में
ाया जाना लाभदायक रहता है।

सीसे को तपाकर अदरक के रस में सात बार बुझा कर बनाई हुई सलाई
आंखों को बहुत लाभ होता है। चीन और मलय में अदरक के छिलके को
तियाविन्द की औषधि समझा जाता है।

कान की पीड़ा शान्त करने के लिए अदरक के रस का शुद्ध सरसों के तेल
गर्म करके कान में टपका लेना चाहिए।

गिल्टी या फोड़ा हो जाने पर अदरक को रगड़ कर लगाना चाहिए।

दा समाप्ति की सूचना मिलते ही अपना चन्दा भेज दिया करें। वी० पी०
१) ३० पैसे अधिक व्यय होता है—

—व्यवस्थापक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रश्नों का उत्तर

एक समय अरुण मुनि का पुत्र श्वेतकेतु पांचाल देश के राजा प्रवाहण पास गया। राजा ने उसे देख कर प्रश्न किया, "हे कुमार! क्या तू जा है कि जीव मर कर कहाँ जाते हैं और फिर लौट कर इस लोक को आते हैं?

श्वेतकेतु ने कहा, "मैं नहीं जानता।"

और भी कई प्रश्न किये पर कुमार ने सबका उत्तर यही दिया। श्वे अपने को अज्ञानी पाकर पिता के पास पहुँचा और बोला, "आपने कहा थ तुमको शिक्षा दे दी है, परन्तु प्रवाहण ने मुझ से पाँच प्रश्न किये थे। मुझे का भी उत्तर नही सूझा।" पिता ने पूछा, "प्रश्न क्या थे?" पुत्र ने उ सारांश बता दिया। पिता बोला, "मुझे जो कुछ आता था, वह सब मैंने दिया था, कुछ छुपा नहीं रखा। अतः आओ, राजा के पास चलें और प्रश्नों का उत्तर जानें।"

पुत्र ने कहा, "पिता जी, आप ही जायें।" तब वह मुनि राजा के पहुँचा। राजा ने मुनि का आदर किया, जल मंगवाया, अर्घ्य दिया और दिया।

राजा ने कहा, "मुनिवर! आप कैसे पधारे हैं? कोई वर माँगो मुनि ने कहा, "हे राजन्! मेरे पास सब प्रकार की धन-सम्पत्ति है। कुछ नहीं चाहिए। पर मुझे उन प्रश्नों का उत्तर चाहिए जो आपने कुमा किये थे।'

इस पर राजा बोला, यदि उस ज्ञान की प्राप्ति करनी है तो गुरु भाव से जानो।"

मुनि ने उत्तर दिया, "राजन्! मैं आपको शिष्य भाव से प्राप्त होता इसके पश्चात् वह मुनि राजा का शिष्य बनकर उनकी सेवा करने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किन्तु राजा ने कहा, "हे मुनिवर ! आप मेरे शिष्य बनकर मुझे अपराधी न
ाएँ। आप आदर के योग्य हैं। जो विद्या पहले ब्राह्मणों के पास थी, वह अब
त्रियों के पास है। वह मैं आपसे कहता हूँ। सुनिए।

"जब देवजन श्रद्धा से अग्नि में आहुति डालते हैं, उससे आकाश में जल
न्न होता है। जब श्रद्धा से होम करते हैं तो जल के मेघ वृष्टि करते हैं।
वृष्टि से पृथिवी से अन्न उत्पन्न होता है। जब मनुष्य उस अन्न को खाते
तो उससे वीर्य बनता है। जब देवजन उस वीर्य को योनि रूपी अग्नि में
ाते हैं तो उस आहुति से मनुष्य का जन्म होता है। वह मनुष्य कर्मानुसार
वाह
वत रहता है। और जब मरता है तब उस मृतक शरीर को बन्धुजन दाह
जा
अग्नि के हवाले करते हैं। जो शरीर के भीतर जीवात्मा है, उसको वायु
को
सूर्य की किरणें वायुलोक में ले जाते हैं। आत्मा नहीं मरता। अमर है।
'जो मनुष्य अपने जीवन में सत्य को आराधते हैं, साधना करते हैं, श्रेष्ठ
यज्ञादि करते हैं, प्रभु की आराधना करते हैं, उनका आत्मा प्रकाश के मार्गों
ाता है।

स्वो
"पर जो इष्ट कर्म करते हैं, दान करते हैं, तप करते हैं, उत्तम कर्म करते
ा थे
पितृयान मार्ग से जाते है। उनको कर्मानुसार फिर जन्म मिलता है। वे
मुझे
मरण के बन्धन से नहीं छूटते।
ने उ
"तीसरे वे मनुष्य हैं जो पाप कर्म करते हैं जो इन दोनों मार्गों से नहीं
। उनको भोग-योनि मिलती है। वे कीट, पतंग, पशु, पक्षी आदि योनियों
मैंने
न्म लेते हैं। वे जायस्व, म्रियस्व योनियों में घूमते हैं। अपने कर्मों की सज़ा
औरहूँ।"

राजा ने उन प्रश्नों का उत्तर मुनि को इस प्रकार दिया। इस कथा से
के है कि प्राचीन भारत में राजा लोग भी ब्रह्मविद्या को जाना करते थे।

र अ
आज हमारे धर्म, सभ्यता और संपूर्ण परंपरा पर काल मंडरा
मांगे
है। संपूर्ण इतिहास में संकट की ऐसी विकराल घड़ी नहीं
है।
, जैसी आज आयी है। सारी आसुरी शक्तियां अपने पूरे बल
कुम
वन गंगा धारा को मिटाने का संकल्प लेकर बढ़ रही हैं।
आर्य पुत्र, जागो ! संभलो !! वेद, धर्म, गौ, गंगा और गायत्री
र पर लटकती तलवार को देखो और संगठित होकर प्रभु-
गुरु
की रक्षा करो। कायर मत बनो, प्रमाद मत करो, हे कृष्ण
ाज ! अब सुदर्शनचक्र फिर से चलाने का समय आ गया है।
होता
रने त

—भारतेन्द्रनाथ

[मा
र्ष संवत् २०२७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक महान् ग्रंथ : ५ वर्षों के श्रम का सार

धर्मग्रन्थावलोकन

—अगले पृष्ठ से आरंभ है—

संसार के प्रमुख धर्म-ग्रन्थों का प्रमाणिक विवरण

प्रोफेसर श्री रत्नचन्द शर्मा एम० ए० द्वारा लिखित

४२ पृष्ठ आप नवंबर अंक में पढ़ चुके और इस अंक में ४८ पृष्ठ आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं

यह अनमोल ग्रंथ पृथक् भी छप रहा है। बढ़िया कागज पर सजिल्द। मूल्य केवल १)।

अपनी प्रतियां अविलंब सुरक्षित कराएं

जन-ज्ञान प्रकाशन
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग,
नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३

पारसी मत

फारस (सं० पारस) से सम्बन्धित होने के कारण तथा वहां से आने के कारण पारसी लोगों का यह नाम पड़ा। जहां तक उनके धर्म का सम्बन्ध है वे ज़रथुस्त्री हैं और ज़रथुस्त्र द्वारा प्रवर्तित धर्म को मानते हैं।

ग्रीक पुस्तकों में ज़रथुस्त्र को ज़ोरोस्त्रेस अथवा ज़रस्ट्रेडेस (Zoroastres or Zarastredes) कहा गया है और रोमन लोग उन्हें ज़ोरोस्तर (Zoroaster) कहते हैं। फारसी में उन्हें ज़रदोश्त कहा जाता है।

भारत में पारसियों की संख्या बहुत थोड़ी (लगभग एक लाख) है, परन्तु उन्होंने भारत की और विशेष कर आधुनिक भारत की बहुत सेवा की है। इतिहासज्ञों के अनुसार पारसी ईरानी आर्यों की सन्तान हैं। इस लिए उनकी कई बातें भारतीय आर्यों (हिन्दुओं) से मिलती-जुलती हैं। उदाहरण रूप में प्राचीन पारसियों (ईरानी आर्यों) में भी भारतीय आर्यों के समान चार वर्गों अथवा जातियों (१) आथ्रवन (ब्राह्मण), (२) रथैस्तार (क्षत्रिय), (३) वास्त्र्योष (वैश्य) और (४) हुतोक्ष (शूद्र, दास) का विधान था। वे भी प्रकृति के दिव्य तत्त्वों सूर्य, अग्नि, वायु, जल, चन्द्रमा आदि की दिव्यता में विश्वास रखते थे और इन सभी दिव्य तत्त्वों के ऊपर और इनमें परिव्याप्त अदृश्य, सूक्ष्म और सर्वोच्च तत्त्व ईश्वर को मानते थे। वे भी जात कर्म संस्कार करते थे।

पारसियों की परम्परा के अनुसार हज़रत ज़रथुस्त्र का जन्म और जीवन अनेक चमत्कारपूर्ण घटनाओं से युक्त था। इतिहासकारों के अनुसार उनका जन्म ६००-१००० ई० पू० मेडिया (Media) में रहगा (Rhaga) नामक नगर में हुआ। वे क्योमर्स महाराज के वंशज थे उनके पिता का नाम यूरशप और माता का दगदुइया था। उनका कार्यक्षेत्र बैक्टरिया, पूर्वी मेडिया, ईरान और फारस रहा। उनकी पत्नी का नाम ह्वोवी (Hvovi) था और छः सन्तानें थीं जिनमें से तीन पुत्र थे और तीन पुत्रियां। वे अधिकतर एकान्त जीवन बिताते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

थे। वृद्धावस्था में बाल्क (Balk) नामक स्थान पर तुरामियनों (Turamians) के एक समूह ने उनका वध कर दिया। उस समय तक उनके मत का प्रसार हो चुका था।

पारसियों का परम पवित्र और प्राचीनतम ग्रन्थ अवेस्ता है।

अवेस्ता

अवेस्ता तौरेत, बाईबल, कुरआन आदि से कहीं अधिक प्राचीन ग्रन्थ है। अनेक विद्वानों के अनुसार ज़रथुस्त्र के विचारों से तौरेत, बाईबल और कुरआन आदि के रचयिता प्रभावित थे। यहूदी, ईसाई और इस्लाम मतों के सिद्धान्तों की पारसी मत के सिद्धान्तों के साथ तुलना करने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि तीनों के अनेक सिद्धान्त ज्यों के त्यों पारसी धर्म-ग्रन्थ में विद्यमान हैं और स्पष्टतः वहां से लिए गये हैं एवं कुछ सिद्धान्त थोड़े परिवर्तित रूप में ग्रहण किये गये हैं। उदाहरणार्थ जैसे—ईश्वर की एकता, ईश्वर का निवास-स्थान आकाश, पवित्र ईश्वरीय शक्ति और अपवित्र शैतान की कल्पना, पैग़म्बरवाद और ईश्वर का फरिश्तों द्वारा पैग़म्बर के पास सन्देश भेजना, पैग़म्बर की पुस्तक को ईश्वरीय पुस्तक मानना, पैग़म्बर और उसकी पुस्तक पर ईमान लाने से जन्नत (स्वर्ग) की प्राप्ति, न्याय के दिन पैग़म्बर की सिफ़ारिश (शफ़ाअत) से जन्नत मिलना, मौजज़े और चमत्कार, पैग़म्बरों का मैराज अर्थात् ईश्वर के साथ आसमान पर मुलाकात, आकाश पर स्वर्ग और नरक का अस्तित्व, छः दिन में सृष्टि की रचना और सातवें दिन ईश्वर द्वारा आराम करना, फरिश्तों की सत्ता और उनके अलग-अलग नाम, प्रलय के पश्चात् मुर्दों का जीवित होना और उनसे हिसाब लिये जाने के लिए दिन की नियुक्ति, पूजा और उपासना से पहले स्नान करने या हाथ-मुंह धोकर वुज़ू करने अथवा पानी न मिलने की अवस्था में मिट्टी या रेत से तैम्मुम करने की पद्धति, सम्मिलित पूजा और उपासना, जीवन को सदाचार पूर्ण बनाने की शिक्षा आदि ऐसे सिद्धान्त हैं जो चारों धर्मों (पारसी, यहूदी, ईसाई और इस्लाम) में समान रूप से उपलब्ध हैं। स्पष्ट है कि इन सबकी उद्भावना पहले श्री ज़रथुस्त्र ने की। उनका अनुकरण हज़रत मूसा ने किया। तब उन दोनों का अनुकरण ईसाइयों ने किया और अन्त में तीनों का अनुकरण मुहम्मद साहब ने किया।

पारसियों के अनुसार अहुरमज़दा (ईश्वर) एक है जो सर्वव्यापक, सर्व-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शक्तिमान् और परम दयालु है। यहूदियों के अनुसार यहुवा (ईश्वर) भी इन्हीं गुणों से सम्पन्न है। ईसाई भी ऐसा ही मानते हैं। मुहम्मद साहब ने भी (अल्ला) ईश्वर के सम्बन्ध में ऐसे ही भाव व्यक्त किये हैं। पारसी मानते हैं कि अहमज़दा ने ज़रथुस्त्र को अपना पैग़म्बर चुना और सरोश नामक फरिश्ता को अपनी आज्ञाएं देकर उनके पास भेजा। उन्हें मुलाकात के लिए आसमान पर बुलाया गया और उन्हें आसमानी पुस्तक अवेस्ता दे कर लौटाया गया है। जो ज़रथुस्त्र तथा अवेस्ता पर ईमान लाता है वह स्वर्ग में जाएगा और उनपर ईमान न लाने वाला नरक में जायगा। यहूदियों का भी ऐसा ही मत है। वे हज़रत मूसा को पैग़म्बर मानते हैं जिनके पास फरिश्ता जब्राईल यहुवा (ईश्वर) के सन्देश लाता है। हज़रत मूसा की यहुवा से अनेक मुलाकातें हुईं और उन्हें तौरेत (तौरात) नामक ग्रन्थ दिया गया। जो व्यक्ति हज़रत मूसा और तौरेत पर ईमान लायेगा, वह अवश्य जन्नत (स्वर्ग) में जायेगा, ईमान न लाने वाला दोज़ख (नरक) में जायेगा। ईसाई हज़रत ईसा को न केवल ईश्वर का पैग़म्बर ही, वरन् इकलौता बेटा भी मानते हैं। जब्राईल उनके पास ईश्वरीय सन्देश लाता था और बाईबल ईश्वरीय पुस्तक है। ईसा और बाईबल पर ईमान लाने वाले को ही स्वर्ग मिलेगा, दूसरों को नरक मिलेगा। यहां यह स्मर्तव्य है कि बाईबल में पूर्ववर्ती पैग़म्बरों को स्वीकार किया गया है, परन्तु ईसा (क्राईस्ट) को प्रमुखता दी गई है। इस्लाम के अनुसार अल्ला (ईश्वर) ने हज़रत मुहम्मद को अपना पैग़म्बर चुना और जब्राईल फरिश्ता उनके पास अल्ला के सन्देश लाता था। मुहम्मद साहब ने भी शबे मैराज (मैराज अथवा ईश्वर से मुलाकात की रात) में आकाश की यात्रा की और कुरआन ईश्वरीय पुस्तक है। मुहम्मद साहब तथा कुरआन पर ईमान लाने वाले को वहिश्त (स्वर्ग) मिलेगा और उनपर ईमान न लाने वाले को नरक में जाना पड़ेगा। मुहम्मद साहब ने भी कुरआन में अपने से पूर्ववर्ती अनेक पैग़म्बरों के नाम गिनाये हैं और उनसे सम्बन्धित कहानियां लिखी हैं। पारसियों के अनुसार न्याय के दिन (Day of Judgement) ज़रथुस्त्र रक्षक बनेगा, यहूदियों के अनुसार हज़रत मूसा, ईसाइयों के अनुसार हज़रत ईसा और मुसलमानों के अनुसार हज़रत मुहम्मद। इस समता के आधार पर कहा जा सकता है कि मूल रूप में ये सभी मान्यताएं अवेस्ता में थीं। यहां से वे क्रमशः तौरेत, बाईबल और कुरआन में आईं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अवेस्ता को ज़ेन्द-अवेस्ता भी कहते हैं। ज़ेन्द वस्तुतः अवेस्ता की प्राचीन टीका है जो पहलवी में लिखी हुई है और मूल ग्रन्थ के नाम के साथ ही अभिहित की जाती है। अवेस्ता ज़रथुस्त्र की वाणियों का संग्रह है जिन्हें गाथाएं भी कहा जाता है। डॉक्टर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या के अनुसार ज़रथुस्त्र द्वारा लिखी गई गाथाओं का रचनाकाल साधारणतया ईसा पूर्व सातवीं शताब्दी था।[1] चैम्बर्स डिक्शनरी के अनुसार अवेस्ता का वर्तमान रूप में संकलन ईसा की चौथी शताब्दी में शाहपुर द्वितीय (शासनकाल ३०९-३३८ ई०) के शासनकाल में हुआ। डॉक्टर सी० कुन्हन राजा के अनुसार ज़रथुस्त्र का समय लगभग १००० पूर्व ईसा है और गाथाओं में दी गई उनकी जीवन-कहानी श्रीमद्भागवत में दी गई श्रीकृष्ण की जीवन-कहानी से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। दोनों के जन्म का कारण भी एक-सा ही बताया गया है। भागवत में पाप-भाराक्रान्त पृथ्वी गौ के रूप में भगवान् विष्णु के पास सहायता मांगने के लिए जाती है और भगवान् कृष्ण रूप में उसके कष्टों को दूर करने का वचन देते हैं। अवेस्ता में पृथ्वी गौ के रूप में अहुर मज्दा के पास शरण पाने के लिए जाती है और वे ज़रथुस्त्र को भेजने का वचन देते हैं। पारसी-परम्परा के अनुसार हज़रत ज़रतुश्त (ज़रथुस्त्र) ईसा से लगभग २५०० वर्ष पूर्व ईरान मे उत्पन्न हुए। साधारणतया ज़रथुस्त्र का स्थितिकाल ६०० ई० पू० से लेकर १००० ई० पू० स्वीकार किया जाता है। और यही समय अवेस्ता की रचना का भी है।

उपलब्ध अवेस्ता विभिन्न भागों में विभक्त है। कहा जाता है कि ज़रथुस्त्र ने दो लाख पद लिखे थे। अरब में अनुज़ाफ़िर अत्तावरी द्वारा सुरक्षित एक कहावत के अनुसार ज़रथुस्त्र की रचनाएँ बारह सौ चर्मपत्रों (Parchments) पर लिखी हुई थीं। यूनानी इतिहासकारों के अनुसार मूलग्रन्थ इक्कीस नास्कों (भागों) में विभक्त था। सम्भवतः सिकन्दर के आक्रमण के समय इसका बहुत सा भाग नष्ट हो गया। बाद में यहूदियों, ईसाइयों और विशेष रूप से मुसलमानों ने भी इस ग्रन्थ को ढूंढ़-ढूंढ़ कर नाश किया। नष्ट हुए अठारह नास्कों (भागों) में ज़रथुस्त्र का व्यक्तिगत इतिहास और जीवन-परिचय भी था। उन्नीसवाँ नास्क पूर्ण और सुरक्षित है। आजकल उसे वेन्दीदाद (Vendidad) कहा जाता है। वेन्दीदाद का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है 'राक्षसों के विरुद्ध' (against the demons)। अवेस्ता का प्रमुख उपलब्ध भाग 'यस्न' (Yasnas)

1. Indo-Aryan and Hindi, page 55.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। 'यस्न' संस्कृत ने 'यज्ञ' शब्द का रूपान्तर है और यस्नों का उपयोग पूजा के लिए होता है। यस्न भाग ७२ अध्यायों में विभक्त है। ये अध्याय आकार में लगभग बराबर हैं। इन सब को तीन बड़े विभागों में विभक्त किया जाता है। पहले विभाग में सत्ताईस अध्याय अथवा प्रकरण सम्मिलित हैं। अट्ठाईसवें अध्याय से लेकर त्रेपनवें अध्याय तक दूसरा विभाग है जिसे गाथाओं के नाम से भी पुकारा जाता है। इन छब्बीस अध्यायों में संगृहीत गाथाएँ पाँच वर्गों में विभक्त हैं। पाँचों वर्गों में अलग-अलग छन्दों का उपयोग किया गया है। गाथाओं में प्रार्थनाएं एवं दार्शनिक तथा आध्यात्मिक विचार हैं। तीसरे भाग में चौवन से लेकर बहत्तर तक अध्याय सम्मिलित हैं। विस्पेरद (Vispered) (संस्कृत=विश्वे ऋतवः) यस्न भाग का परिशिष्ट है। यष्टों (संस्कृत=यजतः) में इक्कीस सूक्त हैं जो वन्दनीय दिव्य पुरुषों के सम्बन्ध में हैं। यहाँ यह बात विचारणीय है कि अवेस्ता के पहलवी रूपान्तर दिनकर्द (Dinkard) में वेन्दीदाद, गाथाएँ और यष्ट सम्मिलित हैं। उनके साथ उन प्राचीन नास्कों के विषयों का भी उल्लेख है जो नष्ट हो चुके हैं। परन्तु उसमें यस्नों तथा विस्पेरद का उल्लेख नहीं है।

गाथाओं में अत्युत्कृष्ट काव्यमयी भाषा में अत्युच्च भावों को व्यक्त किया गया है। यष्टों में न केवल काव्यमयी भाषा और छन्दो योजना ही दर्शनीय है, वरन् उसमें काव्यकला के उत्कृष्ट उदाहरण भी देखे जा सकते हैं। डॉक्टर तारापोरवाला, डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या आदि के अनुसार भाषा और भाव दोनों दृष्टियों से गाथा और ऋग्वेद के आरम्भिक मन्त्र समान हैं और दोनों में एक ही छन्द का प्रयोग हुआ है। डॉ० तारापोरवाला का तो यहाँ तक कहना है कि गाथा के मन्त्रों को उसी आसानी से वेदमन्त्रों की भाषा में बदला जा सकता है जिस आसानी से पाली और प्राकृत के श्लोकों को संस्कृत के श्लोकों में परिवर्तित किया जा सकता है। निम्नलिखित शब्दों, वाक्यों और वाक्यांशों से इस तथ्य की भली भांति पुष्टि हो सकती है :—

अवेस्ता	वैदिक	अवेस्ता	वैदिक
अहुर	असुर	यज	यज
अषव	शिव	यत् वा	यद्वा
अथा	अथ	ख्षथ्र-वर्ह्य	क्षत्र-वीर्य
ख्रतुश्	ऋतुः	नेंमसेंते	नमस्ते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ख्तुमाओ	ऋतुमान्	मइन्यु	मन्यु
कुथ्र	कुत्र	थ्राता	त्राता
यथ्र	यत्र		
हओम	सोम	पित	पिता
हउर्वतात्	सर्वताति	ननां	नाना
सूराओ	शूरो	यथ	यथा
ज्ह्राता	ज्ञाता	मज़ीबीश्	महीभिः
दए व	देव		
वएँद	वेद		

वाक्य और वाक्यांश

अवेस्ता	वैदिक
१ आपो···यासामि (यस्न ६५/११	१ अपो याचामि। (ऋग्वेद १०/९/५)
२ अर्घ्यमनम्···यजमइदे। (यस्न ५४/२/१)	२ अर्यमणं यजामहे। (अथर्व० १४/१/१७)
३ अङ्रो मईन्युश। (वेंदीदाद, अ० १)	३ अङ्गिर मन्यवे। (ऋग्वेद ८/८४/४)
४ वरन्यनांमच दएवनांम्।	४ वरेण्यं···देवानाम् (देवस्य)।
५ नॅमसॅत्ते २ अहुरमज्द।	५ नमस्ते असुर महः।

ये उदाहरण केवल नमूने के रूप में रखे गये हैं। ऐसे पच्चासों और उदाहरण मिल सकते हैं जिनमें भाषागत समता के साथ-साथ अर्थगत समता और भावगत उपलब्धि होती है। भाषा वैज्ञानिक के अनुसार इस समता का मुख्य कारण यह है कि ईरानी और भारतीय आर्य कुछ समय तक ईरान (आर्याणाम्) में इकट्ठे रहे थे। उनके अनुसार वेद के अनेक सूक्त सम्भवतः वहीं रचे गये थे। परन्तु इनसे अवेस्ता पर वेद का प्रभाव भी सिद्ध होता है और यह सूचित होता है कि ज़रथुस्त्र वेद के प्रति आदरपूर्ण दृष्टिकोण रखते थे, परन्तु साथ ही अपने देश की विकृतावस्था के सुधार के लिए तथा अपने नवीन मत के प्रवर्तन और अपने सिद्धान्तों के प्रचार के लिए भी कटिबद्ध थे। उनके द्वारा अवेस्ता में बार-बार किया 'वएँद' (वेद) शब्द का प्रयोग भी इसी तथ्य की पुष्टि करता है। जैसे—अज़ॅम्चीत् अह्ला मज्दा श्वाँम् मङॅ्ही पओ् उर्वीम्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वएँदम्"[1] [मैं तुम्हारा चिन्तन करता हूँ हे महान्, और इस (संसार अथवा जीवन) के आरम्भिक वेद का], "अङ्हीश्चा अङहवस्चा अपयेहती रएखंनङ हो वएँदम्"[2] [ऐसे धनलुब्धकों से, हे सद्गृहस्थो (पुरुषो और स्त्रियो) वेद को छीन लो।] आदि। ज़रथुस्त्र ने अपने आपको अनेक बार 'वएँदमनों', 'वए२दँमनाइ' (वेद में मन अर्थात् विश्वास रखने वाला) कहा है और मुक्त कण्ठ से वेद की प्रशंसा करते हुए कहा है—

"कुथा तो२इ अरँद्रा मज़दा यो२इ वङ्हँउश् वए२दँना मनङ्हो।[3]
सँन्ग्हूश् रए२खँनाओ अस्पँन्चीत साद्राचीत् चारव्रयो२ उषँउरू।
नए२चीम् तँम् अन्यँम् यूष्मत् वएदा अषअथा-नाओ थाज़्दूम्॥[3]

(हे मज़्दा, कहाँ हैं वे तेरे भक्तजन जो प्रेम तथा अतिचेतना रखने के कारण विपत्तिकाल में भी वङ्हउ के वेद द्वारा सैद्धान्तिक कोश प्रस्तुत करते हैं। हे वेदो! मज़्दा के अतिरिक्त उनमें से किसी एक को हमारे पास लाओ। हे सत्य शान्तिमय! अब हमारी रक्षा कर।) श्री रुलिया राम काश्यय के अनुसार यहाँ "वङ्हउ के वेद" से अभिप्राय अथर्ववेद से है।

अत फ़्रवख्षया अङ्हँउश् अह्या वहिश्तँम्।
अषात् हचा मज़्दा वए२दा यँ ईम् दात्॥[4]

(अब मैं संसार में सर्वोत्तम सार वेदों के विषय में कहूँगा जिन्हें मज़्दा ने हचा (वैदिक—ऋतं महत्) से संयुक्त कर के मानवों को प्रदान किया।)

ज़रथुस्त्र के सिद्धान्त

(१) श्री ज़रथुस्त्र के अनुसार अहर (असुर)[5] विश्व की सर्वोच्च शक्ति है। वह सभी दृश्य तत्त्वों से ऊपर है, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है। उसी की पूजा करनी चाहिये। (२) श्री ज़रथुस्त्र का धर्म आचार प्रधान धर्म

१. यस्न, २९/१०
२. यस्न, ३२/११
३. यस्न, ३४/७
४. उश्त० गा० य० ४५/४/१/२
५. असुर शब्द वेद में देवता वाचक है और इन्द्र का विशेषय है। अवेस्ता में इसका अर्थ ईश्वर है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। उन्होंने जीवन को श्रयस्कर और मंगलमय बनाने के लिए बड़ा जोर दिया है। (३) वे मानवता के समर्थक थे। उन्होंने अपने अनुयायियों अथवा अपने देश के नरपतियों को कभी यह नहीं कहा कि तुम अपने पड़ौसी देशों में ज़रथुस्त्र-मत का प्रचार करने के लिए आग और तलवार का प्रयोग करो, अथवा निर्धनों को पीड़ित करो, अथवा दूसरों के धर्म में हस्तक्षेप करो। (४) वे तो असत पर सत की विजय का उपदेश देते थे। "यतो धर्मस्ततो जयः" कह कर भगवान् कृष्ण ने धर्म द्वारा विजय प्राप्त करने का उपदेश दिया है। श्री ज़रथुस्त्र भी कहते हैं—"अश्य वोहू वहिश्तम् अस्ति उश्त अस्ति" अर्थात् "धर्म सर्वोच्च अच्छाई है, यह प्रकाश है।"

अवेस्ता के अनुसार—

(१) अहरमज़्दा एक है जो अनादि और अनन्त है। वह सर्वव्यापक है, परन्तु उसके रहने का यथार्थ स्थान आकाश है। वह सर्वशक्तिमान् है वही संसार को बनाता, बिगाड़ता और स्थिर रखता है।

(२) अहरमज़्दा की दो बड़ी शक्तियां हैं—स्पैंटामैन्यू और अंग्रामैन्यू। स्पैंटा-मैन्यू श्रेष्ट क़ार्यों और अच्छाइयों की शिक्षा देती है और अंग्रामैन्यू मनुष्य को बुरे और हेय कार्यों में प्रवृत्त करती है।

(३) जीव और प्रकृति अनादि और अनन्त हैं। वे सदा अहरमज़्दा के अधीन रहे हैं और सदैव आधीन रहेंगे।

(४) मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है, परन्तु फल भोगने में अहरमज़्दा के अधीन है। सभी जीवधारियों में जीव समान हैं। बिना कारण किसी जीव की हिंसा नहीं करनी चाहिये।

(५) जीव को अपने अच्छे या बुरे कर्मों के द्वारा अच्छा या बुरा जीवन आवा-गमन के द्वारा प्राप्त होता है।

(६) स्वर्ग और नरक आसमान पर हैं। स्वर्ग में अति सुख और नरक में अति दुःख मिलता है।

(७) हज़रत ज़रथुस्त्र सच्चा पैग़म्बर है और अवेस्ता ईश्वरीय पुस्तक है। इन पर ईमान लाने वाले को ही स्वर्ग मिलेगा।

(८) अहरमज़्दा ने संसार के कामों की देखभाल और प्रबन्ध करने के लिए बहुत से फरिश्ते नियत किये हुए हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(९) प्रलय या कयामत का दिन नियत है। प्रलय के पश्चात् सब मुर्दे किये जायेंगे और उनसे उनके कर्मों का हिसाब लिया जायेगा।

(१०) अग्नि का हर समय ध्यान रखने से अहरमज़्दा का ही ध्यान होता है। आतिश कदा (पारसियों का मन्दिर) में अग्नि को सदैव जलाये रखना चाहिये और उसमें सुगन्धित पदार्थ डालने चाहियें।

(११) कमर के चारों ओर कुसती (ऊन के धागे) को बांधने से अहरमज़्दा की सेवा होती है और उसकी आज्ञा का पालन होता है।

(१२) किसी की मृत्यु पर रोना-पीटना बुरा है। मरने के बाद पुनर्जन्म होता है। मरने के बाद तीन दिन तक अग्नि के प्रचण्ड रखने से अहरमज़्दा की आज्ञा का पालन होता है।

(१३) पवित्र विचारों, पवित्र शब्दों और पवित्र कार्यों से मनुष्य का जीवन उच्च होता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४

यहूदी मत (Judaism)

यहूदी मत को अंग्रेज़ी में जूडाइज़्म (Judaism) कहा जाता है। इसे मूसाई मत तथा इब्रानी मत के नाम से भी पुकारा जाता है। यहूदियों का विश्वास है कि यह मत जहुआ (ईश्वर) के द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति के साथ-साथ ही प्रवर्तित किया गया था। ह० इब्राहीम, ह० इज़हाक, ह० याकूब आदि पैग़ाम्बर और नबी इसी मत को मानने वाले थे। साधारणतया विश्वास किया जाता है कि इसका आरम्भ मिश्र देश में हुआ और इसके प्रवर्तक ह० मूसा (Moses) थे जिनका स्थितिकाल ह० ईसा से १७१६ वर्ष पूर्व माना जाता है। इस प्रकार ह० मूसा आज से लगभग सैंतीस सौ वर्ष पूर्व विद्यमान थे। परन्तु यह स्थिति-काल संदिग्ध प्रतीत होता है, क्योंकि ह० मूसा का जन्म ह० ज़रथुस्त्र के बाद हुआ और उनका स्थितिकाल लगभग १००० वर्ष पूर्व माना जाता है।

यहाँ यह स्मर्तव्य है कि ईसाई लोग भी ह० इब्राहीम से लेकर ह० ईसा तक सभी पैग़ाम्बरों और नबियों का सम्मान करते हैं और कहते हैं कि वे सब उन्हीं सिद्धान्तों को मानने वाले थे जिनका प्रचार ह० ईसा ने किया था। मुसलमान भी ह० इब्राहीम से लेकर ह० मुहम्मद तक सभी पैग़ाम्बरों और नबियों का सम्मान करते हैं और कहते हैं कि उन्होंने उन्हीं सिद्धान्तों का प्रचार किया था जिनका बाद में हज़रत मुहम्मद ने किया। क़ुरआन में इन सबके जीवन और सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है। इस प्रकार ये सभी मत एक ही परम्परा से सम्बद्ध हैं और उत्तरोत्तर एक दूसरे से विकसित हुए हैं। उत्तर-वर्ती मतों ने पूर्ववर्ती मतों के सिद्धान्तों का अनुकरण किया है, परन्तु बाद में इनके एक दूसरे के साथ भयानक एवं अत्याचारपूर्ण धार्मिक युद्ध (Crusades) भी हुए जिनसे इतिहास तथा उनकी धार्मिक पुस्तकों के पृष्ठ भरे पड़े हैं। उन युद्धों का मुख्य कारण एक दूसरे के पैग़ाम्बर, रसूल या नबी को एवं ईश्वरीय पुस्तक को मानना या न मानना था। यहूदी तौरेत को ईश्वरीय पुस्तक तथा हज़रत मूसा को ईश्वर का पैग़ाम्बर मानते हैं, और जो ऐसा नहीं मानते उन्हें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वे काफिर समझते हैं। ईसाई बाईबल (New Testament) को ईश्वरीय पुस्तक स्वीकार करते हैं और हज़रत ईसा को ईश्वर का बेटा बताते हैं एवं ऐसा न मानने वालों को काफिर बताते हैं। मुसलमानों के मतानुसार कुरआन ईश्वरीय पुस्तक है तथा हज़रत मुहम्मद पैग़म्बर हैं और जो ऐसा नहीं मानते वे काफिर हैं। परन्तु तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि हज़रत मुहम्मद ने ईसा के सिद्धान्तों का और हज़रत ईसा ने हज़रत मूसा के सिद्धान्तों का अनुकरण किया है। स्वयं हज़रत मूसा के विचारों पर श्री ज़रतुश्त के सिद्धान्तों का प्रभाव लक्षित होता है। श्री पाल ब्रंटन पी. एच. डी. (Paul Brunton, Ph.D.) का अपनी पुस्तक 'दि इन्नर रियैलिटी' (The Inner Reality) में कहना है कि ओल्ड टैस्टामैंट (Old Testament) में Brok of Proverbs का एक पूरा अध्याय मिश्री सन्त एमीनीमोप (Amenemope) की पुस्तक से अक्षरशः ग्रहण (नकल) किया गया है। उनका यह भी कहना है कि हज़रत मूसा ने जिस धर्म का प्रचार किया वह ओसिरियों (Osiris) के धर्म की ही एक शाखा थी।[1]

बाईबल के अनुसार हज़रत मूसा (Moses) का जन्म मिस्र में हुआ। उनके माता-पिता यहूदी थे। उस समय मिस्र में बादशाह फेरो (Pharaoh) का शासन था। फेरो ने आदेश जारी किया कि यहूदी माता-पिता से उत्पन्न होने वाले सभी नर-शिशुओं का बध कर दिया जाए। इस आदेश के अनुसार हज़ारों यहूदी नर-शिशु मारे गये। ह० मूसा की माता ने अपने बच्चे को बचाने के लिए उसे नदी के किनारे पर झाड़ियों में डाल दिया। फेरो की बेटी वहाँ स्नान करने के लिए आई और उसने उठा लिया एवं उसकी देख-भाल के लिए उसी की माता को नौकर रख लिया। इस प्रकार उसका पालन-पोषण राज-प्रासाद में ही हुआ। बड़ा होने पर वह ह० इब्राहीम की कहानियों तथा यहूदियों के कष्टों से बड़ा प्रभावित हुआ। एक बार उसने देखा कि एक मिस्री एक यहूदी को बुरी तरह पीट रहा था। उसने क्रोध में आकर उस मिस्री को मार दिया और स्वयं मिस्र से भागकर रेगिस्तान में चला गया। धीरे-धीरे उसने यहूदियों को संगठित किया और उन्हें फेरो के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उभारा। उसने अपने आपको ईश्वर का पैग़म्बर घोषित किया और सिनाई पर्वत पर आश्रय-स्थान बनाया। उसके पश्चात् अपने अनुयायी यहूदियों के निवास के लिए कैनान (Canaan) को चुना। फेरो की मृत्यु के पश्चात् यहूदी मत का यथेष्ठ प्रचार हो गया।

1. The Inner Reality of the Mystery of Jesus, Page 273

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तौरात (तौरेत) (Torat)

यहूदियों की ईश्वरीय पुस्तक को तौरात अथवा तौरेत कहते हैं। यहूदियों का विश्वास है कि ईश्वर ने बनिइस्राइल जाति के उद्धार के लिए मूसा को अपना पैग़ाम्बर चुना और उसे सीना पर्वत पर बुलाकर उपदेश दिया। ईश्वर ने जो-जो बातें कहीं वे सब मूसा ने लिख लीं। ये सब घटनाएँ और शिक्षाएँ तौरेत में संगृहीत हैं। तौरेत वस्तुतः ३९ पुस्तकों का संकलन है जिसे पुराना अहदनामा Old Testament or Hebrew Bible भी कहते हैं। यहूदियों के कथनानुसार इन पुस्तकों में वही आज्ञाएँ लिखी हुई हैं जो ईश्वर से हज़रत मूसा को प्राप्त हुई थीं। इनमें से पहली पाँच पुस्तकें पेण्टाट्यूक (Pentateuch) के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनके नाम हैं—(१) उत्पत्ति (Genesis), (२) बहिर्गमन (Exodus), (३) अहबार (Leviticus), (४) संख्या (Number) और (५) इसतसना (Deuteronomy)। (१) उत्पत्ति (Genesis) में ईश्वर द्वारा छः दिन में सृष्टि के बनाने, आदम और हव्वा की उत्पत्ति, हज़रत नूह, इब्राहीम, याकूब, यूसुफ़, फिरऔन तथा बनिइस्राइल जाति का वर्णन है। (२) बहिर्गमन (Exodus) में फिरऔन बादशाह का इतिहास, हज़रत मूसा का जन्म, मिदियान देश में जाकर ह० मूसा का भेड़ बकरी चराने पर नौकर होना, होरब पर्वत पर ईश्वर से मिलना, मिश्र में वापिस लौटना और बनिइस्राइल जाति को मिश्र से निकालना, फिरऔन को सेना समेत नदी में नष्ट करना, सीना पर्वत पर ईश्वर से मिलकर उसकी आज्ञाएँ प्राप्त करना आदि का निरूपण है। (३) अहबर (Leviticus) में ईश्वर का हज़रत मूसा से मिलकर मूर्तिपूजा करने से मना करना, हर प्रकार की क़ुरबानी (भेंट) की विधि समझाना, हलाल और हराम पशुओं का विस्तृत वर्णन करना, अन्य जातियों से व्यवहार, ईश्वर के मन्दिर बनाने की विधि, पुजारियों का सम्मान आदि का वर्णन है। (४) संख्या (Number) में हज़रत मूसा द्वारा अपनी जाति की जन-गणना कराना, अपनी जाति को अन्य जातियों के साथ युद्ध के लिए तैयार करना, दूसरी जातियों से युद्ध करके उनका राज्य छीनना, ईश्वर से सहायता प्राप्त करना, पुरुष-स्त्री, कँवारी और विवाहित लड़की तथा दासों और दासियों के साथ व्यवहार की बातें बताना, लूट के माल के विभाजन की विधि आदि का वर्णन किया गया है। और (५) इसतसना (Deuteronomy) में मूर्तिपूजा का विरोध, मूर्तिपूजकों से व्यवहार की विधि, तलाक देने और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुनर्विवाह करने, सूद न लेने, खतना कराने, कर्तव्य और अकर्तव्य कार्यों, सदाचार की बातों आदि की चर्चा है।

इन पांचों पुस्तकों में पुनरावृत्ति बहुत है और बहुत सी बातों को बार-बार लिखा गया है। इनके बाद छटी पुस्तक है जो हज़रत दाऊद के नाम से है। इसे साम्ज़ (Psalms) अर्थात् धार्मिक गीत कहा जाता है। इसे ज़बूर भी कहते हैं। प्रसिद्ध है कि हज़रत मूसा की मृत्यु के पश्चात् बनिइस्राइल जाति की दशा फिर बिगड़ गई। वह पहले के समान फिर मूर्तिपूजा आदि करने लगी। यह देखकर ईश्वर ने हज़रत दाऊद को अपना पैग़म्बर चुना और उसे ज़बूर (Psalms) नामक पुस्तक दी। इसमें भी प्रायः वही बातें लिखी हुई हैं जो पहली पांच पुस्तकों में हैं। इन छः पुस्तकों के बाद की ३३ पुस्तकों में अनेक अन्य व्यक्तियों का इतिहास और सदाचार सम्बन्धी बातें लिखी गई हैं। कई बातें बार-बार लिखी गई हैं।

सिद्धान्त

तौरेत में निम्नलिखित सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है:—

(१) ईश्वर (Yahweh-जहुआ) एक है। वह दयालु और कृपालु है। वही पूजनीय है। वह मनुष्यों के पापों को क्षमा करने वाला है, परन्तु वह बाप-दादा के पापों का दण्ड उनके पुत्रों और पोतों को भी दे देता है। वह अनन्त और अनादि एवं सर्वशक्तिमान् है। वह न्यायकारी है। वह अभाव से भाव की उत्पत्ति कर देता है और वही सृष्टि का संहार भी करता है। वह सर्वगुण-सम्पन्न है। वैसे तो वह सर्वत्र विद्यमान है, परन्तु उसका विशेष स्थान पवित्र हैकिल (देव-मन्दिर) है और उसका सिंहासन ऊपर आसमान पर है।

(२) ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं है और किसी भी प्रकार की मूर्ति की पूजा करना उचित नहीं है।

(३) हज़रत मूसा (Moses) को ईश्वर का पैग़म्बर मानकर उस पर विश्वास करना अत्यन्त आवश्यक है।

(४) समस्त जीव जहुआ (ईश्वर) ने उत्पन्न किये हैं। मरने के बाद मनुष्य स्वर्ग या नरक (जन्नत या दोज़ख) में रहकर अनन्तकाल तक सुख या दुःख भोगते रहेंगे। परन्तु जीव-जन्तुओं और पशु-पक्षियों के विषय में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुछ प्रकाश नहीं डाला गया। प्रकृति के विषय में भी कुछ प्रकाश नहीं डाला गया है।

(५) तौरेत में आवागमन को स्वीकार नहीं किया गया है। हज़रत मूसा स्वर्ग (जन्नत) और नरक (दोज़ख) में विश्वास रखते हैं और उसका अस्तित्व आकाश पर मानते हैं। जन्नत में सब प्रकार का सुख और दोज़ख में हर प्रकार का दुःख मिलता है। वे प्रलय को मानते हैं, परन्तु प्रलय के बाद सृष्टि की फिर से उत्पत्ति के होने या न होने के सम्बन्ध में मौन हैं, और न ही वर्तमान सृष्टि से पहले की किसी सृष्टि के सम्बन्ध में कुछ बताते हैं।

(६) हज़रत मूसा हिसाब के दिन (Day of Judgement) में विश्वास रखते हैं। उनका कहना है कि उस दिन मुर्दे जीवित होंगे और उन्हें स्वर्ग अथवा नरक में भेजा जायगा। वे जिन्न, भूत-प्रेत, शैतान और फरिश्तों की सत्ता भी स्वीकार करते हैं और रोज़ा, ज़कात, (दान-पुण्य), सरफ़ा, कुर्बानी (पशुओं का वध), तलाक़, पुनर्विवाह आदि में विश्वास रखते हैं।

(७) हज़रत मूसा ने सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम आदम और हव्वा (Adam & Eve) से स्वीकार की है। ईश्वर ने पहले दिन दिन और रात बनाया, दूसरे दिन फिज़ा (पवन) को बनाया और उसे पानी से पृथक् किया, तीसरे दिन आकाश के नीचे सागर और पृथ्वी की सृष्टि की, चौथे दिन चान्द, सूर्य, नक्षत्र आदि बनाए, पांचवें दिन जलजन्तुओं और पक्षियों को बनाया, छटे दिन पशुओं, कीड़ों-मकोड़ों, तथा मनुष्य को बनाया तथा सातवें दिन अर्थात् शनिवार को आराम किया।

(८) तौरेत में मुक्ति की प्राप्ति के निम्नलिखित साधन बताए गए हैं:—(क) ईश्वर पर विश्वास रखना और उसी को पूजनीय समझना, (ख) ईश्वर की मूर्ति न बनाना और न मूर्तिपूजा करना, (ग) तौरेत को ईश्वरीय पुस्तक मानकर तदनुसार कार्य करना, (घ) हज़रत मूसा को ईश्वर का पैग़म्बर मानना और उनपर ईमान लाना, (ङ) सिब्त के दिन (Sabbath day) अर्थात् शनिवार को सब कारोबार छोड़कर ईश्वर की पूजा-उपासना में ही दिन बिताना, (च) व्यभिचार आदि बुरे कार्यों से बचना और सत्कार्य करना, (छ) न्याय को स्थिर रखना और दीन-दुःखियों तथा अनाथों की सहायता करना, (ज) माता-पिता का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्मान करना, चोरी न करना और पड़ौसियों से अच्छा व्यवहार करना आदि।

तौरेत में प्रतिपादित ये सिद्धान्त अधिकतर आचार सम्बन्धी हैं। इनमें हिन्दू धर्म के समान ईश्वर, आत्मा, सृष्टि, जन्म-मृत्यु, कर्म-फल, मुक्ति आदि विषयों पर गम्भीर दार्शनिक दृष्टि से विवेचन नहीं किया गया है। हज़रत ईसा ने तथा हज़रत मुहम्मद ने भी प्रायः इन्हीं आचार-सम्बन्धी नियमों और सिद्धान्तों का अनुकरण एवं विवेचन किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जैन मत (Jainism)

जैनमत और बौद्धमत का प्रवर्तन ईसा से छटी-सातवीं शताब्दी पूर्व तत्कालीन आडम्बरपूर्ण, कर्मकाण्ड प्रधान और वर्णव्यवस्था के जटिल नियमों से आक्रान्त समाज के सुधार के रूप में हुआ। उस समय समाज में कर्मकाण्डी ब्राह्मणों का प्रभुत्व था। वे धर्म और समाज के नेता थे और जीवन-सम्बन्धी समस्त नियमों एवं मर्यादाओं को निर्धारित करते थे। वर्णव्यवस्था के नियम कठोर हो गये थे और यज्ञों में पशुबलि दी जाने लगी थी। बाह्याडम्बरों में विशेष रूप से वृद्धि हो गई थी। साधारण जनता का मार्ग अन्धकारमय हो गया था। उसके लिए न तो कर्मकाण्डी ब्राह्मणों का आडम्बरपूर्ण एवं पशुहिंसाप्रधान कर्मकाण्ड ही हितकर था और न उपनिषदों तथा दर्शनशास्त्रों का ज्ञानमार्ग ही। आडम्बरपूर्ण एवं पशुहिंसाप्रधान याज्ञिक कर्मकाण्ड निष्फल था और उपनिषदों तथा दर्शन-शास्त्रों का रहस्यमय चिन्तन जटिल एवं दुर्बोध था। आडम्बरपूर्ण और पशुहिंसाप्रधान यज्ञों के प्रति असन्तुष्ट होकर कुछ लोगों ने वैदिक धर्म के प्रति भी आस्था छोड़ दी। उन्होंने जीवन के रहस्य को नये प्रकार से उद्घाटित करने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया और जीवन के तत्त्वों की नये ढंग से विवेचना आरम्भ कर दी। ऐसे लोगों को साधारणतया दो भागों में विभक्त किया जाता है—एक तो वे जो न तो वेदादि की मान्यता को ही स्वीकार करते थे और न ही व्यक्तिगत आचार की पवित्रता पर ही ध्यान देते थे। उनके मतानुसार "पापपुण्य का विचार केवल ढोंग है। आनन्द और भोग-विलास ही जीवन का मुख्य ध्येय है। इसलिए 'जब तक जीवन है सुख से जीना चाहिए'। शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु चार तत्त्वों से बना है। मृत्यु के अनन्तर ये चारों तत्त्व अपने व्यापक तत्त्वों में मिल जाते हैं और मनुष्य का सब कुछ समाप्त हो जाता है। शरीर से भिन्न आत्मा नाम की कोई वस्तु नहीं है, अतः पुनर्जन्म का प्रश्न ही नहीं उठता। परलोक की अर्थात् स्वर्ग-नरक की कल्पना भी केवल मूर्खता है।" इस मत के अनुयायी चार्वाक कहलाते थे। चार्वाकों का यह मत पश्चिम के भौतिकतावाद से काफी मिलता जुलता है। दूसरा वर्ग उन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लोगों का था जो वेदों में आस्था तो नहीं रखते थे, परन्तु व्यक्तिगत आचार, शुद्धि, शील और संयम को जीवन में विशेष महत्त्व देते थे। उन्होंने उपनिषदों के आधार पर नवीन दार्शनिक सिद्धान्तों की स्थापना की एवं नैतिक तथा सामाजिक आदर्शों पर बल दिया। उन्होंने सांसारिक दुःखों से निवृत्ति तथा परम सुख की प्राप्ति का साधनापथ जनता को बड़ी भावुकता से और सरल तथा व्यावहारिक भाषा में समझाया। जनता को सरल, आचारयुक्त तथा भक्ति प्रधान धर्म की आवश्यकता थी। उसकी पूर्ति उन लोगों ने की। इस वर्ग के नेता थे वर्धमान महवीर और सिद्धार्थ गौतम बुद्ध। इनमें से पहले ने जैनमत का प्रचार किया और दूसरे ने बौद्धमत की स्थापना थी।

जन-मतावलम्बियों के अनुसार जैन मत के प्रचारक चौबीस तीर्थङ्कर थे जिन में से सब से पहले ऋषभदेव थे और अन्तिम वर्धमान महावीर थे। तेईसवें तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ थे जो महावीर जी से लगभग ढाई-सौ वर्ष पहले विद्यमान थे। उन्होंने ही जैन मत के प्रचार के लिए सर्वप्रथम संघ की स्थापना की थी और अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह के पालन का उपदेश दिया था। विवेचक विद्वान् पार्श्वनाथ को ही जैनमत का आद्य प्रवर्तक स्वीकार करते हैं। उनके पश्चात् महावीर जी ने जैन मत और जैन दर्शन की अन्तिम रूपरेखा निश्चित कर दी।

श्री महावीर जी का जन्म ईसा पूर्व ५९९ में वैशाली राज्य के अन्तर्गत कुण्ड ग्राम में हुआ। उनके पिता का नाम सिद्धार्थ था और माता का त्रिशला देवी। सिद्धार्थ कुण्डग्राम के राजा थे और ज्ञातृक नामक क्षत्रिय कुल के मुखिया थे। उनका विवाह समरवीर नामक महासामन्त की पुत्री यशोदा के साथ हुआ। प्रियदर्शना नामक पुत्री भी उनके यहाँ उत्पन्न हुई। तीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने गृह-त्याग कर संन्यास ले लिया। जैन लोग उनके गृहत्याग को **'महाभिनिष्क्रमण'** कहते हैं। संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् साढ़े बारह वर्षों तक उन्होंने कठोर तपस्या थी और कैवल्य ज्योति का साक्षात्कार किया। उनकी कठोर तपस्या सफल हो गई और उनके हृदय कपाट खुल गये। उनकी अन्तरात्मा में ज्ञान का महास्रोत उमड़ पड़ा। जैनशास्त्रों की परिभाषा में अब वे **"केवली, अर्हन्, तीर्थङ्कर और जिन"** हो गये। उसके पश्चात् उन्होंने पैंतीस वर्ष तक पैदल घूम-घूमकर जैन मत का प्रचार किया। ईसा पूर्व ५२७ में ७२ वर्ष की आयु में पावापुरी में उनका देहावसान हो गया। उनके निर्वाण के समय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनके अनुयायियों की संख्या लगभग पांच लाख हो चुकी थी।

जैनियों का धार्मिक साहित्य बहुत विशाल है, परन्तु उसमें सर्वोच्च स्थान सूत्रागमों (सुत्तागमे) का है।

सूत्रागम (सुत्तागमे)

जैनियों के अनुसार सूत्र, आगम और शास्त्र शब्द लगभग पर्यायवाचक हैं। इसीलिए इन ग्रन्थों को कई बार जैन सूत्र और जैनागम भी कहा जाता है। सूत्रागम संख्या में बत्तीस हैं—ग्यारह अंग,[1] बारह उपांग, चार छेद, चार मूल और आवश्यक।

(क) ग्यारह अंग

(एक्कारस अंगाइं) वैसे तो जैनमतावलम्बी सारे ही आगमों को अत्यन्त उपयोगी, सम्मान्य तथा ज्ञान के भण्डार स्वीकार करते हैं, परन्तु अंगों को वे अधिक पूज्य मानते हैं, क्योंकि उनमें तीर्थङ्करों के उपदेशों का संग्रह है। ग्यारह अंग निम्नलिखित हैं :—

(१) **आयारे (आचारांग)**—इसमें साधु-साध्वियों के आचार, भगवान् महावीर की परिषहसहिष्णुता, एषणा, पांच महाव्रतों और उनकी पच्चीस भावनाओं का वर्णन है।

(२) **सूयगडं (सूत्रकतांग)**—इसमें अन्य मतों का खण्डन करते हुए अपने मत का समर्थन किया गया है।

(३) **ठाणे (स्थानांग)**—इसमें एक से लेकर दस तक की संख्या की वस्तुओं का वर्णन है। नौवें ठाणे में श्रेणिध राजा का आगामी भव पर प्रकाश डाला गया है।

(४) **समवाए (समवायांग)**—इसमें एक से लेकर कोड़ा कोड़ी संख्या तक के विषय वर्णित हैं। इसके अतिरिक्त द्वादशांगी स्वरूप भूत-भविष्यत्-वर्तमान त्रिषष्ठिशलाका पुरुषों के माता-पिताओं के नाम और उनके नाम, पूर्व जन्म और आगामी जन्म के नामों का वर्णन है।

---

१. मूल रूप में अंग बारह थे। इसीलिए उन्हें द्वादशाङ्ग कहा जाता है। परन्तु बारहवाँ अंग 'दृष्टिवाद' आजकल उपलब्ध नहीं है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(५) भगवई-विवाहपण्णत्ती (भगवती प्रज्ञप्ति)—इसमें भगवान् गौतम द्वारा पूछे गये ३६००० प्रश्नों के उत्तर हैं। इसके अन्तर्गत रोहा, अणगार, स्कंदक, शिव राजर्षि, जमालि, उदायन, मृगावती, जयन्ती, सोमिल ब्राह्मण आदि के चरित्र भी हैं।

(६) णायाधम्मकहाओ (ज्ञाताधर्मकथांग)—इसमें दो श्रुतस्कन्ध हैं। पहले में उन्नीस शिक्षाप्रद रोचक कथाएँ हैं और दूसरे में शिथिलाचार द्वारा होने वाले दोषों को बताने वाली कथाएँ हैं।

(७) उवासगदसाओ (उपासकदशांग)—इसमें भगवान् महावीर के दस मुख्य श्रावकों का वर्णन है जिनमें आनन्द और कामदेव का मुख्य स्थान है।

(८) अंतगउदसाओ (अंतकृतदशांग)—इसमें गजसुकुमाल, रानी पद्मावती, अर्जुन माली आदि नव्वे महापुरुषों का चरित्र वर्णित किया गया है।

(९) अनुत्तरोववाह्यदसाओ (अनुत्तरोपपातिकदशांग)—इसमें अनुत्तर विमान में उत्पन्न होने वाले महापुरुषों का वर्णन है।

(१०) पण्हावागरणं (प्रश्न व्याकरण)—इसके दो भाग हैं—आस्रवद्वार और संवरद्वार आस्रव द्वार में हिंसा, असत्य, स्तेय, अब्रह्म और परिग्रह का स्वरूप समझाया गया है। संवर द्वार में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का तथा उनसे प्राप्त होने वाले फल का वर्णन है।

(११) विवागसुयं (विपाक सूत्र)—इसके भी दो भाग हैं—प्रथम श्रुतस्कन्ध और द्वितीय श्रुतस्कन्ध। प्रथम श्रुतस्कन्ध में दस जीवों का वर्णन है जिन्होंने असीम पाप कर महान् कष्ट उठाये। दूसरे श्रुतस्कन्ध में उन दस जीवों का वर्णन है जिन्होंने सुपात्र को दान देकर सुख प्राप्त किया।

(ख) बारह उपांग (बारस उवंगाइं)

(१) ओववाइय सुत्तं (औपपत्तिक सूत्र)—इसमें चम्पा नगरी, राजा कोणिक, रानी धारिणी, ज्ञातपुत्र भगवान् महावीर का समवसारण; तप के १२ भेद; कोणिक के श्री महावीर के पास आगमन और स्तवन, असुरादि देवों और सिद्धों आदि का वर्णन है।

(२) रायपसेणइयं (राजप्रश्नीय)—इसमें सूर्यायदेव, गौतम स्वामी आदि के साथ महावीर स्वामी का वार्तालाप है।

(३) जीवाजीवाभिगमे (जीवाजीवाभिगम)—इसमें जीव-अजीव का विस्तृत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वरूप, विजयदेव का वर्णन और छप्पन अन्तरद्वीपादि का उल्लेख है।

(४) **पण्णवणासुत्तं (प्रज्ञापनासूत्रम्)**—इसमें जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष का निरूपण है। इसके अतिरिक्त इसमें समाधि लोकस्वरूप आदि का भी वर्णन है। इसमें ३६ पद अथवा प्रकरण हैं।

(५) **जंबूद्दीवपण्णत्ती (जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति)**—इसमें जंबूद्वीप का विस्तृत वर्णन है। कालचक्र, ऋषभदेव और भरत चक्रवर्ती के जीवन चरित्र हैं। विंटर-निट्ज़ के अनुसार यह भूगोलविषयक ग्रन्थ है।

(६-७) **चंदपण्णत्ती और सूरियपण्णत्ती (चंद्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति)**—इनमें चन्द्र और सूर्य आदि ज्योतिषचक्र का निरूपण है। इनमें सूर्य और चन्द्रमा के भ्रमण, प्रकाश्य क्षेत्र परिमाण, प्रकाश संस्थान, संवत्सरों का आदि अन्त, चन्द्रमा की वृद्धि-अपवृद्धि, ज्योत्स्ना प्रमाण, ज्योत्स्ना लक्षण, सूर्य चन्द्रमा आदि की दूरी, योग स्वरूप आदि का वर्णन है। विंटर-निट्ज़ के अनुसार ये दोनों ग्रन्थ खगोल विषयक हैं।

(८) **णिरियावलियाओ (निरियावलिका)**—इसमें श्रेणिक राजा भंभसार (बौद्ध साहित्य में बिंबिसार) के (कोणिक अजातशत्रु) द्वारा वध, काल-कुमारादि के अपने नाना वैशाली नरेश चेटक के साथ युद्ध और मरण, उनके नरक में जाने और भविष्य में मोक्ष प्राप्ति आदि का वर्णन है।

(९) **कप्पवडिंसियाओ (कल्पावतंसिका)**—इसमें दस अध्ययन (अध्याय) हैं जिनमें श्रेणिक दीक्षा ग्रहण करने, देवगति की उपलब्धि तथा भविष्य में मोक्ष प्राप्ति आदि का वर्णन है।

(१०) **पुप्फियाओ (पुष्पिका)**—इसमें दस देवों और देवियों के महावीर स्वामी की वन्दना के लिए आने, गौतम स्वामी द्वारा पूछने पर उनके पूर्व-जन्मों के वृत्तान्त बताने का वर्णन है। वे दस देव और देवियाँ हैं—चन्द्र, सूर्य, महाशुक्र, बहुपुत्तिया, पूर्णभद्र, मणिभद्र, बल, शिव और अनादित।

(११) **पुप्फचूलियाओ (पुष्पचूलिका)**—इसमें भी दस अध्ययन हैं और श्री, ह्री आदि दस देवियों के पूर्वजन्म का वर्णन है।

(१२) **वण्हिदसाओ (वृष्णिदशा)**—इसमें वृष्णिवंश के बलभद्र के बारह पुत्रों निषढकुमार आदि के भगवान् अरिष्टिनेमि से दीक्षाग्रहण करने और भविष्य में मोक्ष के अधिकारी बनने का निरूपण है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(ग) चार छेदसूत्र (चउछेयसुत्ताइं)

(१) **ववहारो (व्यवहार सूत्र)**—इसमें दस (उद्देसओ) उद्देशक हैं। पहले में आलोचना (Confession) विधि बताई गई है। दूसरे में सहधर्मी के दूषित होने पर साधु के कर्तव्य लिखे गये हैं। तीसरे में आचार्य और उपाध्याय के गुणों का उल्लेख किया गया है। चौथे में यह बताया गया है कि चतुर्मास और विहारकाल में आचार्य आदि को अपने साथ कितने साधु रखने चाहियें। पांचवें में चौथे के अनुसार ही प्रवर्तनी के लिए विधान बताये गये हैं। छटे में भिक्षा, शौचभूमि तथा स्खलनाओं के लिए प्रायश्चित बताये गये हैं। सातवें में साध्वियों के लिए नियमों, स्वाध्याय, पदवी दान तथा विशेष अवस्थाओं में गृहस्थ-प्रवेश आदि का उल्लेख है। आठवें में गृहस्थ के लिए अपेक्षित मकान, पीठफलक, पात्रों, भोजन के परिमाण आदि का विवरण है। नवमें में मकान देने, मकान को उपयोग में लाने अथवा न लाने, भिक्षु प्रतिमा के आराधन की विधि आदि के सम्बन्ध में बताया गया है। दसवें में दो प्रकार की प्रतिमा (अभिग्रह); दो प्रकार के परिषह; पाँच प्रकार के व्यवहार; चार प्रकार के साधु पुरुषों; आचार्य और शिष्य, स्थविर और शिष्य की तीन प्रकार की भूमिकाओं आदि का वर्णन है।

(२) **बिहक्कप्पसुत्तं (बृहत्कल्पसूत्र)**—इसमें छः उद्देसओ (उद्देशक) हैं और मुख्यतया साधु-साध्वियों के निर्धारित आचार-व्यवहार का तथा साधना के लिए अपेक्षित स्थान, वस्त्रों पात्रों आदि का वर्णन है। विविध दोषों के लिए प्रायश्चित भी बताये गये हैं।

(३) **णिसीहसुत्तं (निशीथ सूत्र)**—इसमें बीस उद्देशक हैं। १९ उद्देशकों में गुरुमासिक, लघुमासिक, लघुचातुर्मासिक और गुरुचातुर्मासिक प्रायश्चित्तों का निरूपण है और बीसवें उद्देशक में उनकी विधि बताई गई है। एक प्रकार से निशीथसूत्र जैनधर्म के नियमों का कोष अथवा दण्ड-संग्रह है।

(४) **दसासुयक्खंधो (दशाश्रुतस्कंध)**—इसमें दस अध्ययन अथवा अध्याय हैं और विविध प्रकार के दोषों, आचार्य की सम्पदाओं, शिष्यों के लिए चार प्रकार की विनय प्रवृत्ति, चित्त समाधि, श्रावकों और साधुओं की प्रतिमाओं आदि का वर्णन है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(घ) चार मूल सूत्र (चत्तारि मूल सुत्ताइं)

(१) **दसवेयालियसुत्तं (दशवैकालिक)**—इसमें दस अध्ययन और दो चूलिकाएं हैं जिनमें क्रमशः धर्म की प्रशंसा और साधु की भ्रमर-जीवन के साथ तुलना; चित्तस्थिरीकरण के उपाय; साधु के ५२ अनाचीर्ण; षड्जीव-निकाय का स्वरूप; भिक्षाविधि; भिक्षाकाल; साधु के १८ कल्प; वचनशुद्धि; साधु के आचार; विनय का स्वरूप; तप, आचार और समाधि; भिक्षु के गुण; संयम के लिए अपेक्षित बातें; साधुओं के आचार-व्यवहार; मोक्षप्राप्ति के उपाय आदि बताये गये हैं।

(२) **उत्तरज्झयणसुत्तं (उत्तराध्ययन सूत्र)**—जैन लोग इस सूत्र का अत्य-धिक पाठ करते हैं। इसमें छत्तीस अध्ययन (अज्झयणं) हैं जिनमें क्रमशः विनय; परिषहों को सहन करने का उपदेश; मनुष्यत्व, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम; जीवन की क्षणभंगुरता और प्रमाद-अप्रमाद का स्वरूप; अकाम मरण और सकाम मरण; साधु पुरुषों का आचार; कामी पुरुषों की बकरे के साथ तुलना; लोभ, तृष्णा आदि दुर्गुणों के त्याग का उपदेश; नेमिराज की दीक्षा और इन्द्र के साथ प्रश्नोत्तर; मानवजीवन की नश्वरता, समयमात्र का भी प्रभाद न करने की शिक्षा; शिक्षा-अशिक्षा, विनय-अविनय आदि की उपमाएँ; हरिकेशीबल मुनि का चरित्र, तप की महत्ता, जातिवाद का खण्डन, भावयज्ञ और आध्या-त्मिक स्नान का स्वरूप; चित्त संभूति और ब्रह्मदत्त की कथा; छः जीवों के पूर्वजन्म की कथा, इषुकार राजा और कमलावती रानी का वैराग्य और दीक्षाग्रहण; भिक्षु के लक्षण और गुण; ब्रह्मचर्य के दस असमाधि स्थान; पाप श्रमण का स्वरूप; संयति राजा का गर्दभालि मुनि से दीक्षा-ग्रहण; राजकुमार मृगापुत्र का संयम ग्रहण और मोक्ष-प्राप्ति; श्रेणिक नरेश का अनाथी मुनि से धर्म में दृढ़ श्रद्धा प्राप्त करना; वध्य चोर को देख कर समुद्रपाल की संवेद प्राप्ति, दीक्षाग्रहण और मोक्षप्राप्ति; अरिष्टनेमि का दीक्षाग्रहण और सती राजीमती के उपदेश से रथनेमि की संयम में स्थिरता और मोक्षप्राप्ति; मुनि केशी-कुमार और गौतम स्वामी का संवाद तथा केशीकुमार द्वारा महावीर स्वामी के पांच महाव्रतों की स्वीकृति; समितियों और गुप्तियों का वर्णन; जयघोष का चरित्र, ब्राह्मण के यथार्थ लक्षण; सामाचारी और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साधु की दिन रात्रिचर्या; गर्गाचार्य द्वारा अविनीत शिष्यों का त्याग; मोक्षमार्ग के उपाय; सम्यक्त्व पराक्रम; बाह्य और आभ्यन्तर तप; चरण विधि; प्रमाद स्थान और उनसे बचने के उपाय; आठ कर्म; छहों लेश्याओं के नाम, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, परिणाम, लक्षण आदि; साधु के गुण; जीव और अजीव का भेद आदि प्रतिपादित किये गये हैं।

(३) **पंदीसुत्तं (नन्दीसूत्र)**—इसमें संघ-स्तुति, तीर्थङ्कर गणधरादि, परिषद्, पांच प्रकार के ज्ञान के स्वरूप का वर्णन है।

(४) **अणुओगदारसुत्तं (अनुयोग द्वार सूत्र)**—इसमें आवश्यक, श्रुतस्कन्ध के निक्षेप, उपक्रम, आनुपूर्वी, दश नाम, प्रमाण, अनुगम, नय आदि का उल्लेख है। इसमें सात स्वरों, आठ विभक्तियों और नौ रसों का भी वर्णन है।

(ङ) आवस्सयसुत्तं (आवश्यक सूत्र)

इसमें सामयिक, चतुर्विंशति स्तव, वंदनक, प्रतिक्रमण, कार्योत्सर्ग और प्रत्याख्यान नामक आवश्यकों का निरूपण है।

इनके अतिरिक्त तीन परिशिष्ट भी हैं—(१) दसासुयक्खं घस्स अट्ठम-मज्झयणं अहवा कप्पसुत्तं (दशाश्रुत स्कंधस्याष्टममध्यमम् अथवा कल्पसूत्रम्), (२) सावयावस्सए सामाइयसुत्तं (श्रावकावश्मके सामायिक सूत्रम्) और (३) सावयावस्सए पडिक्कमण सुत्तं (श्रावकावश्यके प्रतिक्रमणसूत्रम्)।

सूत्रागम (सुत्तागमे) के इस संक्षिप्त परिचय से ज्ञात होता है कि ग्यारह अंगों, बारह उपांगों में, चार छेदसूत्रों, चार मूल सूत्रों और आवश्यक में जैन तीर्थङ्करों एवं अन्य जैन आचार्यों, गणधरों एवं जैनमुनियों के उपदेश हैं और उनकी पुष्टि के लिए तत्कालीन राजाओं और रानियों के, पूर्वकालीन ऐतिहासिक एवं पौराणिक धर्मावलम्बियों के तथा महावीर स्वामी एवं अन्य जैनाचार्यों से दीक्षा ग्रहण करने वाले व्यक्तियों के उदाहरण और जीवन वृत्तान्त हैं। इन सभी सूत्रों अथवा आगमों की रचना महावीर स्वामी के बाद हुई। श्री पुप्फभिक्खू (पुष्पभिक्षु) द्वारा सम्पादित सुत्तागमे (दो भाग) की भूमिका में कुछ सूत्रागमों के रचयिताओं के नामों का निर्देश किया गया है। बारह अंगों की रचना महावीर स्वामी के पश्चात् उनके पांचवें गणधर श्री सुधर्मा स्वामी ने अर्धमागधी में की। पण्णवणासुत्तं (प्रज्ञापनासूत्र) का संकलन महावीर स्वामी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के निर्वाण के ३३५ वर्ष पश्चात् और श्री सुधर्मा स्वामी से तेईसवें पट्टस्थित श्री श्यामाचार्य ने किया। ववहारो (व्यवहार), बिहक्कप्पसुत्तं (बृहत्कल्प) और दसासुयक्खंधो (दशाश्रुतस्कंध) की रचना आचार्य भद्रबाहु ने की। दसवेयालियसुत्तं (दशवैकालिक सूत्र) की रचना श्री शय्यंभवाचार्य ने अपने शिष्य (पुत्र) मनाक्प्रिय के लिए पूर्व रचित अंगों और उपांगों से पाठ उद्धृत करके की। अणुओगदारसुत्तं (अनुयोग द्वार सूत्र) की रचना रक्षिताचार्य ने की।

दिगम्बरों का कहना है कि द्वादश अङ्ग विच्छिन्न हो चुके हैं और आचार्य सुधर्मा स्वामी की रचनाएं उपलब्ध नहीं हैं। परन्तु श्वेताम्बर केवल बारहवें अंग 'दृष्टिवाद' का विच्छेद हुआ है, शेष सभी सूत्र यथावत् चले आ रहे हैं। हां, उनमें जो प्रक्षेप और भाषाभेद हो गया है उससे इन्कार नहीं किया जा सकता। इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि सूत्रों की रचना उस समय की जनसाधारण की बोलचाल की भाषा में की गई थी, इसलिए जैनमुनि और प्रचारक लोगों को समझाने के लिए लोकभाषा में यथावश्यक परिवर्तन कर लेते थे। दूसरा कारण यह था कि महावीर स्वामी के निर्वाण के लगभग दो सौ वर्ष पश्चात् ईसा पूर्व ३१० में चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्य काल में मगध में बारह वर्षों तक भयानक दुर्भिक्ष पड़ा था। तब जैन मुनियों को संयम निभाने के लिए दक्षिण भारत में जाना पड़ा और सूत्रों का परावर्तन न कर सकने के कारण वे उन्हें भूल से गये। उसके बाद पाटलीपुत्र में संघ एकत्र हुआ और जिसे जितना याद था उसे सुनकर ग्यारह अंगों का फिर से संकलन किया गया। सूत्रों की अर्धमागधी पर जो महाराष्ट्री का प्रभाव दिखाई देता है उसका कारण भी यही है। सम्भवतः श्री सुधर्मा स्वामी द्वारा रचित अंगों के विषय-संकलन-क्रम पर भी प्रभाव पड़ा हो और उसमें कुछ अन्तर पड़ गया हो। पाटलीपुत्र संघ से लगभग आठ सौ वर्ष पश्चात् थोड़े-थोड़े अन्तर से मथुरा और वल्लभी में आगमों को पुस्तकारूढ़ करने के लिए जैनमुनियों के सम्मेलन हुए। वल्लभी में सम्मेलन वीर संवत् ९८० तदनुसार विक्रमी संवत् ५११ तदनुसार ईसवी सन् ४५४ में हुआ। उसके अध्यक्ष आचार्य देवद्धिगणि क्षमा श्रमण थे। उस सम्मेलन में एकत्रित मुनियों से, जिसे जितना याद था, सुनकर पुस्तक रूप में संकलन तैयार किया गया। यही कारण है कि बहुत से जैनाचार्य वर्तमान उपलब्ध आगमों का संकलयिता देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण को ही स्वीकार करते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राचीन और मध्यकालीन जैनमुनियों ने सूत्रों (आगमों) दिव्य ग्रन्थ अथवा ईश्वरीय ग्रन्थ होने का दावा नहीं किया। परन्तु उन्होंने अर्धमागधी भाषा को जिसमें महावीर स्वामी उपदेश करते थे दैवी भाषा स्वीकार किया है, और उसे आर्यभाषा कहा है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने 'प्राकृत व्याकरण' में उसे 'आर्य प्राकृत' कह कर पुकारा है। उनके अनुसार अर्धमागधी, ऋषिभाषिता और आर्य तीनों एक ही बात है। जैनाचार्यों का विश्वास है कि जब ज्ञातपुत्र महावीर स्वामी अर्धमागधी भाषा में उपदेश करते थे तो उनकी भाषा सभी जीवों की अपनी-अपनी भाषा में परिणत होती थी। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि महावीर स्वामी द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली अर्धमागधी प्राकृत को सभी प्राणी, मनुष्य और पशु-पक्षी समझते थे। परन्तु जैसा कि पहले संकेत किया गया है, आगमों में प्रयुक्त अर्धमागधी प्रकृत पर महाराष्ट्री प्राकृत का प्रभाव है। डॉक्टर जैकोबी ने तो उसे अर्धमागधी न मानकर 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है। आचार्य हेमचन्द्र ने महाराष्ट्री प्राकृत को आर्ष प्राकृत अर्धमागधी का अर्वाचीन रूप बताया है। इससे यह समझा जा सकता है कि अर्धमागधी पर महाराष्ट्री का प्रभाव है।

जैन-आगमों के सिद्धान्त

(१) जगत् अनादि और अनन्त है। यह अपने आप चलता रहा है, चल रहा है और चलता रहेगा।[1]

(२) ईश्वर संसार का कर्ता अथवा हर्ता नहीं है। समस्त कर्म क्षय हो जाने पर आत्मा ही ईश्वर अवस्था को प्राप्त हो जाता है। **"परिक्षीणसकल धर्मा ईश्वरः"**। महावीर स्वामी का कहना है—**"अप्पा सो परमप्पा"**।

(३) संसार में जो कुछ भी है वह द्रव्य है और उसके दो भेद हैं—जीव और अजीव (चेतन और जड़)। जीव अनादि और अनन्त है। वह रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि से रहित है, परन्तु वह ही कर्म का कर्ता और फल का भोक्ता है प्रत्येक जीव स्वतन्त्र है और देहबन्धन से छूटने पर ईश्वर बन जाता है। श्री महावीर स्वामी कहते हैं—**"अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहान य"** अर्थात् आत्मा सुख और दुःख का स्वयं कर्ता है।

---

१. **सएहिं परियाएहिं, लोयं बूया कडेति य।**
तत्तं ते ण विजाणंति, ण विणासी कया इव॥ (सूत्रकृतांग १-१-३-९)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(४) जीव के साथ कर्मों का संयोग रहने से उसे बार-बार शरीर धारण करना पड़ता है। चेतनस्वरूप होने के कारण जीव की स्वाभाविक गति उन्नति करने की है। वह अपने शुद्ध स्वरूप को जान कर ही मुक्ति का उपाय कर सकता है। मुक्ति का मुख्य साधन कैवल्य ज्ञान है। कैवल्य का अर्थ है जीव का अपने स्वरूप में स्थित होना। इसके तीन साधन हैं—**सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र।** जन धर्म इन्हें रत्नत्रय कहता है। इनके द्वारा जीव कर्मबन्धन से मुक्त होकर अपने स्वरूप में स्थिर होता है। मुक्त जीव जिन या अर्हत् कहलाता है।

(५) अजीव (जड़) के पांच भेद हैं—काल, आकाश, धर्म, अधर्म और पुद्गल। काल समय का नाम है। आकाश में सब अवकाश पाते हैं। धर्म सर्वश्रेष्ठ मंगल है। (**धम्मो मंगलमुक्किट्ठं**) वह सब प्रकार की गति का कारण है। वह स्वयं गतिहीन है, परन्तु उसके बिना किसी पदार्थ में गति नहीं हो सकती। अधर्म धर्म का प्रतिलोम है इससे सब पदार्थों में स्थिरता आती है। पुद्गल परमाणु को कहते हैं। वे जड़ हैं परन्तु पृथ्वी, जल, वायु आदि की सृष्टि उन्हीं (पुद्गलों) से ही होती है। कर्मों का सूक्ष्म रूप पुद्गल है। अपने शुद्ध स्वरूप में पुद्गल अनादि, अनन्त, नित्य और अमूर्त हैं। पौद्गलिक भार के टूट जाने पर ही जीव पुनः अपने स्वरूप में अवस्थित हो सकता है और कैवल्य को प्राप्त कर सकता है।

(६) जीव और अजीव की छः विशेषताएं हैं—(१) आस्रव (मन, वचन तथा शरीर का व्यापार और शुभाशुभ बन्धन का हेतु), (२) बन्धसंवर (आस्रव का प्रतियोगी), (३) निर्जरा (धर्मबन्धन का क्षय), (४) मोक्ष (जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति), (५) पाप (चेतना का लोप करने वाले कर्म जो दुःख के कारण हैं) और (६) पुण्य (सांसारिक सुख के साधन भूत कर्म)।

(७) ज्ञान पांच प्रकार का होता है—मति, श्रुति, अवधि, मनः पर्यव और केवल। इनमें से केवल ज्ञान मुक्त होने वाले जीवों को ही होता है। उसे पाने के लिए संसार और उसके सारे कर्मों का परित्याग आवश्यक है।

(८) सांसारिक कर्मों और बन्धनों से छूटने के लिए पांच अणुव्रतों का पालन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करना आवश्यक है। पांच अणुव्रत है—(१) अहिंसा, (२) सत्य, (३) अपरिग्रह, (४) अस्तेय और (५) ब्रह्मचर्य। अहिंसा सबसे अधिक आवश्यक धर्म है। श्री महावीर स्वामी धर्म का अर्थ ही अहिंसा मानते हैं। उनका कहना है—**"धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा, संयमो तवो"**।[1] अहिंसा तीन प्रकार की होती है—शारीरिक, वाचिक और मानसिक। मन से दूसरों का अनिष्टचिन्तन करना भी हिंसा है। हिंसा चार प्रकार की हो सकती है, जैसे आनुषंगिक, व्यावसायिक, आत्म-रक्षणात्मक और इच्छापूर्वक। संन्यासियों को सब प्रकार की हिंसा से दूर रहना चाहिये और गृहस्थियों को इच्छापूर्वक हिंसा से अलग रहना चाहिये। अहिंसा के बाद दूसरा मुख्य तत्त्व सत्व है। श्री महावीर स्वामी के कथनानुसार "सत्य ही लोक में सारभूत है जो समुद्र से भी अधिक गम्भीर है। जो विद्वान् सत्य मार्ग पर चलता है, वह संसार-सागर को पार कर जाता है। सत्य में दृढ़ रहने वाला सब पापों को नष्ट कर डालता है"।[2] तीसरा मुख्य तत्व है अपरिग्रह, 'क्योंकि परिग्रह से बढ़ कर और कोई दूसरा बन्धन नहीं है। महावीर स्वामी का कहना है —**"नत्थि एरिसो पासो, पडिबंधो अत्थि सब्ब जीवाणं।"** चौथा और पाँचवाँ तत्त्व हैं अस्तेय और ब्रह्मचर्य। महावीर स्वामी का कहना है कि "अब्रह्मचर्य अधर्म का मूल है, महादोषों का स्थान है" **(मूलमेयमहम्मस्स महादोस समुस्सयं)**।

(९) जैनधर्म कर्मप्रधान धर्म है और **'ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः'** कह कर ज्ञान और क्रिया दोनों को मोक्ष का साधन मानता है। **"जे कम्मे सूरा ते धम्मे सूरा" (ये कर्मणि शूरास्ते धर्मे शूराः)** कह कर जैनागमों में कर्मशूरों को ही धर्मशूर बताया गया है। महावीर स्वामी मन की जीत को ही वास्तविक जीत मानते हैं और बाहरी युद्धों का निषेध करते हैं। **"अप्पणामेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ। अप्पाणमेव अप्पाणं,**

---

१. दशवैकालिक १-१।

२. **"सच्चं लोगम्मि सारभूयं, गभीरतटं महासमुद्दाओ"** (प्रश्नव्याकरण)
"सच्चस्स आसाए उवट्ठिए मेहावी मारं तरइ' (आचारांग, ३-२-१२)
"सच्चम्मि धिइं धुव्विहा, एत्थोवरए मेहावी सव्वं पावं झोसइ"
(आचारांग, ३-२-५)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जहत्ता सुहमेहए"। मन की जीत के लिए आत्म-दमन अत्यन्त आवश्यक है—"अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो। अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सि लोए परत्थ य।" आत्मदमन के लिए जैनधर्म व्रत, उपवास, तप आदि पर बहुत ज़ोर देता है।

(१०) जैनधर्म का दार्शनिक सिद्धान्त 'स्याद्वाद' कहलाता है। कुछ बौद्ध भी स्याद्वादी हैं। 'स्याद्वाद' को 'अनेधान्तवाद' अथवा 'अपेक्षावाद' भी कहा जाता है। 'स्याद्वाद' अथवा 'अनेकान्तवाद' का अभिप्राय है "एक ही पदार्थ में नित्यत्व और अनित्यत्व, सादृश्य और विरूपता, सत्त्व और असत्त्व आदि परस्पर विभिन्न धर्मों की सापेक्ष स्वीकृति"। इससे यह सिद्ध किया जाता है कि प्रत्येक कथन में आंशिक सत्य है और सम्पूर्ण सत्य को जानने के लिए सभी विभिन्न दृष्टिकोणों का अध्ययन आवश्यक है, सत्य के विभिन्न पहलुओं का समन्वय आवश्यक है"। जैनसूत्रों में लिखा है—"स्यादस्तिः, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति नास्ति, स्यादवक्तव्यः, यादस्ति अवक्तव्य, स्यान्नास्ति अवक्तव्यः, नास्ति अवक्तव्यः"। अर्थात् "कदाचित् वह है, कदाचित् वह नहीं है कदाचित् वह है और नहीं है, कदाचित् वह अकथनीय है, कदाचित् वह अकथनीय नहीं है, कदाचित् वह अकथनीय है औरनहीं है।"

'स्याद्वाद' 'सर्वास्तिवाद' और 'सर्वनास्तिवाद' के बीच सुन्दर समन्वय है। दार्शनिक क्षेत्र में महावीर स्वामी की यह महत्त्वपूर्ण देन है। परन्तु इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि महावीर स्वामी के विचारों पर वेदमन्त्रों, उपनिषदों, गीता, महाभारत आदि का प्रभाव है। कहीं-कहीं तो उनके वचन इन ग्रन्थों के भावानुवाद, छायानुवाद एवं शब्दानुवाद प्रतीत होते हैं। उदाहरणार्थ जैसे—

१—"मित्ती मे सव्वभूएसु।"	१—"मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।" (यजु० ३६।१८)
२—"तक्का जत्थ ण विज्जई, भई तत्थ ण गाहिया।"	२—"यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।" (तैत्तिरीयोपनिषद्)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३—"एगं जाणइ से सव्वं जाणइ ।"	३—"आत्मनि विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति ।"
४—"अप्पा सो परमप्पा ।"	४—"अयमात्मा ब्रह्म ।" (वृहदारण्यकोपनिषद्)
५—"अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।"	५—"उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानं नात्मानमवसादयेत् ।" (गीता ६।५)
६—"अप्पा मित्तममित्तं च, दुपठ्ठिय-सुपठ्ठओ ।"	६—"आत्मैवात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।" (गीता ६।५)
७—"परिणामे बंधो, परिणामे मोक्खो ।"	७—"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।" (गीता ६।५)
८—"सासए लोए दव्वट्ठा याए ।"	८—"प्रकृतिः पुरुषश्चैव, उभयैते शाश्वते मते ॥" (गीता६।५)
९—"सुत्तेसु यावि पडिबुद्धजीवी, नो वीससे पंडिय आसुपण्णे । घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं, भारंडपक्खीव चरेऽप्पमत्तो ।" (उत्तराध्ययनम्, अ० ४)	९—"या निशा सर्वभूतानां, तस्यां जागर्ति संयमी । यस्यां जाग्रति भूतानि, सा निशा पश्यतो मुनेः ।" (गीता २/६९)
१०—"सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो णत्थि किंचणं । मिहिलाए उज्झमाणीए, न मे उज्झइ किंचणं ॥" (उत्तराध्ययनम्, अ० ९)	१०—"ससुखं बत जीवामि, यस्य मे नास्ति किंचन । मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दह्यति किंचन ॥" (महाभारत शां०, अ० २६)
११—"पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह । पडिपुण्णं णालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ।" (उत्तराध्ययनम्, अ० ९)	११—"यत्पृथिव्यां व्रीहियवं हिरायं पशवः स्त्रियः । सर्वं तं नालमेकस्य तस्माद्विद्वाञ्छमं चरेत् ॥" (महाभारत अनु० अ० ९३)

इसी प्रकार के बीसियों पद उद्धृत किये जा सकते हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बुद्धमत (Buddhism)

जैसा कि पिछले प्रकरण में बताया जा चुका है, जैनमत के समान बौद्धमत का प्रवर्तन भी छटी-सातवीं शताब्दी ईसापूर्व तत्कालीन आडम्बरपूर्ण और पशुहिंसा-प्रधान याज्ञिक कर्मकाण्ड की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। इसके प्रवर्तक थे सिद्धार्थ गौतम बुद्ध, जो भगवान् बुद्ध कह कर पुकारे जाते हैं। भारतीय तत्त्वज्ञों और समाज सुधारकों में भगवान् बुद्ध का स्थान बहुत ऊँचा है। महावीर स्वामी के समान भगवान् बुद्ध का जन्म भी एक राजकीय परिवार में हुआ और उन्होंने भी समाज-सेवा तथा धर्म-प्रचार के लिए राजकीय जीवन का परित्याग करके संन्यास ग्रहण किया।

भगवान् गौतम बुद्ध का जन्म लुम्बिनी नामक स्थान पर ईसापूर्व ५६३ में हुआ।[1] उनके पिता कपिलवस्तु के शाक्यवंशीय राजा शुद्धोधन थे और उनकी माता मायादेवी अथवा महामाया थी जो कोलियवंश की राजकुमारी थी। उनका नाम सिद्धार्थ रखा गया। गौतम गोत्र में उत्पन्न होने के कारण उन्हें गौतम कहा जाता है। वे बचपन से ही गम्भीर और चिन्तनशील स्वभाव के थे। उनका विवाह यशोधरा नामक राजकुमारी के साथ हुआ और कुछ समय के पश्चात् उनके यहाँ राहुल नामक बेटा भी उत्पन्न हुआ। परन्तु पत्नी और पुत्र उनकी चिन्तनशीलता और वैराग्य भावना को कम न कर सके। अट्ठाईस वर्ष की आयु में उन्होंने एक रात चुपके से घर छोड़ दिया और संन्यास ग्रहण कर लिया। कुछ समय तक तपस्वियों और विद्वानों के पास रह कर शिक्षा ग्रहण की और फिर छः वर्ष तक कठोर तपस्या की। अन्त में वैशाख पूर्णमाशी की रात को उन्हें उद्बोधन हुआ और उन्होंने अपने आपको बुद्ध उद्घोषित किया। उनकी इस अद्भुत विजय के कारण उन्हें शाक्यसिंह, तथागत, मारविजयी, जिन आदि नामों से भी पुकारा जाता है। बुद्ध बनने के पश्चात् उन्होंने धर्मचक्र (धम्मचक्क) का प्रवर्तन आरम्भ किया और पैंतालीस वर्ष तक घूम-घूम कर

१. लंकावासी बौद्धों की परम्परा के अनुसार भगवान् बुद्ध का जन्म ६२४ ई० पू० में हुआ था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने मत का प्रचार करते रहे। अन्त में ४८३ पू० ई० में अस्सी वर्ष की अवस्था में कुसीनारा (कुशीनगर) में उनका देहान्त हो गया। बौद्ध उनके शरीर-त्याग को महापरिनिर्वाण कहते हैं। बुद्ध के जीवन-काल में ही मगध, कौशल, कौशाम्बी आदि राज्यों में बौद्धधर्म का प्रचार हो गया था और शाक्य, वज्जी, मल्ल आदि जातियों ने बौद्ध मत को स्वीकार कर लिया था।

महात्मा गौतम बुद्ध ने अपने सिद्धान्तों के प्रतिपादन के लिए स्वयं किसी ग्रन्थ की रचना नहीं की। उनके शिष्य उनके वचनों को कण्ठस्थ कर लेते थे। परन्तु उनके निर्वाण के पश्चात् बौद्ध संघ में उनकी शिक्षाओं के सम्बन्ध में विवाद खड़ा हो गया। इसलिए उस विवाद को दूर करने के लिए भगवान् बुद्ध के शिष्य महाकस्सप (महाकाश्यप) ने राजगृह के निकट सत्तपण्णी गुहा में बौद्ध सभा आमन्त्रित की जिसमें पाँच सौ प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। उस सभा में महात्मा बुद्ध के सिद्धान्तों और वचनों को संकलित करके लिपिबद्ध किया गया और उन्हें दो पिटकों (भागों) में विभक्त किया गया—(१) विनय पिटक और (२) धम्म पिटक। विनय पिटक में बौद्ध भिक्षुओं के लिए नियम थे और धम्मपिटक में बुद्ध के सिद्धान्त थे। इस सभा के लगभग सौ वर्ष पश्चात् ३८७ पू० ई० में वैशाली में दूसरी बौद्ध महासभा बुलाई गई, क्योंकि वैशाली के भिक्षुओं ने कुछ ऐसे नियम बना लिए थे जो विनयपिटक के विरुद्ध थे। इस सभा में समस्त संघों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए, परन्तु कुछ निर्णय न हो सका। बौद्ध भिक्षु दो दलों में विभक्त हो गये—थेर (स्थविर) और महासंघिक। जो विनयपिटक में विश्वास रखते थे वे थेर अथवा स्थविर कहलाने लगे और जो सुधारवादी थे वे महासंघिक कहलाने लगे। सम्राट् अशोक के शासनकाल में २५१ पू० ई० में महात्मा बुद्ध के निर्वाण के २३६ वर्ष पश्चात् मोग्गलीपुत्त तिस्स की अध्यक्षता में तीसरी बौद्ध सभा हुई। इस सभा में भगवान् बुद्ध के उपदेशों और व्याख्यानों को तीन भागों में विभक्त करके उसका नाम 'तेपिटक' (त्रिपिटक) रखा गया—(१) विनयपिटक, (२) सुत्तपिटक और (३) अभिधम्म पिटक। चौथी बौद्ध सभा सम्राट् कनिष्क के राज्यकाल में कश्मीर में वसुमित्र और अश्वघोष की अध्यक्षता में हुई। इसमें त्रिपिटक की टीकाओं की व्यवस्था की गई और पाली के स्थान पर संस्कृत को बौद्धधर्म की भाषा स्वीकार किया गया। इसी समय बौद्ध धर्म की दो शाखाएँ हो गईं—हीनयान और महायान। हीनयान ने त्रिपिटक और पाली भाषा को ही स्वीकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया, परन्तु महायान ने अनेक नवीन बातों का भी समावेश किया और संस्कृत को भाषा-माध्यम स्वीकार किया। हीनयान का भारत के अतिरिक्त लंका, यूनान, बर्मा, जावा, सुमात्रा आदि में प्रचार हुआ और महायान का चीन, जापान, मंगोलिया, कोरिया, पूर्वी तुर्किस्तान और उत्तर भारत में।

तिपिटक (त्रिपिटक)

जैसा कि पीछे बताया गया है, बौद्ध धर्म के सबसे अधिक मान्य धार्मिक ग्रन्थ तिपिटक अथवा त्रिपिटक हैं। इनकी रचना महात्मा बुद्ध ने स्वयं नहीं की, वरन् उनके निर्वाण के पश्चात् उनके शिष्य कस्सप (काश्यप) ने उनके (महात्मा बुद्ध के) उपदेशों और व्याख्यानों का संकलन करके उन्हें दो संग्रहों का रूप दिया—धम्म और विनय। महात्मा बुद्ध के निर्वाण के २३६ वर्ष पश्चात् २५१ पू० ई० में सम्राट् अशोक के शासन-काल में मोग्गलीपुत्त तिस्स की अध्यक्षता में हुई तीसरी बौद्ध सभा में कस्सप द्वारा संकलित द्विपिटक को तीन भागों में विभक्त करके त्रिपिटक का रूप दिया गया। वे तीन पिटक हैं—(१) विनय पिटक, (२) सुत्तपिटक और (३) अभिधम्म पिटक।

बुद्ध के वचनों का 'नवांग भाग' के रूप में भी विभाजन किया गया है—(१) सुत्त, (२) गेय्य, (३) वेय्याकरण, (४) गाथा, (५) उदान, (६) इतिवुत्तक, (७) जातक (८) अब्भुत धम्म और (९) वेदल्ल। कुछ आचार्यों ने और प्रकार से भी उनका विभाजन किया है। परन्तु तीन पिटकों का विभाजन ही अधिक सुगम, वैज्ञानिक और परम्परागत है। बौद्ध धर्मावलम्बी अधिकतर इसे ही प्रामाणिक मानते हैं।

१. विनय पिटक—इसमें भिक्षुओं और भिक्षुणियों सम्बन्धी नियम हैं जो बुद्ध-शासन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इस ग्रन्थ के चार भाग हैं—(१) सुत्त विभंग, (२) खन्धक, (३) परिवार और (४) पातिमोक्ख। पतिमोक्ख में जो नियम दिये गये हैं उन्हीं की व्याख्या सुत्तविभंग में है। सुत्तविभंग के दो भाग हैं— पाराजिक और पाचित्तिय। खन्धक के भी दो भाग हैं—महावग्ग और चुल्लवग्ग।

२. सुत्तपिटक—इसमें भगवान् बुद्ध के संवाद, कथानक, पद्यमय कथन और उपदेश हैं जो उन्होंने अनेक स्थानों पर दिये। इस पिटक की शैली की गम्भीरता की तुलना डॉक्टर रायज़ डेविड्स ने प्लैटो के संवादों से की है, परन्तु बुद्ध

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के संवादों की तुलना में प्लेटो के संवाद सर्वथा नगण्य प्रतीत होते हैं। सुत्त पिटक पाँच भागों में विभक्त है—(१) दीर्घ निकाय, (२) मज्झिम निकाय, (३) संयुत्त निकाय, (४) अंगुत्तर निकाय और (५) खुद्दक निकाय। दीर्घ निकाय तीन भागों या वर्गों (वग्ग) में विभक्त है जिसमें कुल मिला कर दीर्घाकार ३४ सुत्त (सूत्र) हैं। ये तीन वर्ग हैं—सीलक्खन्ध, महावग्ग वग्ग और पाथेय या पाटिक वग्ग। मज्झिम निकाय पन्द्रह वर्गों में विभक्त है और इसमें कुल १५२ सुत्त (सूत्र) हैं जो मध्यम लम्बाई के हैं। ये पन्द्रह वर्ग हैं—मूल परियाय वग्ग, सीहनाद वग्ग, ओपम्म वग्ग, महायमक वग्ग, चूल यमक वग्ग, भिक्खु वग्ग, परिब्बाजक वग्ग, राज वग्ग, ब्राह्मण वग्ग, देवदह वग्ग, अनुपद वग्ग, सुञ्जता वग्ग, विभंग वग्ग और सडायतन वग्ग। संयुत्त निकाय में पाँच वर्ग हैं और कुल मिला कर ५६ संयुत्त हैं। पाँच वर्ग हैं—सगाथ वग्ग, निदान वग्ग, खन्ध वग्ग, सडायतन वग्ग और महा वग्ग। अंगुत्तर निकाय विशेष रूप से संख्यात्मक है और ग्यारह निपातों में विभक्त है। खुद्दक (क्षुद्रक) निकाय सोलह भागों में विभक्त है—खुद्दक पाठ, धम्म पद, उदान, इतिवुत्तक, सुत्तनिपात, विमानवत्थु, पेतवत्थु, थेरगाथा, थेरी गाथा, जातक, महानिदेस, चुल्ल निदेस, पटिसम्भिदा मग्ग, अपदान, बुद्धवंस और चरिया पिटक।

३. अभिधम्म पिटक—इसमें भगवान् बुद्ध के दार्शनिक विचारों को संकलित किया गया है। दार्शनिक दृष्टि से यह पिटक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। विषय की दृष्टि से इसमें कुछ नवीन नहीं है। सुत्तपिटक में जो बातें कही गई हैं उन्हीं की तात्त्विक एवं नैतिक व्याख्या इनमें की गई है। सुत्तपिटक में व्यवहार वचन (वोहार वचन) प्रस्तुत किये गये हैं और अभिधम्म पिटक में परमार्थ वचन (परमत्थ वचन)। अभिधम्म पिटक सात भागों में विभक्त है—(१) धम्म संगणि, (२) विभंग, (३) धातु कथा, (४) पुग्गल पञ्ञत्ति (पुद्गल प्रज्ञप्ति) (५) कथावत्थु, (६) यमक और (७) पट्ठान।

विस्तार-भय से तीन पिटकों के इन अनेक वर्गों और निकायों का विषय-प्रतिपादन और विवेचन यहाँ नहीं किया जा सकता। हाँ, यह कहने में किसी को संकोच नहीं हो सकता कि यह वर्गीकरण बड़े प्रयत्न से और वैज्ञानिक ढंग पर किया गया है।

बुद्ध के सिद्धान्त

१. बुद्ध का धर्म आचार प्रधान धर्म है। उन्होंने इसे मध्यम मार्ग (मज्झिम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मग्ग) कहकर पुकारा है। आत्मा, परमात्मा, सृष्टि, मृत्यु और उसके बाद की स्थिति आदि विषयों को वे अव्याकृत (कथन का अविषय) कहते थे और इनके सम्बन्ध में वे चुप रहते थे। यदि कोई इनके विषय में प्रश्न करता था तो वे उत्तर नहीं देते थे। दीर्घ निकाय के पोठ्ठपादसुत्त में पोठ्ठपाद के यह पूछने पर कि 'किस लिए भन्ते ! भगवान् ने इसे (लोक और जीव की नित्यता-अनित्यता विषयक प्रश्न को) अव्याकृत कहा है ?" उन्होंने बतलाया कि "ये प्रश्न न तो अर्थयुक्त हैं, न धर्मयुक्त हैं, न आदि ब्रह्मचर्य के उपयुक्त हैं, न निर्वेद (वैराग्य) के लिए, न विराग के लिए, न निरोध के लिए, न उपशम के लिए"।

२. बुद्ध का दार्शनिक सिद्धान्त **प्रतीत्य समुत्पाद (परिच्चसमुप्पाद) और क्षणिकवाद** कहलाता है। इसी को उन्होंने धम्म (धर्म) कहकर पुकारा है। इससे उनका अभिप्राय यह था कि समस्त विश्व कार्य-कारण-श्रृंखला का परिणाम है। प्रत्येक घटना दूसरी घटना का परिणाम होती है। 'ख' वस्तु 'क' वस्तु के नष्ट (प्रतीत्य) हो जाने के पश्चात् उत्पन्न होती है, परन्तु वह 'ख' वस्तु भी क्षणिक है और उसके नष्ट हो जाने पर 'ग' की उत्पत्ति (समुत्पाद) होती है। 'क' की उत्पत्ति पर 'ख' की उत्पत्ति और 'ख' की उत्पत्ति पर 'ग' की उत्पत्ति निर्भर है। इसी प्रकार सभी वस्तुएँ सापेक्ष्य हैं और क्रमशः नष्ट और उत्पन्न होती रहती हैं। इस प्रकार कार्य-कारण-श्रृंखला का प्रवाह (परम्परा) चलता रहता है और यही जगत् है। अनादि काल से यही नाश-उत्पत्ति का क्रम चलता आ रहा है। यहाँ न तो कुछ नित्य है और न ही अविनाशी। विश्व में कोई भी पदार्थ स्थिर नहीं है। जीव, जड़ पदार्थों से भिन्न है, परन्तु वह नित्य चैतन्य नहीं है। आत्मा भी प्रतिक्षण बदलती रहती है। यही बुद्ध का क्षणिकवाद है। क्षणिकवाद के अनुसार आत्मा 'पंच स्कन्ध' (रूप, विज्ञान वेदना, संस्कार और संज्ञा) के संघात का नाम है, परन्तु वह स्थायी नहीं है।

३. 'प्रतीत्य समुत्पाद' के अनुसार जन्म-मरण की कार्य-कारण श्रृंखला पर विचार करते हुए बुद्ध ने चार आर्य सत्य स्वीकार किये हैं—(१) दुःख, (२) दुःख का समुदाय, (३) दुःख का निरोध और (४) दुःख-निरोध-गामी प्रतिपद।

४. अविद्या, संस्कार, विज्ञान, नाम रूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव, जाति (जन्म) और जरा-मरण-दुःख—ये बारह उपादान हैं जो क्रमशः एक दूसरे से उत्पन्न होते हैं। जैसे अविद्या से संस्कार, संस्कारों से विज्ञान, विज्ञान से नाम रूप आदि। अविद्या के नाश से क्रमशः इनका नाश हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकता है।

५. अविद्यादि निदानों और दुःख से छूटने के लिए आष्टाङ्गिक मार्ग को अपनाना चाहिये। अष्टाङ्ग-मार्ग हैं—

(क) **सम्यक् दृष्टि** (बुद्धि का सदुपयोग)
(ख) **सम्यक् संकल्प** (सत्कर्म करने का संकल्प)
(ग) **सम्यक् वाचा** (पवित्र वचन अर्थात् मिथ्याभाषण, चुगली, कटुभाषण आदि का परिहार)
(घ) **सम्यक् कर्मान्त** (उच्च उद्देश्य अर्थात् हिंसा, दुराग्रह, दुराचार आदि का परिहार)
(ङ) **सम्यक् आजीव** (शुद्ध और पवित्र आजीविका)
(च) **सम्यक् व्यायाम** (सद्व्यवहार अर्थात् शारीरिक तथा मानसिक दोषों का परिहार)
(छ) **सम्यक् स्मृति** (अच्छी बातों का स्मरण और उनमें विश्वास)
(ज) **सम्यक् समाधि** (शान्ति और एकाग्रता से अपने-आपको जानने का प्रयत्न)

अष्टाङ्ग मार्ग पर ठीक प्रकार से आचरण करने के लिए बौद्धमत में दीक्षित होने वालों को निम्नलिखित प्रतिज्ञाएँ करनी पड़ती थीं :—

(क) मैं हिंसा नहीं करूँगा।
(ख) मैं किसी प्रकार की चोरी न करूँगा।
(ग) मैं पवित्र जीवन व्यतीत करूँगा।
(घ) मैं मिथ्या भाषण नहीं करूँगा।
(ङ) मैं किसी मादक द्रव्य का सेवन नहीं करूँगा।

इनके अतिरिक्त भिक्षुओं को पाँच और प्रतिज्ञाएँ करनी पड़ती थीं—

(क) मैं केवल नियत समय पर भोजन करूँगा।
(ख) मैं नृत्य संगीत आदि से कोई प्रयोजन न रखूँगा।
(ग) मैं गद्दी पर नहीं सोऊँगा।
(घ) मैं आभूषणों का व्यवहार नहीं करूँगा।
(ङ) मैं धनसंचय नहीं करूँगा।

महावीर स्वामी के समान महात्मा गौतम बुद्ध भी वैदिक कर्मकाण्ड के विरुद्ध थे और वेद-साहित्य के प्रति उदासीन थे। परन्तु जैसे महावीर स्वामी के विचारों और वचनों पर वेद की उक्तियों, उपनिषदों, गीता आदि का स्पष्ट प्रभाव लक्षित होता है वैसे ही महात्मा बुद्ध के वचनों पर भी दिखाई देता है। निम्न-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिखित कुछ उदाहरणों से इस बात की पुष्टि हो सकती है :—

बुद्ध	उपनिषद्, गीता आदि
१. मनोपुब्बंगमा धम्मा मनोसेट्ठा मनोमया । मनसा चे पदुट्ठेन भासति वा करोति वा ।।	१. मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः । बन्धाय विषयासङ्गी मोक्षे निर्विषयं स्मृतम् ॥ (मैत्रायणी उप० ४/३४)

ततो नं दुक्खं अन्वेति चक्कं
वा वहतो पदम् ।
(धम्मपद, यमक वग्ग, १)

२—अञ्ञा हि लाभूपनिसा अञ्ञा निब्बानगामिनी ।
एवमेतं अभिञ्ञाय भिक्खु बुद्धस्स सावको ।।
सक्कारं नाभिनंदेय्य विवेकं अनुब्रूहये ।।
(धम्मपद, बालवग्गो, १६)

२—अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे नानार्थे पुरुषं सिनीतः ।
तयोः श्रेय आददानस्य साधु भवति हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते ।।
(कठ० २/१)

३—यस्सेन्द्रियानि समथं गतानि ।
अस्सा यथा सारथिना सुदन्ता । (धम्मपद, अर्हन्तवग्गो, ५)

३—यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा ।
तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथेः ।। (कठ० ३/६)

४—न जच्चा वसलो होदि न जच्चा होदि ब्रह्मणो ।
कम्मुणा वसलो होदि कम्मुना होदि ब्रह्मणो ।।
४—जन्मना जायते शूद्रः कर्मणा द्विव उच्यते । (मनुस्मृति)

५—न हि पापं कतं कम्मं सज्जु खीरं व मुच्चति ।
(धम्मपद, बाल वग्गो, १२)
५—नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव । (मनु० ४/१७२)

६—अनिक्कसावो कासावं यो वत्थं परिदहेस्सति ।
अपेतो दमसच्चेन न सो कासावमरहति ।। (धम्मपद, यमकवग्गो, ९)
६—अनिष्कषाये काषायमिहार्थमिति विद्धि तत् ।
धर्मध्वजानां मुण्डानां वृत्त्यर्थमिति ये मतिः ।। (महाभारत, १२/५६८)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

७—येसं संनिचयो नत्थि ये परिञ्ञाताभोजना
सुञ्ञतो अनिमित्तो च विमोखो येसं गोचरो,
आकासे वा सकुन्तानं गति तेसं दुरण्णया ॥
(धम्मपद, अर्हन्त वग्गो, ३)

७—शकुन्तानामिवाकाशे मत्स्यानामिव चोदके ।
यथा पदं न दृश्येत तथा ज्ञानविदां गतिः ॥
(महाभारत, १।१/६७६३)

८—सब्बे तसन्ति दण्डस्स सब्बेसं जीवितं पियम् ।
अत्तानं उपत्र कत्वा न हनेय्य न घातये ॥ (धम्मपद, दण्डवग्गो, २)

८—आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् । (महाभारत)
आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुनः ॥ (गीता, ६/३२)

९—सुखकामानि भूतानि यो दण्डेन विहिंसति ।
अत्तनो सुखं एसानो पेच्च सो न लभते सुखम् । (धम्मपद, दण्डवग्गो, ३)

९—अहिंसकानि भूतानि दण्डेन विनिहन्ति यः ।
आत्मनः सुखमिच्छन् स प्रेत्य नैव सुखी भवेत् ॥
(महाभारत, १३/५५६८)

१०—अभिवादनसीलस्स निच्चं वद्धापचायिनो ।
चत्तारो धम्मा वड्ढन्ति, आयु वण्णो सुखं बलम् ।
(धम्मपद, सहस्सवग्गो, १०)

१०—अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि संप्रवर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ॥ (मनु० २/१२१)

११—न तेन थेरो सो होति येनास्स फलितं सिरो ।
परिपक्को वयो तस्स मोघजिण्णोति वुच्चति ॥
(धम्मपद, धम्मट्ठवग्गो, ५)

११—न तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः ।
यो वै युवा प्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः ॥ (मनु० २/१३६)

१२—अत्ता हि अत्तनो नाथो को हि नाथो परो सिया ।
अत्तना हि सुदन्तेन नाथं लभति दुल्लभम् ॥
(धम्मपद, अत्तवग्गो, ४)

१२—उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैवा ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥ (गीता, ६/५)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१३—अत्तदत्थं परत्थेन बहुनापि न हापये ।
अत्थदत्थमभिञ्ञाय सदत्थपसुतो सिया ।। (धम्मपद, अत्तवग्गो, १०)

१३—श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।। (गीता, ३/३५)

तुलना के लिए ये कुछ पद केवल धम्मपद से लिये गये हैं। ऐसे ही दस-बारह और पद भी धम्मपद से ही तुलना के लिए जा सकते हैं। धम्मपद सुत्तपिटक के खुद्दकनिकाय का दूसरा वर्ग अथवा भाग है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि तीनों पिटकों में महात्मा बुद्ध के वचनों और सिद्धान्तों पर पूर्व ग्रन्थों का कितना अधिक प्रभाव है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

७

ताओ मत (Taoism)

ताओ मत (Taoism) चीन के दो प्रमुख मतों में से एक है। यह साधारणतया निवृत्तिवाद है जो भारतीय निवृत्तिवाद से भी कई गुना अधिक है। इसकी निवृत्तिपरायणता चरम सीमा तक पहुँची हुई है। इसका राजनैतिक पक्ष भी बड़ा विलक्षण है और अराजकतावाद से मिलता-जुलता है। इस मत के प्रवर्तक थे लाओशियस अथवा लाओ-त्से (Lao-tze)। डॉक्टर लैग्ग (Dr. Legge) का कहना है कि लाओ-त्से से पहले भी ताओ मत विद्यमान था और उसी के प्रचलित सिद्धान्तों को लाओ-त्से ने अपनी पुस्तक 'ताओ तेह किंग' में संकलित किया।"[1] परन्तु चीनी लोग ताओ मत का सम्बन्ध लाओ-त्से से ही जोड़ते हैं।

लाओ-त्से अथवा लाओशियस के जीवन का इतिहास पूर्णतया ज्ञात नहीं है। केवल इतना ही पता चलता है कि उनका जन्म ६०४ ई० पू० मध्यचीन के होनान नामक प्रान्त में हुआ। उनका परिवार निर्धन था परन्तु वे अपनी बौद्धिक प्रतिभा के बल पर चाओ के राजकीय पुस्तकालय के अध्यक्ष बन गये। लोग उन्हें बूढ़ा दार्शनिक कहने लगे। उनका नाम भी इसी अर्थ को सूचित करता है। 'लाओ' का अर्थ है बूढ़ा और 'त्से' अथवा 'शियस' का अर्थ है 'स्वामी'। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में उन्होंने तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों से पीड़ित होकर अपने नगर को छोड़ दिया और दूसरे राज्य में चले गये। ८७ वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हुई। उनके विचारों की प्रतिपादिका एक ही पुस्तक मिलती है, 'ताओ तेह किंग'।

ताओ तेह किंग

चीनी परम्परा के अनुसार लाओ-त्से अथवा लाओशियस ने एक ही पुस्तक 'ताओ तेह किंग' नामक लिखी। और किसी पुस्तक की रचना उन्होंने नहीं की। कुछ लोग तो 'ताओ तेह किंग' को भी उनकी रचना नहीं मानते और उसे उनकी

1. Glimpses of world Religions, p. 240

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मृत्यु के बाद उनके शिष्यों द्वारा लिखी गई बताते हैं। उनके लिए यह जीवन-पथ-प्रदर्शक है। चीनी किंवदन्ती के अनुसार जब लाओ-त्से अपने राज्य को छोड़कर दूसरे राज्य में जाने के लिए अपने राज्य (प्रान्त) की सीमा पर पहुँचे तो चुंगी-अधिकारी ने उन्हें रोक दिया और कहा कि "मैं आपको केवल इस शर्त पर जाने दूंगा कि आप जाने से पहले जनता के लाभ के लिए एक पुस्तक लिख दें जिसमें आपका ज्ञान लिपिबद्ध हो।" लाओ-त्से ने इस शर्त को मान लिया और वहीं उसके पास बैठ कर लगभग पाँच हज़ार शब्दों में अपनी पुस्तक 'ताओ तेह किंग' लिख कर दे दी जिसके दो भाग थे 'ताओ' और 'तेह'।

'ताओ तेह किंग' छोटी-सी पुस्तक है, परन्तु इसमें प्रतिपादित विचार अत्यन्त क्रान्तिकारी हैं और तत्कालीन विचित्र बौद्धिकता के उदाहरण हैं। इन विचारों में मानव रचित सभ्यता का विरोध किया गया है और प्रत्येक वस्तु को अकेला छोड़ देने का उपदेश दिया गया है। इनमें ज्ञान का समर्थन न करके अज्ञान का पक्ष लिया गया है और बताया गया है कि अज्ञान से ही आनन्द की प्राप्ति होती है। सच्चे सन्त को वाद-विवाद में नहीं पड़ना चाहिए, वरन् संतुष्ट रहना सीखना चाहिए और सरल जीवन व्यतीत करना चाहिए। वस्तुओं का संग्रह नहीं करना चाहिए। शासन और समाज-व्यवस्था के सम्बन्ध में भी लाओ-त्से के ऐसे ही विचार हैं। उनका मत है कि शासन को कुछ नहीं करना चाहिए और समाज-व्यवस्था के लिए नियम नहीं बनाने चाहियें, क्योंकि उनकी प्रतिक्रिया होती है।

सिद्धान्त

साधारणतया लाओ-त्से के निम्नलिखित सिद्धान्त हैं—

(१) शब्दों में कहा जा सकने वाला ताओ वास्तविक ताओ नहीं है। जिस वस्तु को नाम दिया जा सके, वह वास्तविक वस्तु नहीं होती। जिस तत्त्व से स्वर्ग और पृथ्वी का आरम्भ हुआ, वह अनाम है। जो अनाम-मय है, वह वस्तुओं की जननी है।

(२) स्वर्ग और पृथ्वी से पूर्व सृष्टि में एक ही तत्त्व था। वह शान्त और असीम था। वह स्वयम्भू और एक था। वह सर्वत्र व्यापक और स्थिर था। उसे संसार की माता कहना उचित है। मैं उसका नाम नहीं जानता, परन्तु उसे ताओ कह कर पुकारता हूँ। मनुष्य पर पृथ्वी की सत्ता है, पृथ्वी पर स्वर्ग की सत्ता है, स्वर्ग पर ताओ की सत्ता है और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ताओ अपनी सत्ता स्वयं है।

(३) ताओ अनन्त है, अनाम है, अनगढ़ा पत्थर है। जब पत्थर गढ़ा जाने लगता है, तब उसके नाम पड़ जाते हैं। अथवा छिपा हुआ रहने के कारण ताओ अनाम है।.....आरम्भ में ताओ ही था, ताओ ईश्वर के साथ था, ताओ ही ईश्वर था। ताओ की कोई सीमा नहीं है। जो कुछ है सब उसी से उत्पन्न होता है। पता नहीं वह स्वयं किस से उत्पन्न हुआ। वह ईश्वर से भी प्राचीन है।

(४) ताओ ही सृष्टि की उत्पत्ति का कारण है। ताओ से एक उत्पन्न हुआ, एक से दो और दो से तीन हुए। तीन से फिर सब की उत्पत्ति हुई। सभी वस्तुओं के पीछे अनाम और सामने नाम रहता है। उन्हें जो एक करता है, उसे प्राण कहते हैं।.....वह नुकीली वस्तुओं को गोल बनाता है। अव्यवस्था से व्यवस्था का निर्माण करता है। प्रकाशहीन वस्तुओं को देदीप्यमान करता है।.....सब कुछ पहले फूलता-फलता है और विकसित होता है। फिर वह अपने मूल कारण में जाकर विलीन हो जाता है।

(५) "दुःख के माध्यम से ही सुख का उदय होता है। सुख के भीतर दुःख छिपा रहता है।" "जिनके पास कम है, वे अधिक प्राप्त करेंगे, और जिनके पास अधिक है वे भटक जायेंगे।" "कोमलतम वस्तुएं संसार की कठोरतम वस्तुओं को झुका देती हैं।" "अपरिवर्तनीयता के नियम को अच्छी प्रकार समझ कर मनुष्य को अपना सारा कार्य-व्यवहार करना चाहिए।" जो यह जानता है कि मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ सिद्धियाँ सदैव अपर्याप्त हैं, वह अपना कार्य सफलतापूर्वक करता रहेगा। जो यह जानता है कि बड़ी से बड़ी प्राप्ति भी सदैव अपूर्ण रहती है वह उन्हें और भी प्राप्त करता रह सकेगा।

(६) जो कुछ नहीं करता, वही संसार को जीतता है। कुछ करके मनुष्य संसार को जीत नहीं सकता।

(७) संसार में जितने ही कानून और प्रतिबन्ध होंगे, जनता उतनी ही चोर होगी। जितने ज्यादा और पैने हथियार होंगे, उतना ही देश अशान्त होगा। शिल्पी जितने ही कुशल होंगे, उतने ही हानिकारक हथियार बनेंगे। इसलिए—

गुणीजनों का सम्मान मत करो, जनता सरल हो जाएगी। दुर्लभ वस्तुओं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का संग्रह मत करो, चोरी पर नियन्त्रण हो जाएगा। कामना उत्तेजित करने वाली चीज़ें लोगों को मत दिखाओ, उनका मन शान्त होगा।

(८) सन्त जनता का शासन उनका दिमाग खाली कर के, पेट को भरकर, इच्छाओं को दुर्बल बना कर, हड्डियों को ठोस बना कर तथा उसे ज्ञान और कामना से हीन करके करता है। वह सदा पीछे रहते हुए भी आगे रहता है। चुप रहते हुए भी वह बोलता है। अपने लिए कुछ न करते हुए भी उसके सब उद्देश्य पूर्ण हो जाते हैं।

(९) मनुष्य यदि दुनिया को सुधारने का काम अपने हाथ में ले तो मुझे लगता है कि उसका कभी अन्त आने वाला नहीं है। जो व्यक्ति उत्तम वस्तुओं को बनाने का विचार करता है, वह वास्तव में उन्हें नष्ट ही करता है। जो संग्रह करना चाहता है, वह गंवाता ही है। क्योंकि एक की उन्नति हो तो दूसरा पिछड़ जाएगा। एक गरम हो तो दूसरा ठंडा पड़ जाएगा। एक को आधार मिले तो दूसरा निराधार हो जाएगा।

(१०) ज्ञान को मिटा दो, दुःख नष्ट हो जाएगा। सन्तों को मिटा दो और उनकी वाणियों को जला दो, लोग सौ गुणा सुखी हो उठेंगे। सेवा और सच्चाई को मिटा दो, लोग माता-पिता और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे। सम्पत्ति को नष्ट कर दो, चोर-डाकू नहीं रहेंगे। सरलता और सादगी ही सर्वोत्तम आचरण है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८

कन्फ्यूशियस मत (confucianism)

कन्फ्यूशियस मत चीन का दूसरा प्रमुख मत है जिसका प्रवर्तन लगभग उसी समय हुआ जब कि ताओ मत का हुआ। लाओ-त्से और कन्फ्यूशियस दोनों समकालीन थे और चीनी परम्परा के अनुसार दोनों का एक बार मिलन भी हुआ था। उस समय कन्फ्यूशियस युवावस्था में थे और लाओ-त्से वृद्ध थे। कन्फ्यूशियस मत लाओ-त्से के ताओ मत के सर्वथा विपरीत था। ताओमत यदि निवृत्तिप्रधान था तो कन्फ्यूशियस मत प्रवृत्तिप्रधान और जीवन परक था। जीवन परकता और व्यवहारिकता उसकी मुख्य विशेषता थी। उसकी भारतीय दर्शन से तुलना करते हुए कहा जा सकता है कि यदि भारतीय दर्शन आध्यात्मिक है और ब्रह्म, जीव, जीवन सम्बन्धी और मरणोत्तर विषयों पर भी विचार करता है तो कन्फ्यूशियस दर्शन भौतिक है और मनुष्य, समाज तथा इसी जीवन से सम्बन्धित समस्याओं को हल करने का प्रयत्न करता है। परन्तु कन्फ़्यूशियस मत की भौतिकता निन्दनीय नहीं है, क्योंकि उसमें व्यक्तिगत नैतिकता और आचार पर भी ज़ोर दिया गया है। कुछ लोगों ने तो चीनी कन्फ़्यूशियस दर्शन को आचारवादी दर्शन कह कर पुकारा है।

कन्फ़्यूशियस के जन्म के साथ अनेक चमत्कारिक कथाएं जुड़ी हैं। परन्तु वे सू-लियांग-हो नामक वृद्ध के अवैध पुत्र थे और उनका जन्म ५५० अथवा ५५१ पू० ई० में लू नामक राज्य में हुआ था। उनका आरम्भिक जीवन कठिनाइयों में बीता, परन्तु अपने परिश्रम और अध्ययन शीलता के फलस्वरूप वे शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गये। उन्होंने क्रमशः अध्यापक, न्यायाधीश, मन्त्री और प्रधानमन्त्री के रूप में कार्य किया। लू के शासक से असन्तुष्ट होकर उन्होंने प्रधानमन्त्री का पद त्याग दिया और राज्य को भी जोड़ दिया। तब वे लगभग तेरह वर्ष दूसरे राज्यों में घूमते रहे। वे दिन उनके अत्यन्त कठिनाई के दिन थे, परन्तु उनके शिष्य उनके साथ ही रहे। उस शासक की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी की प्रार्थना पर कन्फ़्यूशियस अपने नगर में लौट आए। उस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समय उनकी आयु सतासठ वर्ष की थी। उसके बाद वे पांच वर्ष तक और जीते रहे तथा परामर्श और शिक्षा देने का कार्य करते रहे। ४७९ अथवा ४७८ पू० ई में ७२ वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई।

कन्फ़्यूशियस के जीवनी-लेखकों का कहना है कि वे (कन्फ़्यूशियस) अपने जीवन-काल में सफल नहीं हो सके। लोगों में उनके मत का प्रचार भी न हो सका। उन्होंने स्वयं किसी नये मत की स्थापना का दावा भी नहीं किया और न ही वे किसी नये मत की स्थापना करना ही चाहते थे। उनका कहना था कि "मैं प्राचीन श्रेष्ठ विचारों को दूसरों तक पहुँचाने वाला हूँ, उन का निर्माता नहीं हूँ।" (a transmitter not a maker)। परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी बहुत प्रसिद्धि हुई और उनके शिष्यों ने उनके मत का खूब प्रचार किया। उनके मत के प्रचारक शिष्यों में उनके पोते और शिष्य कुंग ची तथा शिष्य मैन्शियस (Mencius) का विशेष रूप ही उल्लेख किया जा सकता है। मैन्शियस का स्थितिकाल कन्फ़्यूशियस से लगभग दो सौ वर्ष पश्चात् ३७२:२८९ पू० ई० बताया जाता है।

लुन यू

कन्फ़्यूशियस की रचनाओं के सम्बन्ध में मतभेद है। कुछ लेखकों के अनुसार उन्होंने चार पुस्तकें लिखीं और कुछ के अनुसार पांच। उनकी पांच पुस्तकें बताई जाती हैं—(१) अभिलेख-पुस्तक (Book of Records), (२) गीत-पुस्तकें (Book of odes (३) परिवर्तन पुस्तक (Book of Changes), (४) बसन्त और पतझड़ इतिवृत्त (Spring and Autumn Annals) और (५) इतिहास की पुस्तक (Book of History)। इन में से प्रथम पुस्तक में पुराने धार्मिक शासकों और ईमानदार मन्त्रियों का रिकार्ड है। ये रिकार्ड ऐतिहासिक अभिलेखों के रूप में नहीं हैं। परन्तु इनमें तात्कालीन शासन की घटनाओं और सन्धियों आदि का उल्लेख है। पुस्तक का मुख्य उद्देश्य नैतिकता की शिक्षा देना है। कन्फ़्यूशियस जिन नैतिक सिद्धान्तों का समर्थक था वे पुस्तक में सर्वत्र देखे जा सकते हैं। इस पुस्तक का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग वह है जिसमें कन्फ़्यूशियस ने मानवीय समाज की व्यवस्था के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं। दूसरी पुस्तक में तीन सौ पांच गीत हैं। चीनी साहित्य में इस पुस्तक को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह पुस्तक चार भागों में विभक्त है—(१) लोक गीत, (२) 'या' सम्बन्धी छोटे गीत, (३) 'या' सम्बन्धी मुख्य गीत,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(४) स्तुतिगीत । इन गीतों का मुख्य विषय है जीवन और नैतिकता सम्बन्धी सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति । संक्षेप में इन गीतों का सार है "अपवित्र विचार मत रखो ।" तीसरी पुस्तक आध्यात्मिकता से सम्बन्ध रखती है और इसमें चीनी प्रतिभा का उत्कृष्ट संकलन है । कहा जाता है कि कन्फ़्यूशियस अपने जीवन के अन्तिम दिनों में अधिकतर इसी पुस्तक में व्यस्त रहता था । चौथी पुस्तक कन्फ़्यूशियस ने अपने जीवन के अन्तिम पांच वर्षों में लिखी थी । इसे राजकीय रचना कहा जाता है । इसमें ऐतिहासिक शैली में लू राज्य का इतिवृत्त है । परन्तु साहित्यिकता की दृष्टि से यह पुस्तक सामान्य स्तर की है, उत्कृष्ट रचना नहीं है । पांचवीं पुस्तक में चीन के आरम्भिक धर्मों और मतों की कहानियां और घटनाएं हैं । इन पांच पुस्तकों के अतिरिक्त छटी पुस्तक है 'लुन यू' जिसमें कन्फ़्यूशियस के उपदेशों, वचनों तथा संवादों का संग्रह है । यह संग्रह कन्फ़्यूशियस ने स्वयं नहीं तैयार किया था उन की मृत्यु के पश्चात् उन के शिष्यों ने तैयार किया । परन्तु जहां तक कन्फ़्यूशियस मतानुयायियों का सम्बन्ध है वे अन्य पांचों पुस्तकों की अपेक्षा 'लुन यू' को ही अपनी प्रमाणिक धार्मिक पुस्तक स्वीकार करते हैं ।

कुछ विवेचकों के अनुसार कन्फ़्यूशियस ने एक ही पुस्तक लिखी थी— 'चुन चिऊ किंग' अर्थात 'बसन्त और पतझड़ इतिवृत्त' । यही एक ऐसी पुस्तक है जिसे पूर्णतया कन्फ़्यूशियस की रचना माना जाता है । शेष सभी पुस्तकें उन के वचनों के आधार पर उनके नाम से उनके शिष्यों द्वारा रची गईं । परन्तु 'चुन चिऊ किंग' अर्थात् 'बसन्त और पतझड़ इतिवृत्त' अत्यन्त साधारण स्तर की पुस्तक है । ऐतिहासिक दृष्टि से भी इसका कुछ विशेष महत्व नहीं है । इसलिए 'लुन यू' ही उनके वचनों और उपदेशों का प्रामाणिक संग्रह है । इसे चीनी दर्शन के 'जू' स्कूल अर्थात् विद्वानों के स्कूल का प्रतिष्ठता माना जाता है । इसमें मानवता तथा सच्चाई पर अधिक बल दिया गया है ।

कन्फ्यूशियस के सिद्धान्त

१- कन्फ़्यूशियस दर्शन आचार प्रधान और मानवतावादी है । इसलिए वह व्यक्ति और समाज के सुधार, हित और मंगल को चाहता है । वह आदर्श समाज की स्थापना चाहता है । कन्फ़्यूशियस का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति के निश्चित कार्य होते हैं, जो उसे करने ही चाहियें । उसके लिए उन कार्यों का करना ही नैतिकता है और इसी भाव से उसे उन्हें करना भी चाहिये यदि कोई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यक्ति अपने लिए नियत कार्य तो करता है, परन्तु उसके कार्य के पीछे नैतिक भावना नहीं रहती तो उसका वह कार्य सच्चा नहीं माना जा सकता। उस कार्य को व्यक्तिगत लाभ के लिए किया गया माना जाएगा, जो अनुचित है।

२. कन्फ़्यूशियस माता-पिता की सेवा और आज्ञा-पालन पर तथा पूर्वजों की पूजा पर बहुत बल देता है। उसका कहना है कि पुत्र अपने माता-पिता को उनके जीवन-काल में सभी प्रकार का सुख दे, मर जाने पर विधिपूर्वक उनका संस्कार करे तथा तीन वर्ष तक शोक मनाए और तर्पण करे।

३. चीनी दर्शन में 'ताओ' शब्द का बहुत महत्त्व है। 'ताओ' का अर्थ है 'मार्ग'। लाओ-त्से ने इसे ब्रह्म का पर्याय माना, परन्तु कन्फ़्यूशियस ने इसे सदाचार का मार्ग स्वीकार किया। उसका कहना है कि जिस प्रकार स्वर्ग का मार्ग होता है, उसी प्रकार शासन और मनुष्यों के भी मार्ग होते हैं। शासक और जनता का सम्बन्ध पिता और पुत्र के सम्बन्ध के समान होता है। राजकीय सम्बन्ध सामाजिक सम्बन्ध ही होते हैं।

४. कन्फ़्यूशियस के दार्शनिक सिद्धान्तों को चार प्रतीक शब्दों द्वारा व्यक्त किया जाता है (१) **यी**, (२) **जेन**, (३) **ली** और (४) **चिह**।

(क) **यी**—'यी' का अर्थ है प्रत्येक कार्य को श्रेष्ठ ढंग से करना। श्रेष्ठ ढंग के लिए पारस्परिक आदान-प्रदान आवश्यक है। इसलिए दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें। दूसरों के प्रति वह व्यवहार मत करो जो तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे प्रति न करें। पिता और पुत्र में, पति और पत्नी, शासक और शासित में, रोगी और स्वस्थ में सदैव पारस्परिक सहानुभूति रहनी चाहिए।

(ख) **जेन**—**'जेन'** का अर्थ है 'मानवता'। इसके दो पक्ष हैं—**'चुंग'** और **'शू'**। **'चुंग'** का अर्थ है 'मनुष्य जो अपने लिए चाहे वही दूसरों के लिए भी करना। **'शू'** का अर्थ है 'मनुष्य जो अपने लिए न चाहे उसे दूसरों के लिए भी न करना'। कन्फ़्यूशियस के अनुसार सामाजिकता का मूल नियम है—'अपनी इच्छाओं के अनुसार दूसरों से व्यवहार करना'। इस नियम के अनुसार मनुष्य को केवल अपने आप को ही नहीं, दूसरों को भी जीवित रखना है; केवल अपने आपको ही नहीं, दूसरों को भी सुखी बनाना है। इसलिए जो व्यक्ति पिता को पुत्र के ढंग से, पुत्र को पिता के ढंग से, मित्र को मित्र के ढंग से और पड़ौसी को पड़ौसी के ढंग से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्यार करता है वही समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को ठीक ढंग से निभाता है।

इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य को अपने अधिकारों की मांग नहीं करनी चाहिए, बल्कि दूसरों के अधिकारों को मान्यता देनी चाहिए। ऐसा करने से शासक और शासित का संघर्ष समाप्त हो जाता है और मनुष्य कर्तव्यपरायण बन कर सज्जन बन जाता है। 'यी' और 'जेन' सिद्धान्त गीता के कर्मयोग से मिलते-जुलते हैं।

(ग) ली—'ली' का अर्थ है 'औचित्य' अर्थात् "अपने मानसिक भावों को उचित और ठीक ढंग से व्यक्त करना।" मनुष्य के भावों और विचारों की अभिव्यक्ति से उसके स्वभाव की अभिव्यक्ति होती है। इस लिए कन्फ़्यूशियस का कहना है कि भावाभिव्यक्ति उचित ढंग से होनी चाहिए और उसका आचार के साथ औचित्य रहना चाहिए। मानवीय सम्बन्धों की पद्धति के लिए यी, जेन और ली अत्यन्त आवश्यक हैं।

(घ) चिह—'चिह' का अर्थ है 'बुद्धि'। मनुष्य तब तक बुद्धिमान् नहीं हो सकता, जब तक वह प्रसन्न न हो और तब तक प्रसन्न नहीं हो सकता जब तक उसका जीवन में विश्वास न हो। इस प्रकार बुद्धि विश्वसनीय जीवन में रहती है और जीवन तभी विश्वसनीय बन सकता है जब मनुष्य यी, जेन और ली सिद्धान्तों का पालन करता है। इसलिए बुद्धिमान् वही है जो यी, जेन और ली सिद्धान्तों का पालन करता है और कर्तव्यपरायण होकर सज्जन बनने का मार्ग अपनाता है।

कन्फ़्यूशियस के इन सिद्धान्तों की गीता के कर्मयोग से और महात्मा बुद्ध के अष्टाङ्गमार्ग से तुलना की जा सकती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिन्तो मत (Shintoism)

शिन्तो[१]-मत (कामी-नो-मिची) जापान के प्रमुख तीन मतों में से है। वहां के प्रमुख तीन मत हैं—(१) शिन्तो-मत, (२) बुद्ध-मत (महायान शाखा) और (३) कन्फ़्यूशियस-मत। परन्तु इन तीनों मतों में से सब से प्राचीन शिंतो मत है। यह मत पौराणिक ढंग का है और देवी-देवताओं की कथाओं पर आधारित है। कुछ विवेचकों ने तो इसे जापानी देवी-देवताओं का धर्म अथवा मत कह कर पुकारा है। पौराणिक ढंग का होने पर भी यह मत अत्यन्त सरल और आचार-प्रधान है। सच्चाई, ईमानदारी, वीरता और देश प्रेम शिंतो-मतावलम्बियों की प्रमुख विशेषताएं हैं। कुछ विवेचकों का यह भी कहना है कि ये सद्गुण बौद्ध और कन्फ़्यूशियस मतों के प्रभाव का फल हैं। वैसे इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि जापान के वर्तमान तीन प्रमुख मत एक-दूसरे से प्रभावित हैं। एक प्रचलित कहावत के अनुसार जापान में प्रचलित तीनों मतों और नैतिक मार्गों की वृक्ष के मूल, तने और शाखाओं तथा फूलों और फलों से तुलना की जाती है। शिंतो-मत की तुलना मूल (जड़) से की जाती है, क्योंकि वह वहां की जनता के चरित्र और राष्ट्रीय परम्पराओं में मूल रूप से विद्यमान है। कन्फ़्यूशियस-मत तने और शाखाओं के समान है, क्योंकि वहां की क़ानूनी संस्थाएं और नैतिकता के नियम उसी पर आधारित हैं। बौद्ध-मत फूलों और फलों के समान है, क्योंकि धार्मिक भावनाएं और धार्मिक जीवन उसी पर निर्भर है। एक और कहावत के अनुसार प्रत्येक जापानी शिंतो बन कर जन्मता है, कन्फ़्यूशियस मतानुयायी बनकर जीता है और बौद्ध के रूप में मरता है। ऐसा इसलिए कहा जाता है, क्योंकि जन्म के समय वह अपने पैतृक देवी-देवताओं

१. 'शिन्तो' शब्द चीनी भाषा का शब्द है और इसका अर्थ है 'देवताओं का मार्ग'। यह 'शिन'—देवता और 'तो' (ताओ)—मार्ग शब्दों से मिलकर बनता है। इसके लिए जापानी शब्द है—'कामी-नो-मिची' अर्थात् 'कामी नो'—देवताओं का, 'मिची'—मार्ग।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के दस नियमों की व्याख्या

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

नियम १

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

प्रथम नियम में सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर को माना गया है।

आदि मूल [first cause] निमित्त या चेतन कारण को कहते हैं। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, के सृष्टि विद्या प्रकरण में पृष्ठ १२७ पर लिखा है "सर्वादि निमित्त कारणंपुरुष एवास्ति। अर्थात इस सबका आदि निमित्त कारण पुरुष (परमेश्वर) ही है। अब यदि 'आदि मूल' का अर्थ आदि निमित्त कारण समझ लिया जाय तो त्रैत सिद्धान्त का समावेश प्रथम नियम में अपने आप हो जाता है साधारण जनों के लिए यहां परमेश्वर को विद्या तथा विद्या के विषय अर्थात संसार का आदिम कारण बताया गया है, परन्तु विशेष विचार करने वालों के लिए ईश्वर निमित्त कारण ही है। उपादान तथा सामान्य इससे भिन्न हैं, ईश्वर मुख्य है। अन्य कारण गौण। इसलिए यदि यहां अन्य कारणों का स्पष्ट वर्णन नहीं किया गया तो उनका निषेध भी नियम के किसी शब्द द्वारा नहीं होता। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के ऊपर दिए गए उद्धरण से प्रतीत होता है कि 'आदि मूल' का अभिप्राय 'आदि निमित्त कारण है।

नियम एक में (१) सब सत्य विद्या (२) जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं इन दो वस्तुओं का निमित्त कारण परमेश्वर को कहा गया है। सत्य विद्या का अर्थ है वह ज्ञान जो तीनों काल में एक जैसा रहता है और यह 'ज्ञान' ईश्वर, जीव और प्रकृति का ज्ञान है। इस नियम में परमेश्वर को आदि मूल कारण कहा गया है जिसका अर्थ है कि वह उसी (ईश्वर, जीव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
और प्रकृति) ज्ञान का आदि कारण है। यह अर्थ कदापि नहीं है कि परमेश्वर इन तीन वस्तुओं का भी आदि कारण है क्योंकि ये सब नित्य हैं। इसी सत्य विद्या का नाम 'वेद' है। इस प्रकार परमेश्वर वेद का आदि मूल है इसलिए ईश्वर को आदि गुरु भी कहते हैं।

विद्या का अर्थ है परिवर्तनीय ज्ञान। परिवर्तनीय वस्तु क्या है? कार्य रूप प्रकृति, इसी को सृष्टि कहते हैं। इसीलिए विद्या जगत् के ज्ञान को कहते हैं। इसी ज्ञान से मनुष्य को सम्पूर्ण जगत् का ज्ञान हुआ करता है। परिणाम यह कि परमेश्वर जगत् का निमित्त कारण है। उपादान कारण प्रकृति है। संक्षेप में परमेश्वर वेद और जगत् का निर्माता (आदि) कारण है।

नियम २

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसीकी उपासना करनी योग्य है।

दूसरे नियम में: ईश्वर को निराकार सर्व शक्तिमान, न्यायकारी इत्यादि कहकर अद्वैतवाद का खंडन किया गया है। अद्वैतवाद में गुण गुणी का अभेद माना जाता है, परन्तु यहां ईश्वर स्पष्ट गुणी हैं, वह शक्ति नहीं है शक्तिमान् हैं। न्याय नहीं न्यायकारी हैं। ईश्वर की एक ऐसी सुन्दर गुणावली का वर्णन करने के पश्चात जिसके पाठ करने मात्र से ही उपासना का भाव पैदा हो जाता है, अन्त में कहा है 'उसी की उपासना करनी योग्य है।' इसी एक शब्द से अनेकेश्वरवाद का निराकरण हो गया है।

धर्म के इतिहास पर दृष्टि डालने से पता लगता है कि मूर्ति पूजन, अवतारवाद और अनेकेश्वरवाद हर जगह साथ-२ प्रचलित हुए हैं। ईसाईयों में त्रिमूर्ति के, हिन्दुओं में असंख्यक देवी देवताओं के, ऐसे ही अन्य धर्मों में भी अनेक उपास्यों के पैदा हो जाने पर ही मूर्ति पूजा का विधान चला है। आर्य समाज की पूजा-विधि अमूर्त्त ईश्वर का ध्यान है। ऋषि दयानन्द स्थान-स्थान पर परमेश्वर ही की उपासना पर बल देते हैं। वहां 'ही' का अभिप्राय परमेश्वर के अतिरिक्त किसी भी पदार्थ को साधन अथवा माध्य रूप में उपासना का विषय बनाने का स्पष्ट निषेध होता है। ऐसा ही इस नियम में भी समझना चाहिए। दूसरे शब्दों में इस नियम की भाषा ऐसी है जिससे अद्वैतवाद, अनेकेश्वरवाद, अवतारवाद तथा मूर्ति पूजा का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने आप निराकरण हो जाता है । एक स्वाध्याय शील सभासद इन दार्शनिक तत्वों से धीरे२ अपने आप परिचित होता जाएगा । आरम्भ में उससे उन सिद्धान्तों पर स्पष्ट हस्ताक्षर तो नहीं कराये गए परन्तु इनकी स्वीकृति की भूमिका बांध दी गई है ।

इस नियम में एक बात विशेष ध्यान देने योग्य है वह यह कि परमेश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, आदि सत्तात्मक गुणों के कारण सगुण और निराकार, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि आदि अभावात्मक गुणों के कारण निर्गुण भी है ।

इस नियम में आए 'सर्वशक्तिमान' शब्द का भाव यह है कि ईश्वर अपने सृष्टि नियमों के अन्तर्गत रहता हुआ अपनी असीम शक्तियों को प्रयोग में लाया करता है । अपने नियम का स्वयं भी कभी उल्लंघन नहीं करता अर्थात ईश्वर यह नहीं कर सकता कि अन्याय करे या अपने जैसा दूसरा ईश्वर उत्पन्न करले अथवा अपने को मार ले इत्यादि ।

नियम ३

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।

तीसरा नियम 'वेद' को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक बताता है । ऋषि के आने से पहले वेद केवल पुरोहितों की पोथी था । वेद के मंत्रों का प्रयोग संस्कारों तथा यज्ञों अर्थात् कर्म काण्ड में होता था । ज्ञान काण्ड उपनिषदों को ही समझा जाता था । ऋषि दयानन्द ने वेद को विद्याओं का पुस्तक कह कर यह भावना बिल्कुल बदल दी । वेद में बुद्धि को प्रवेश का अवसर दे दिया । विद्या बुद्धि का विषय तो है ही विद्या का अध्ययन अवश्य किया जायगा और उससे आचार व्यवहार की शिक्षा भी प्राप्त की जायेगी । उस शिक्षा से इस संसार तथा परलोक से सम्बन्ध रखने वाले सभी विषयों में काम लिया जायेगा । वेद को आर्यों के केवल मन्तव्य ही का विषय न बनाकर ऋषि ने इसका पढ़ना पढ़ाना, सुनना, सुनाना आर्यों का परम धर्म निश्चित कर दिया है । अभिप्राय यह कि आर्य लोग सदैव वेदों के वायु मंडल में रहें । विद्वान लोग जानते हैं कि वेदों तथा उपनिषद आदि पीछे के ग्रन्थों के वातावरण में बड़ा भेद है । आर्य 'वेद' के ही वायुमंडल में रहकर फिर से जीवित जाग्रत हो सकते हैं ।

आर्योद्देश्य रत्न माला में 'विद्या पुस्तक' इस शीर्षक के उद्देश्य संख्या ६० के शब्द ये हैं :

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'जो ईश्वरोक्त सनातन सत्य विद्यमान ४ वेद हैं उनको विद्या पुस्तक कहते हैं।''

यही संक्षेप में आर्य समाज की स्थिति है। सत्य विद्याओं का पुस्तक' इन शब्दों का भी वास्तविक अर्थ यही ह। हस्ताक्षर करने के लिए इतना लम्बा सूत्र न रखकर संक्षिप्त शब्दावली से काम लेने में संभवतः ऋषि का अभिप्राय किसी आर्य सभासद् के हृदय पर अधिक बोझ न डालना हो। 'सत्य विद्याओं का पुस्तक' इन शब्दों पर बिना ननुनच के हस्ताक्षर किए जा सकते हैं।

वेद का आदि मूल (प्रकाश कर्त्ता) ईश्वर है इसीलिए वेद का श्रवण और अध्ययन करना आर्यों का धर्म नहीं अपितु परम धर्म बताया गया है।

नियम ४

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

यह नियम आर्य समाज की शोभा है और आर्य समाज को उन सब पन्थों से पृथक करता है जो अपनी साधारण और किन्हीं दशाओं में सर्वथा निरर्थक बात के लिए भी मरने मारने को तैयार रहते हैं। वेद और उपनिषदों में 'ईश्वर' को सत्य कहा गया है। ईश्वर 'सत्य' क्यों है इसका उत्तर वृहदारण्यकोपनिषद् ने दिया है। 'सत्यम्' तीन शब्दों का योग है (स+ति+यम) 'स जीव को कहते हैं' नि ब्रह्माण्ड को यम् शासक का नाम है। इस प्रकार 'सत्यम्' परमेश्वर का नाम इसलिए है कि वह जीव और जगत् दोनों को शासन [नियम] में रखता है। (वृहद. अ ५ ब्रा ५ क० १) फिर प्रश्न है कि ऐसे (सत्यम्) गुरु को किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं? उपनिषद् का उत्तर यह है 'तत् सत्ये प्रतिष्ठितम्' वह ब्रह्म सत्य में प्रतिष्ठित है इसलिए सत्य को प्राप्त करने और सत्याचरण करने ही से ब्रह्म को प्राप्त कर सकते हैं। सत्य से विमुख होना ईश्वर से विमुख होना है।

नियम ५

सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिएं।

यह नियम शिक्षा देता है कि कर्त्ता को प्रत्येक कार्य स्वयंमेव विचार कर करना चाहिए। उसे करने के पहले उस कार्य के सम्बन्ध में निश्चय कर लेना चाहिए कि वह धर्म कार्य है, उसमें असत्य का कोई अंश नही है। वैदिक साहित्य में 'सत्य' और धर्म पर्याय वाचक शब्द हैं इसीलिए उपनिषद् में कहा गया है 'यो वैस धर्म्मः सत्यं वै तत्तस्मात् सत्यं वदन्त माहुर्धर्म वदतीति धर्म्म

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वा वदन्त सत्यंवदतीति' अर्थात् निश्चय जो यह धर्म है वह सत्य है। इसीलिए सत्य कहते वाले को कहते हैं कि यह धर्म कह रहा है। इसी प्रकार धर्म को कहते हुए पुरुष को कहते हैं कि यह सत्य कह रहा है। (बृहदा० अ० १ ब्रा० ४ क० १४) इस प्रकार यह नियम चाहता है कि अन्ध विश्वास अथवा आँख बन्द करके किसी के पीछे चलने की प्रथा दुनिया से उठ जाय। इसी प्रथा ने सत्य का ह्रास किया और झूठ की वृद्धि।

धर्म की कसौटियाँ मनु के शब्दों में 'वेद स्मृति सत्पुरुषों का आचरण और अपने अन्तरात्मा की आवाज है। पहली तीन कसौटियों में ईश्वर की प्रेरणा तथा पूर्वजों का अनुभव शामिल है और चौथी कसौटी अपनी आत्मा का निर्भीक निर्णय है। इन दो चीजों के सम्बंध में श्रद्धा और सतर्कता दोनों का सुन्दर मेल हो जाता है। परम्परागत अनुभव से लाभ उठाना परन्तु उसका अन्धाधुन्ध दास न बनना यही एक आर्य पुरुष का लक्षण है। न मनुष्य ऐसा स्वतन्त्र हो कि युगान्तर में मनुष्य जाति की असंख्य पीढ़ियों के निरंतर परिश्रम द्वारा संचित की गई ज्ञान तथा धर्म की उन्नति से वंचित हो जाय और ना ही पूर्वजों का ऐसा दास हो कि अपनी बुद्धि पर ताला ही लगाले। वेद बुद्धि के लिए हैं और बुद्धि वेद के लिए। तभी तो तर्क को ऋषि कहा जाता है।

नियम ६

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

इस नियम में आर्यों का समष्टि के प्रति कर्त्तव्य बताया गया है। वह है 'संसार का उपकार करना'। कितने उदार विचार हैं! फिर इसमें शरीर, समाज और आत्मा इन तीनों की उन्नति करना शामिल है। शारीरिक उन्नति की रामबाण औषधि ऋषि की दृष्टि में वीर्य रक्षा है। इसका व्यवहार, ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थ, दोनों आश्रमों में करना कराना आर्यों का धर्म है। युक्त आहार विहार भी शारीरिक उन्नति का साधन है। समाज का विभाग ४ वर्णों में कर उन्हें अपने-अपने कर्तव्य पर लगाना, प्रत्येक वर्ण को समाज रूपी शरीर का उपयोगी अंग बनाना यही आर्य समाज के विचारानुसार संसार की सामाजिक उन्नति की आदर्श मुक्ति है। 'आत्मिक उन्नति' इस एक शब्द में आत्मा की सत्ता, पुनर्जन्म तथा मुक्ति इन तीन सिद्धान्तों का समावेश हो गया है।

उचित आहार विहार का विधान तथा बाल विवाह और वृद्ध विवाह का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
निषेध शारीरिक उन्नति द्वारा हो गया है। इस त्रिविध उन्नति के लिए आर्य समाज का एक निश्चित पुरोगम है। यदि छठा नियम एक शुभ इच्छा मात्र ही न रहना हो किन्तु इसे क्रियात्मक रूप भी देना हो (जैसे आर्य समाज इस समय भी अपनी शक्ति के अनुसार यथा संभव देता चला जा रहा है) तो उसके लिए उन साधनों को बर्तना होगा जो ऋषि के मन्तव्यों में वर्णित हैं। वे साधन हैं (१) ब्रह्मचर्य और युक्त आहार विहार (२) वर्ण व्यवस्था (३) मोक्ष प्राप्ति के लिए साधन चतुष्टय का अनुष्ठान और प्रचार।

नियम ७

सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिए।

सातवाँ नियम आर्य समाज के आचार-शास्त्र का सार है। आर्य के व्यवहार की आधार शिला विश्वप्रेम है। परन्तु इस 'प्रेम' पर 'धर्म का अंकुश है। निरंकुश प्रीति मोह बन जाती है। धर्म युक्त प्रेम 'यथा योग्य' वर्त्ताव के रूप में प्रकट होता है।

महात्मा गाँधी के 'अहिंसावाद' तथा लेनिन के 'साम्यवाद के मुकाबले में आर्य समाज का यथा योग्यवाद पेश किया जाता है। एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य के साथ व्यवहार दोनों के वर्ण तथा आश्रम या साधारण शब्दों में दोनों की आत्मिक तथा सामाजिक स्थिति के अनुकूल होगा। यदि सबके साथ व्यवहार करने में पशुओं को भी शामिल कर लिया जाय तो हिंसक तथा लाभप्रद पशुओं को एक ही डंडे से हाँकना उनके साथ 'यथा योग्य व्यवहार करना' कदापि न होगा। हिंसक पशुओं को मारना और उपयोगी पशुओं की रक्षा करना यही वेद तथा ऋषियों का आदेश है और यही मनुष्य की सुसंस्कृत बुद्धि का भी निश्चित सन्देश है।

यह सातवां नियम सामाजिक व्यवहार की मर्यादा नियत करता है कि **जो पुरुष जिस योग्य हो उसके साथ उसी के योग्य व्यवहार करना चाहिए** परन्तु प्रत्येक व्यवहार प्रीति और प्रेम से ओत-प्रोत होना चाहिए।

संक्षेप में

१. प्रत्येक आर्य को आर्यत्व को प्रदर्शित करते हुए आपस में और प्राणी-मात्र के साथ अपनी ओर से जहाँ तक सभव हो प्रीति का व्यवहार करना चाहिए। भ्रान्त पुरुष के साथ सदैव प्रियाचरण करने से कालान्तर में अच्छा फल निकलता है।

२. धर्मानुसार व्यवहार करने का अभिप्राय यह नहीं है कि हम समाजस्थों के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
साथ तो प्रेम का व्यवहार रखें और अन्य धर्मावलम्बियों के साथ उनके वैधर्म के कारण सदा विरोध किया करें। किन्तु अभिप्राय यह है कि सत्यासत्य के विवेक पूर्वक अर्थात् जो भले मनुष्य हैं उनके साथ भलाई का और जो बुरे मनुष्य हैं उनके साथ उपेक्षा का व्यवहार करें और यत्न करते रहें कि बुरे बुराई को छोड़ दें परन्तु दुष्टों और आततायियों के विनाश में आगा-पीछा न करें।

३. 'यथा योग्य' यह सम्बन्ध का सूचक है जैसे संन्यासी गृहस्थ, ब्राह्मण-क्षत्रिय, राजा-प्रजा, स्वामी-सेवक, गुरु-शिष्य, पिता-पुत्र, बन्धु-बान्धव, इष्ट मित्र, वृद्ध-बालक, आदि-२। यदि हम प्रत्येक अपने-अपने पद के अनुसार यथा योग्य रीति से संसार भर के मनुष्य मात्र के साथ व्यवहार करें तो कदापि विरोध उत्पन्न न होगा।

नियम ८

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आठवां नियम है (अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि) योगदर्शन के लक्षण के अनुसार जिसे ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास के आरम्भ में उद्धृत किया है अविद्या का अर्थ है 'अनित्य को नित्य' अपवित्र को पवित्र। दुःख को सुख और अनात्मा को 'आत्मा समझना'। विद्या इसके विपरीत सत्य ज्ञान का नाम है। इस प्रकार की विद्या पुस्तकों से नहीं किन्तु जीवन भर के शुभ संस्कारों से प्राप्त होती है। गर्भाधानादि सोलह संस्कार तथा सन्ध्यादि पंच महायज्ञ इस विद्या की उन्नति के लिए आवश्यक साधन हैं। इन संस्कारों तथा यज्ञों को स्वयं करना और अन्य लोगों में इनका प्रचार करने में यत्नशील होना भी इस नियम का उद्देश्य हैं। संस्कारों का, अनुष्ठान मशीन की तरह करने से नहीं किन्तु सत्य, न्याय दया, तप, त्याग, बलिदान, सेवा, पवित्रता, विनम्रता आदि यज्ञ की भावना को सारे जीवन में ओत प्रोत कर देने से ही अविद्या का नाश तथा विद्या की उन्नति हो सकती है।

यह नियम अविद्या [अज्ञान, विपरीत ज्ञान] रूपी अंधकार को दूर करके विद्या [यथार्थ ज्ञान] रूपी प्रकाश से संसार के प्राणियों को प्रकाशमान बनाने की दीक्षा देता है।

नियम ९

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सबकी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

नवाँ नियम सबकी उन्नति में सबकी उन्नति सिखाता है। व्यक्ति का हित समाज के बिना हो सकना असंभव है। वास्तव में मानव जाति और इससे भी विस्तृत दृष्टि से देखें तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक शरीर है और सब व्यक्ति उसके अंग हैं। कोई अंग अपनी वृद्धि दूसरे अंगों की वृद्धि के बिना कदापि नहीं कर सकता। 'संसार की उन्नति' दूसरे शब्दों में स्वयं अपनी उन्नति करना है। यह कृपा नहीं कर्त्तव्य है। सच्चा स्वार्थ इसी में है। यह नियम सम्पूर्ण झगड़ों की जड़ स्वार्थ 'खुदगर्जी, को संसार से उखाड़ कर फेंक देने की शिक्षा देता है। प्रत्येक मनुष्य यदि अन्यों के साथ अपनी उन्नति में संलग्न हुआ करे तो संसार शांति का धाम बन सकता है।

नियम १०

सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परंतत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।

दसवें नियम में समाज तथा व्यक्ति के अधिकारों का सीमा बंधन किया गया है। समाज का सदस्य होने से मनुष्य कहां तक स्वतत्रता को छोड़ता है इस बृहत् तत्व को एक सूत्र में कह दिया गया है। समाज का शासन वहीं तक होना चाहिए जहाँ तक समूचे हित या अहित का प्रश्न हो। वैयक्तिक हित साधन में प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है। ऊपर यह भी कह दिया गया है कि समाज का हित और व्यक्ति का हित एक दूसरे से जुदा नहीं है। इन हितों को एक भी रखना और जुदा भी कर देना। समाज शास्त्र का आधार यही दो नियम हैं। व्यक्ति समाज के हित का ध्यान रखे। अपनी प्रत्येक क्रिया में समाज के भले पर दृष्टि रखे और समाज व्यक्तियों के अधिकारों का रक्षक हो। समाज शास्त्र का सार यही दो सूत्र हैं।

प्रसिद्ध अंग्रेज तत्त्ववेत्ता जान स्टुअर्ट मिल ने जो महर्षि दयानद का समकालीन था 'लिबर्टी' नाम की एक पुस्तक प्रकाशित की थी जो समाज-शास्त्र पर एक प्रामाणिक पुस्तक मानी जाती है। उस पुस्तक में इस दसवें नियम का अनुवाद मोटे अक्षरों में अंकित है। वह सम्पूर्ण पुस्तक ही वास्तव में इस दसवें नियम की व्याख्या है।

नियमों पर एक विहंगम दृष्टि

प्राणी इस संसार में तीन कर्त्तव्यों की पूर्ति के लिए आया करता है (१)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने साथ क्या करना चाहिए (२) दूसरों के साथ क्या करना चाहिए (३) परमेश्वर के साथ क्या करना चाहिए ?

आर्य समाज के दस नियम भी इन तीन कर्त्तव्यों का विधान करते हैं। पहले और दूसरे नियम में उस कर्त्तव्य का विधान है जो ईश्वर के सम्बन्ध में पूरा करना चाहिए अर्थात् मनुष्य को यह विश्वास रखते हुए कि परमेश्वर जगत् का रचयिता और वेद का प्रकाशक है उसकी और एक मात्र उसी ईश्वर की उपासना करनी चाहिए :—

२ आर्य समाज के ३, ४, ५, वे नियम उन कर्त्तव्यों को प्रकट करते हैं जो मनुष्य को अपने सम्बन्ध में पूरे करने चाहिए। वे कर्त्तव्य ये है :—

१ वेद का पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना।

२ असत्य का त्याग और सत्य का ग्रहण।

३ प्रत्येक कार्य का सत्यासत्य के विवेक पूर्वक सम्पादन।

४ अन्त में ५ नियम उन कर्त्तव्यों का विधान करते हैं जो मनुष्य को अन्यों के सम्बन्ध में पूरे करने चाहिएं और वे ये हैं :—

१ मनुष्य मात्र की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिये यत्नवान् होना।

२ विद्या का विस्तार करना।

३ अपनी उन्नति के साथ ही अन्यों की उन्नति करना।

४ समाज के नियमों के अधीन रहना।

यद्यपि आर्य समाज के नियम गणना में केवल दस हैं परन्तु उनके भीतर इतनी सामग्री मौजूद है जो व्यक्ति और समाज को उन्नत बनाने के लिए पर्याप्त है।

नियमों पर गंभीर दृष्टि

इन नियमों में भाव भाषा तथा क्रम कैसे सुन्दर हैं इसका अनुभव पाठक स्वयं कर सकते हैं। इनमें एक शब्द ऐसा नहीं जो बढ़ाया घटाया अथवा इधर का उधर किया जा सके। चतुर चितेरे ने मानव-जीवन के आदर्श का एक पूरा चित्र खींच कर रख दिया है। इन नियमों में एक बिन्दु विसर्ग इधर का उधर कर दो सारा नक्शा ही बिगड़ जायगा। सत्य का स्रोत सत्य की उपासना, सत्य का चिन्तन, सत्य का मानसिक ग्रहण तथा सत्य का क्रियात्मक व्यवहार—इस प्रकार सत्य की सर्वांगीण शिक्षा देकर विश्व के उपकार, विश्व

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रेम, विश्व भर में विद्या की वृद्धि तथा विश्व की उन्नति में ही व्यक्ति की उन्नति और फिर व्यक्ति पर विश्व के अधिकार की सीमा इन विश्व व्यापक आदर्शों तथा मर्य्यादाओं का प्रतिपादन इन नियमों द्वारा हुआ है। आर्य समाज के संस्थापक की विश्वतोमुखी वृत्ति का एक संक्षिप्त सा चमत्कार जो किसी और चमत्कार से कम आश्चर्य कारक नहीं है, आर्य समाज के दस नियम हैं।

इन नियमों में निम्नलिखित सिद्धान्तों की ओर संकेत किया गया है:—

१ प्रथम नियम में त्रैतवाद का प्रतिपादन किया गया है।

२ दूसरे नियम में अद्वैतवाद, अवतारवाद, अनेकेश्वरवाद तथा मूर्तिपूजा का खंडन किया गया है।

३ तीसरे नियम में वेद को ईश्वरीय ज्ञान बता कर उसके वातावरण में जीवन व्यतीत करने पर बल दिया गया है।

४ छठे नियम में वीर्य रक्षा, तथा युक्त आहार विहार वर्णव्यवस्था, आत्मा की सत्ता, पुनर्जन्म तथा मुक्ति इन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है।

५ सातवें नियम में 'यथा योग्य' वाद का प्रतिपादन किया गया है। वर्णाश्रम व्यवस्था, उपयोगी पशुओं की रक्षा, हिंसकों के निग्रह तथा अहिंसा की ओर स्पष्ट निर्देश है।

६ आठवें नियम में मूख्यतया १६ संस्कारों और ५ महा यज्ञों के अनुष्ठान और प्रकार की ओर संकेत है।

आर्य समाज के मुख्य २ सिद्धान्त यही हैं।

नियमों के स्वीकार करने का अर्थ है उसके भावों को स्वीकार करना। ५१ मन्तव्यों में मुख्यतया स्वीकार करने योग्य यही बातें हैं और यदि और विस्तार में जायें तो ५१ मन्तव्य भी पर्याप्त नहीं। विश्रुत सिद्धान्तों का संग्रह सम्पूर्ण आर्य साहित्य से हो सकता हैं। नियम गागर हैं जिनमें सिद्धाँतों का सागर बन्द है अधिक स्पष्ट करना हो तो सिद्धान्तों के नाम ले लीजिए और संकेतों से ही काम लेना हो तो नियमों को काफी समझें। बात एक ही है।

समाज का प्रवेश सूत्र दस नियम ही हैं। सिद्धांत संकेत रूप में इनके अन्तर्गत हैं। जो भाई यह कहते हैं वा मानते हैं कि आर्य सभासद को दस नियमों के अतिरिक्त अन्य किन्हीं सिद्धान्तों को मानने की आवश्यकता नहीं हैं, उनकी भूल का भी उपर्युक्त विश्लेषण तथा नियमों की व्याख्या से भली भांति निराकरण हो जाता है। सभी का कर्त्तव्य है कि नियमों को भली भांति समझ कर आर्य समाज के सदस्य बनें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चिन्तन—

—ओम्प्रकाश त्यागी, संसद् सदस्य

सुख - शांति - आनन्द कैसे मिले ?

आज के विषय की चर्चा सुनकर कई साधु, सन्त, तथा विद्वान् भी पधारे हैं। उनके आने से विद्यार्थियों में बड़ी उत्सुकता बढ़ गई है; और सभी अपने को आगे लाने के लिये प्रश्न तैयार कर रहे हैं। विषय भी जीवन से सीधा सम्बन्ध होने से सभी में प्रवचन सुनने के लिए एक विशेष रुचि हो रही है। अपने स्वभाव के विपरीत आज महात्मा जी समय पर नहीं पधारे, इस कारण सभी की दृष्टि नगर से आने वाले मार्ग पर लगी है। देखते देखते मोटर का हार्न बजा और गाड़ी महात्मा जी को लेकर पहुँच ही तो गई। सभी ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया। महात्मा जी ने देरी के लिए क्षमा याचना करते हुए बिना किसी भूमिका के सीधा विद्यार्थियों को प्रश्न करने का संकेत किया। संकेत पाते ही एक विद्यार्थी खड़ा हो गया—

विद्यार्थी—महात्मा जी ! बड़े बड़े साधु, सन्त, महात्मा यह उपदेश करते है कि यह संसार दुःख सागर है, इससे मुक्ति पाने में ही सुख शान्ति है आप का इस सम्बन्ध में क्या विचार है।

महात्मा—विद्यार्थियो ! जो जैसा होता है वह वैसा कार्य करता है या वस्तु का निर्माण करना है। संसार के सभी धर्मावलम्बी यह मानते हैं कि इस जगत् का रचने वाला परमात्मा है; और परमात्मा सच्चिदानन्द है। इस लिये जब इस जगत का बनाने वाला परमात्मा सत्, चित् और आनन्दमय है तो फिर उसका बनाया यह जगत दुःख सागर कैसे हो सकता है, सच्चिदानन्द परमेश्वर का बनाया संसार दुःख सागर नहीं अपितु सुख सागर है।

विद्यार्थी—फिर लोग इसे दुःख सागर क्यों कहते हैं ?

महात्मा—संसार को दुःख सागर कहने वाले दो प्रकार के व्यक्ति हैं। पहले वे जो निराशावादी असफल, पुरुषार्थहीन हैं। दूसरे वे जो तत्व ज्ञानी हैं। तत्वज्ञानी इस जगत् को मोक्ष अथवा परमानन्द की तुलना में दुःख सागर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहते हैं। वास्तव में उनके कहने का तात्पर्य यह नहीं कि इस जगत् में सुख है ही नहीं। उनका तात्पर्य यह होता है इस जगत् का सुख क्षणिक होता है; और भोग का अन्त दुःख में होता है।

संसार सुख से भरा है, यह दिन के प्रकाश की भाँति सत्य है। इसे झुठलाना अपने को धोखा देना और ईश्वर एवं उसकी रचना का अनादर है।

विद्यार्थी—जब सच्चिदानन्द परमात्मा का बनाया यह जगत् सुख सागर है तो फिर दुःख की रचना किसने की है ?

महात्मा—दुःख की उत्पत्ति मानव अपने कर्मों से करता है। ईश्वर ने तो प्रत्येक वस्तु मानव को सुखी सम्पन्न बनाने के निमित्त ही रची है।

विद्यार्थी—जब संसार की प्रत्येक वस्तु सुख देने वाली है तो फिर संसार में अधिकांश लोग दुःखी क्यों हैं ?

महात्मा—ईश्वर ने सुख का भण्डार उपस्थित कर दिया है; परन्तु इस की प्राप्ति उसी को होती है जो इसे लेना जानता है। सन्त कबीर के शब्दों में :—

जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ।
मैं बौरी ढूँडन गई, रही किनारे बैठ ॥

समुद्र में जो गोता लगाता है उसे ही मोती मिलते हैं; और जो वहां जा कर किनारे पर बैठ जाते है उन्हें खाली हाथ ही घर लौटना पड़ता है।

जैसे—यदि किसी स्थान पर सभी प्रकार के संगीत वाद्य हों; और कोई अनाड़ी उन्हें प्राप्त करके भी उन स्वरों का आनन्द नहीं दे सकें तो दोष उन संगीत वाद्यों यंत्रों का नहीं अपितु उस व्यक्ति की अज्ञानता का है। इसी प्रकार जगत् की प्रत्येक वस्तु सुख देने वाली है; परन्तु ज्ञानी एवं प्रयत्न शील व्यक्ति ही उनसे सुख प्राप्त कर पाता है।

विद्यार्थी—महात्मा जी ! कुछ लोगों का विश्वास है कि गरीबी ही सुख, शान्ति व आनन्द के अभाव का कारण है और यदि गरीबी मिट जाय तो सब को इनकी प्राप्ति स्वतः हो जायगी ?

महात्मा—यदि ऐसा होता तो सभी धनी लोग सुखी, शान्त व आनन्दित होते; परन्तु तथ्य सर्वथा इसके विपरीत है। उनसे अधिक दुःखी, चिन्तित व आनन्द विहीन तो कोई है ही नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्यार्थी—महात्मा जी ! आप की बात सभा में उपस्थित एक भी व्यक्ति स्वीकार नहीं करेगा। सारा संसार इस बात को जानता है कि प्रचुर मात्रा में भोग सामग्री व धन रखने वाले व्यक्ति सबसे अधिक सुखी, शान्त व आनन्दित हैं, परन्तु आप इसके सर्वथा विपरीत बात कह रहे हैं। क्या अपनी मान्यता को युक्तियों से सत्य सिद्ध करने का प्रयास करेंगे ?

महात्मा—बच्चे ! यह आप की धारणा निराधार है कि सुख का आधार भोग सामग्रियां हैं। वास्तविकता इसके सर्वथा विपरीत है। सचाई यह है कि भोजन का सुख सुन्दर व स्वादिष्ट भोजन में नहीं अपितु भूख में है, सोने के आनन्द का कारण विशेष मकान, नर्म पलंग व बिछौना नहीं अपितु नींद है। पैसे से फल-फूल, दूध, दही, मक्खन आदि पदार्थ खरीदे जा सकते हैं, परन्तु भूख नहीं, धन से मकान, पलग, बिछौना आदि खरीदे जा सकते हैं, परन्तु नींद नही, धन से पुस्तकें खरीदी जा सकती हैं, परन्तु ज्ञान नहीं। इस प्रकार धन व भोग सामग्रियों को सुख का आधार समझना भारी भूल है। भोग सामग्रियां सुख का साधन हैं, परन्तु वे सुख का आधार कदापि नहीं हैं।

विद्यार्थी—फिर सुख का आधार क्या है ?

महात्मा—सुख का आधार सुख शब्द से ही प्रकट हो जाता है सु+ख अर्थात स्वस्थ इन्द्रियां स्वस्थ इन्द्रियां अथवा स्वस्थ शरीर ही सुख का मूलाधार है। इसके बिना सुख की कल्पना करना मूर्खता है। स्वस्थ शरीर वाला नितान्त निर्धन व्यक्ति सुख की आशा कर सकता है ; परन्तु शरीर वाले करोड़पति को सुख के स्वप्न में भी दर्शन होना कठिन है। जैसे संसार में सब से धनी अमरीका की फोर्ड कम्पनी के मालिक ने एक बार एक स्वस्थ मजदूर की ओर संकेत करते हुये वेदनामय शब्दों में कहा था कि वह उसका अपेक्षा कहीं अधिक सुखी है क्योंकि वह स्वयं न खा सकता है, और न सो सकता है।

विद्यार्थी—महात्मा जी ! आप की यह बात कि सुख का आधार स्वस्थ शरीर है मान लेने पर यह बात भी सत्य है कि स्वस्थ शरीर का आधार बलदायक रुचिकर स्वादिष्ट भोजन है। इस प्रकार भोग सामग्री ही सुख का आधार हुआ ?

महात्मा—स्वस्थ शरीर के लिये भोजन की आवाश्यकता है इसे कोई अस्वीकार नहीं करता किन्तु परिश्रम अथवा व्यायाम, स्वच्छ जल वायु, ब्रह्मचर्य, आत्मसंयम भी स्वस्थ शरीर के लिये अधिक आवश्यक हैं। ऐसा होने पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भोजन भी उसे स्वस्थ बना सकेगा। सभी लोगों को यह ज्ञान है कि मनुष्य भोजन को खाता है ; परन्तु कितनों को यह ज्ञान है कि भोजन भी विशेष अवस्था में मनुष्य को खाता है। परिश्रम एव पुरुषार्थ हीन मनुष्यों को भोजन खाता है। यही कारण है शारीरिक परिश्रम न करने वाले धनी व्यक्ति सदैव अस्वस्थ रहते हैं। यही कारण है वेद में ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि वह हमारी अन्न से रक्षा करें।

विद्यार्थी—क्या वेद ने अन्न से मनुष्य की रक्षा का कोई उपाय वतलाया है ?

महात्मा—वेद ने बड़े ही सुन्दर शब्दों में भौतिक सुख की प्राप्ति का मार्ग इस प्रकार प्रदर्शित किया है।

"मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाद्धो भवति केवलादी।"

जो मूर्ख व्यक्ति मुफ्त का भोजन अर्थात् बिना परिश्रम से प्राप्त भोजन करने का प्रयत्न करता है वह भोजन उसके विनाश का कारण होता है वह अपने हितैषी का भी भला नहीं करता जो अकेला खाता है वह पाप का भागी होता है।

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत ꣳ समाः।
एवंत्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥

(यदि तू सुख चाहता है तो) यहां कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर। कार्य ऐसे कर जो तुझे बान्धने वाले न हों। सुखी जीवन के लिये) इससे भिन्न कोई मार्ग नहीं है।

विद्यार्थी—यह बात हमारी समझ में आ गई कि स्वस्थ शरीर ही सुख का मूलाधार है और स्वास्थ्य के लिए शारीरिक श्रम आवश्यक है परन्तु यह वतलाइये कि सुख किस चिड़िया का नाम है अर्थात सुख का स्वरूप क्या है ?

महात्मा—सुख इन्द्रियों की इच्छा पूर्ति से उत्पन्न होता है जिसे अनुभव किया जा सकता है वंतलाया नहीं जा सकता। संसार का प्रत्येक व्यक्ति सुख के स्वरूप से परिचित है। इच्छा पूर्ति का ही दूसरा नाम सुख है।

विद्यार्थी—दुःख किस वस्तु का नाम है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा—इन्द्रियों की इच्छा पूर्ति में बाधा आजाने पर दुःख उत्पन्न हो जाता है।

विद्यार्थी—यदि कोई व्यक्ति स्वस्थ हो, और उसके पास प्रचुर मात्रा में भोग सामग्री हो तो फिर क्या वह सुखी माना जाएगा ?

महात्मा—सुखी होना इतना सरल नहीं है जैसा आप सोचते हैं। इन्द्रियों की इच्छायें असीमित हैं परन्तु धन और भोग सामग्रियों को प्राप्त करने की मनुष्य की क्षमता भी सीमित है। इस प्रकार इन्द्रियों की असीमित इच्छाओं की सीमित जगत् में पूर्ति सर्वथा असम्भव है। इस लिए स्वास्थ्य और कुछ धन की प्राप्ति हो जाने पर भी कोई सुखी होने का दावा नहीं कर सकता।

विद्यार्थी—जब मनुष्य की इन्द्रियों की इच्छायें असीमित हैं, और भोग सामग्रियां सीमित हैं, तो इच्छाओं की सर्वांश में पूर्ति असम्भव है। इसलिए इस जगत् में फिर कौन व्यक्ति सुखी होने का दावा कर सकता है? तब तो साधु महात्माओं के इस उपदेश में सत्यता है कि इस संसार में सुख नहीं है।

महात्मा—बच्चे ! अपने दोष को संसार के मत्थे क्यों मढ़ते हो। संसार में तो सुख है, परन्तु यदि आप अपनी चादर से अधिक पैर फैलाना चाहते हो तो फिर दोष चादर का नहीं आप का है। इन्द्रियों की इच्छायें असीमित अवश्य हैं, परन्तु साथ ही ईश्वर ने उन्हें सीमित करने की मनुष्य को बुद्धि व शक्ति भी दी है। यदि वह उसका प्रयोग करें तो फिर संसार में सुख ही सुख है।

विद्यार्थी—इन्द्रियों की इच्छाओं को सीमित करने का उपाय क्या है ?

महात्मा—इच्छाओं को सीमित करने का मुख्य उपाय ज्ञान, आत्मसंयम एवं साधना है। जब मनुष्य अपने को शरीर ही मान बैठता है ; और शरीर पूजा ही उसका ध्येय बन जाता है, तो फिर इन्द्रियां बेलगाम हो अपनी असीमित इच्छाओं में मकड़ी के जाल की भांति उसे फंसा लेती हैं। फिर वह चाहता हुआ भी उनसे नहीं निकल पाता है। परन्तु जब मनुष्य अपने को आत्मा मानकर शरीर को एक साधन के रूप में देखता है तो फिर इन्द्रियों की इच्छाओं को सीमित करना उसके लिये बड़ा आसान हो जाता है।

विद्यार्थी—यदि मनुष्य अपनी इच्छाओं को सीमित कर लेगा तो फिर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसकी उन्नति रुक जायगी। ज्ञान-विज्ञान की वह उन्नति क्यों करेगा। फिर वह झोंपड़ी में रूखी-सूखी रोटी खाकर चैन से सोयेगा।

महात्मा—इच्छाओं को सीमित करने का अर्थ है अपनी आय के अनुसार अपनी इच्छाओं को सीमित करना। इसका अर्थ इच्छाओं को समाप्त करना कदापि नहीं है; परन्तु जो चान्दी के भण्डार के मध्य अपनी असीमित इच्छाओं को लेकर दुःखी रहने की अपेक्षा तो झोंपड़ी में रूखी-सूखी खाकर चैन से सोना भी लाख दर्जे अच्छा है।

रहा उन्नति करने का प्रश्न! सो मानव के अन्दर बुद्धि और आत्मा मनुष्य को सदैव आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करते रहते हैं; और वे अन्न-पानी के अतिरिक्त बौद्धिक शक्ति के द्वारा ज्ञान-विज्ञान की खोज में भौतिक सुख की अपेक्षा कहीं अधिक सुख अनुभव करते हैं। दार्शनिक एव वैज्ञानिक देखने में भले ही पागल जैसे प्रतीत होते हैं; परन्तु उनकी आत्मा अपनी खोजों में सदैव आनन्द विभोर रहता है। इसलिये उन्नति के रुकने का प्रश्न ही नहीं उठता। भारत के साधु-सन्त इसके साक्षात् प्रतीक हैं जिन्होंने त्याग पूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए ससार को उच्च कोटि का ज्ञान-विज्ञान दिया।

विद्यार्थी—यदि मनुष्य स्वस्थ एवं आत्म संयमी हो तब तो वह सुखी हो सकेगा?

महात्मा—अपनी इच्छाओं के अनुसार सामग्री भोग प्राप्त होने पर भी यदि व्यक्ति भोग में अति करेगा तो फिर कुछ समय के पश्चात ही दुःखों का शिकार बन जायगा। इसलिए सुख की प्राप्ति के लिये शास्त्रकारों ने कहा है कि "अति सर्वत्र वर्जयेत" भोग में अति मत करो।

विद्यार्थी—बुढ़ापे में जब इन्द्रियां शिथिल हो जाती हैं; और उनमें अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने अथवा भोग करने की क्षमता ही नहीं रहती तब तो वह बड़ा सुखी रहता होगा?

महात्मा—इच्छाओं का सम्बन्ध आयु से नहीं होता है। आयु की वृद्धि के साथ साथ जहाँ इन्द्रियों की शिथिलतावढ़ती जाती है वहाँ मनुष्य की इच्छाओं में वृद्धि होती जाती है। उस समय उसकी अवस्था परकटे कबूतर की भाँति होती है जो आकाश को देखकरउड़ना चाहता है, परन्तु पर कटे होने के कारण उड़ नहीं पाता है। इसी लिए बुढ़ापे को नारकीय जीवन माना है?

विद्यार्थी—क्या संसार में पूर्ण-सुख की प्राप्ति सम्भव है?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा—नहीं ! जब तक शरीर के साथ जीवन, मरण, बुढ़ापा जुड़े हैं तब तक पूर्ण सुख की प्राप्ति सर्वथा असम्भव है।

विद्यार्थी—क्या ऐसा कोई उपाय है कि इन्द्रियों की शिथिलता के साथ भोगों की इच्छायें भी शिथिल हो जाएं और बुढ़ापे में तड़फना न पड़े ?

महात्मा—ज्ञान और अनुभव द्वारा जब मनुष्य भोग द्वारा उत्पन्न सुख की क्षण भंगुरता एवं उसकी व्यर्थता जान जाता है तो फिर उनसे छुटकारा पाने में सरलता हो जाती है। जब वह यह अनुभव कर लेता है कि एक न एक दिन भोग छोड़ना ही है; तब स्वतः छोड़ने में सुख और विवश होकर छोड़ने में कष्ट होगा ही। वह उन्हें स्वतः छोड़कर सुख प्राप्त कर लेता है यों तो भोग का अन्त त्याग में होता ही है, अर्थात भोग स्वतः मनुष्य में त्याग की भावना उत्पन्न कर देते हैं। बुद्धिमान् लोग उस त्याग की भावना को पकड़ आगे बढ़ जाते हैं परन्तु अज्ञानी फिर भी भोग से चिपटे रहते हैं।

विद्यार्थी—महात्मा जी ! सुख और शान्ति में क्या भेद है ?

महात्मा—अपनी घड़ी की ओर देखते ही मुस्करा कर महात्मा जी ने कहा आज तो सुख में ऐसा गोता लगा कि शान्ति के लिए समय ही नहीं बचा। अतः अब शान्ति विषय अगले अंक में हल किया जायगा।

शान्ति पाठ के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

आप 'जन-ज्ञान' को सहायता इस तरह भी कर सकते हैं

१. जब भी आप को चन्दा समाप्ति की सूचना मिले, आप अपना शुल्क तुरन्त भेज दें।

२. वी. पी. पी. की प्रतीक्षा न करें। वी. पी. पी. मे आपको १) अधिक देना पड़ता है जो न हमें मिलता है न आपको। इसलिए धन मनिआर्डर से ही भेजें।

३. यदि किसी कारणवश आप सदस्य न रहना चाहें तो हमें सूचित तो कर ही सकते हैं। आपके १० पैसे का कार्ड हमारे धन और समय की रक्षा कर सकता है।

४. मनिआर्डर के कूपन पर अपना पूरा नाम और पता अवश्य लिखें। सदस्य संख्या या "नया सदस्य" शब्द भी लिख दें।

५. 'जन-ज्ञान' आप का अपना पत्र है। इसमें जो भी कमी नजर आए वह हमें बताएं। हम आपके बल पर, इसके द्वारा संसार मे आर्य समाज का संदेश फैलाना चाहते हैं। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है। —व्यवस्थापक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रकाशवती शास्त्री, एम०ए०

कर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द

प्राण देते हैं धर्म पर अमर होने के लिए।
आदर्श जीवन है यही, उपदेश पाने के लिए।

मार्ग में चलते हुए एक दिन एक बहिन के दर्शन हुए। नमस्ते और कुशल प्रश्न के उपरान्त मैंने पूछा—क्यों बहिन ! बहुत दिनों से सत्संग में नहीं आई ? बोली—क्या करूं बहिन घर में इतना काम रहता है कि सत्संग में आने का अवकाश ही नहीं मिलता।

वह बहिन तो बात करके चली गई पर मेरे मन को एक धक्का सा लगा- "सत्संग में आने के लिए अवकाश नहीं" क्या यह भारत की नारी बोल रही थी ? जो दिनों उपवास रखती है, घंटों पूजा-पाठ कर सकती है। जहां के लोग हज़ारों रुपया खर्च करके सुदूर पर्वत की गह्वरं गुफ़ाओं में देवी-देवताओं के दर्शन करने पहुँच जाते हैं, शीत ऋतु में भी सरिताओं की शीतल-तरंगों में केवल धर्म की भावना से स्नान करते हैं, वहां आर्यसमाज के सत्संग में आने के लिए अवकाश नहीं, कितनी उपेक्षा ? कितनी अश्रद्धा ? क्या आर्यसमाज अथवा आर्यसमाज का सत्संग श्रद्धा का पात्र नहीं ? उसी समय मन ने एक ऊंची उड़ान लगाई।

श्रद्धा के अभाव का ध्यान आते ही मेरे स्मृति-पट पर श्रद्धा की साकार प्रतिमा स्वामी श्रद्धानन्द की दिव्य मूर्ति प्रकट हुई। कितनी श्रद्धा ? कितना विश्वास ? कितनी लगन ? स्मरण-मात्र से ही मन पुलकित हो उठा, हृदय गद् गद् हो गया। वह स्वामी श्रद्धानन्द, जिनका जन्म का नाम मुंशीराम था, केवल श्रद्धा के तत्वों से ही लालित व पालित हुए थे। आज लोग कहते हैं, आर्यसमाज का विषय ही शुष्क है, वैदिक धर्म ज्ञान प्रधान है, नीरस है, इस में जनता को आकर्षित करने की शक्ति नहीं। यह जन-जन में श्रद्धा की वृत्ति, को उत्पन्न नहीं कर पाता। पर हम भूल जाते हैं, सूरज के प्रखर-प्रताप में भी हम वस्तु स्थिति को नहीं समझ पाते। यह वही वैदिक धर्म है जिसने महात्मा मुंशी राम को सत्य मार्ग दिखाकर उनके हृदय में अजस्त्र श्रद्धा की मंदाकिनी को प्रवाहित किया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुंशीराम का चचल मन, ऋषि दयानन्द के उपदेशामृत को पान करके ही स्थिर हुआ था। घने अंधकार में भटकने वाले उनके सत्यप्रेमी मन को सत्यार्थ प्रकाश ने ही सच्ची ज्योति प्रदान की थी।

महात्मा मुंशीराम शैशवकाल से ही सत्यमार्ग के पथिक थे। उनके घर का वातावरण प्राचीन रूढ़ियों और अंधविश्वासों से परिपूर्ण था। माता-पिता की प्रेरणा से उन्हें सभी रीतियों को निभाना पड़ता था। परन्तु उनके अतरतम में सदा एक प्रश्न जागृत रहता था ? क्या यह सत्य है ? नियम पालन और तत्परता उनके जन्मजात गुण थे। इन्ही गुणों ने इन्हें आगे चल कर स्वा० श्रद्धानन्द बनाया। उनका सत्यप्रेम ही उन्हें क्रमशः वैदिक धर्म के उज्ज्वल--मार्ग पर ले गया। सत्य का ज्ञान होते ही उन्होंने प्राचीन परम्परागत मिथ्या रूढ़ियों को झटका मार कर तोड़ दिया और पुनः उनकी ओर आँख उठा कर भी नहीं देखा। आज वर्षों से हम आर्यसमाज के सदस्य, मन्त्री और प्रधान बनकर भी अनावश्यक प्रथाओं में बंधे रहते हैं। असत्य को असत्य जानकर भी उसका परित्याग नहीं कर पाते। कितनी विड़म्बना है !

स्वामी श्रद्धानन्द सच्चे अर्थों में ऋषि दयानन्द के शिष्य थे। वैदिक धर्म के अनुयायी थे। किसी भी सत्य को जान कर उसे तुरंत कार्यरूप में परिवर्तित कर देना उनका सर्वश्रेष्ठ गुण था। उन्हें सत्यार्थप्रकाश पढ़ने को मिला तो जब तक उसे पूरा पढ़ नहीं लिया भोजन नहीं किया। जब उन्हें ज्ञान हुआ कि शराब और माँस हेय और त्याज्य हैं तो एकदम उनका बहिष्कार कर डाला। शराब के प्याले और पात्र उठाकर गली में फेंक दिए। पक्के शाकाहारी बन गए। वे असत्य का त्याग और सत्य का ग्रहण तुरंत करते थे।

अपने जीवन को सुन्दर और सदाचारी बना कर ही उन्होंने सन्तोष नहीं किया। वह आगे बढ़े। उन्हें अपनी ही उन्नति में संतोष नहीं था, वे सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझते थे।

उनका हृदय वैदिक धर्म के प्रति, सत्यार्थप्रकाश के प्रति, श्रद्धा से भरपूर था। सत्यार्थप्रकाश की प्रत्येक पंक्ति उन्हें कर्म का उपदेश दे रही थी। उन्होंने उसमें लिखित शिक्षण-प्रणाली को देखा। अध्ययन किया, विचार किया, उनका मन ज्योति से भर उठा। उन्हें भारत का भविष्य आलोकमय दिखाई दिया। उनका शरीर क्रियाशील हो उठा। उनके हृदय में एक ध्वनि उठी। क्यों न इस शिक्षण-प्रणाली को साकार किया जाए ? गुरुकुल खोला जाए। कहाँ ? कैसे ? कौन भेजेगा अपने लाडलों को ? कौन खेलेगा उनके स्वर्णमय भविष्य से इस प्रयोग के लिए ? श्रद्धा से पूरित मन में आकाश-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाणी हुई—मैं करूंगा ? स्वयं करुंगा अपनी संतान को लेकर—अपने सपूतों को लेकर।

भारतीय सभ्यता की प्रतीक भागीरथी गंगा के तट पर, हिंसक-जीवों से भरे घोर जंगल में गुरुकुल खोला गया। ऋषि दयानन्द का सर्वश्रेष्ठ स्वप्न साकार हुआ। उसमें प्रवेश पाया सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द के होनहार पुत्रों ने। कितना बड़ा बलिदान ! कितना बड़ा त्याग ! कल्पना कीजिए, और तुलना कीजिए आज के अपने जीवनों से। लज्जा से सिर झुक जाता है। हम अपने बच्चों को वैदिक-ज्ञान की शिक्षा नहीं देते, उन्हें कुमार-कुमारी सभाओं के सदस्य तक नहीं बनाते, अपने साथ सत्संग में नहीं ले जाते। उनका समय नष्ट हो जाएगा, उनका भविष्य बिगड़ जाएगा। वे तो डाक्टर या वकील बनेंगे, इंजीनीयर या बैरिस्टर बनेंगे, क्या रक्खा है इस भारतीयता और वैदिक धर्म में ? क्या यही है हमारा धर्मप्रेम और श्रद्धा, क्या यही है हमारा कृण्वन्तों विश्वपार्णिष्य का नारा ?

स्वामी श्रद्धानन्द के युग में लोगों ने देखा गंगा नदी के तट पर ऋषियों का युग लौट आया है, तपोवन बन गया है। यज्ञ का धूम उठ रहा है, वेदान्तों की ध्वनि गुंजरित हो रही है सिंह, सर्प और व्याघ्र से भरे उस वन में आश्रमों का विस्तार हो रहा है। देश-विदेश के बालक वहां आकर गुरुजनों के साथ रह कर शिक्षा पा रहे हैं। श्रद्धानन्द की श्रद्धा की मदाकिनी गंगा की धारा से होड़ लेने लगी है। श्रद्धालु भक्तों की भीड़ खिची चली आ रही है। अन्न, धन, वस्त्र किसी वस्तु की कमी नहीं। ऋषि ने अनेकानेक अजेय कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके गुरुकुल का आदर्श भारतीय जनता के सन्मुख प्रस्तुत किया। अपनी उस प्राचीन भारतीय संस्कृति का वह गौरवमय रूप भारत के सन्मुख रक्खा, जिसका वर्णन श्री मैथिलीशरण गुप्त जी की लेखनी से इस रूप में हुआ है—

स्वामी श्रद्धानन्द प्रगतिशील व्यक्ति थे। उनकी विकसित होती हुई आत्मा गुरुकुल में सीमित न रह सकी। उन्होंने विदेशी सरकार से पीड़ित भारत माता की करुण पुकार को सुना। उन्हें सत्यार्थप्रकाश में लिखित ऋषि दयानन्द की उन पंक्तियों का ध्यान हो आया कि चाहे कोई कुछ भी करे अच्छे से अच्छा विदेशी राज्य भी अपने स्वदेशी राज्य से अच्छा नहीं होता। उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। यह दिल्ली नगरी वह ऐतिहासिक—वीर-दिवस न भूली होगी जब चाँदनी चौक में खड़ी भीड़ पर गोली चलाने वाली सेना के आगे इस सन्यासी ने अपनी कठोर छाती को जनता की ढाल बनाकर कहा था "यदि साहस हो तो चलाओ गोली" और तब ? तब संगीने नीचे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

झुक गई थीं, जनता के मस्तक झुक गए थे स्वामी श्रद्धानन्द के तप के आगे, त्याग के आगे।

सचमुच संसार में काम वही करते हैं, जो मृत्यु से नहीं डरते, जिनके हृदय में एक लगन होती है, एक आग होती है, जिनके जीवन का कोई लक्ष्य होता है, जो केवल खाने-पीने मौज करने के लिए नहीं जीते। देश, धर्म और जातियों को वही पालते-पोसते और बढ़ाते हैं।

स्वा० श्रद्धानन्द ने ऋषि दयानन्द को अपना सच्चा गुरु माना था इसलिए यह उनके सारे स्वप्नों को एक के बाद एक साकार करते गए। गुरुकुल खोला, वैदिक धर्म का प्रचार किया। देश को स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाया तब और आगे बढ़े।

हिन्दू जाति की घटती हुई संख्या को देखकर उन्होंने विधर्मियों के लिए वैदिक धर्म का द्वार खोल दिया। और कहा—सब आओ। कोई भय नहीं, कोई चिन्ता नहीं। यह तो सार्वभौम धर्म है, सब का अपना घर है, सर्वव्यापक भगवान् का मंदिर है। इसमें विचरो, भगवान् की प्रेमभरी वाणी को सुनो, सभी उस अमर पिता के अमृत-पुत्र हैं। उसकी गोद हमारे लिए सदा ही खुली है। ऋग वेद में कहा है :—

ओ३म् सः नः पितेव सूनवे अग्ने सूपायनो भव

हे पितर आप हमें ऐसे मिलो जैसे पिता पुत्र को झटपट मिल जाता है।

भारत के जन-मन ने उनके इस आवाहन को सुना। उनके आमंत्रण को स्वीकार किया। यवन और ईसाई अपना चोला बदलने लगे। पवित्र वैदिक धर्म में दीक्षित होने लगे। यह एक नवीनता थी, एक क्रांति थी। क्या एक विधर्मी भी हिंदू बन सकता है? यवनों के कान खड़े हो गए। उन्हें तो दिन में तारे दिखाई देने लगे। उनके पैरों की नीचे की धरती डगमगाने लगी। स्वा० श्रद्धानन्द का शरीर उन्हें भयकर सिंह के सदृश भयानक दृष्टिगोचर होने लगा। उन कायरों ने षड्यंत्र किया। धोखे से हत्या करने के लिये अब्दुलरशीद को उनकी रुग्णावस्था में उनके घर भेजा। स्वामी जी लेटे हुए थे। बोला—"स्वामी जी मैं आप के पास अपना एक संदेह निवारण करने आया हूँ" स्वामी जी उस कपटी को न पहिचान सके। उत्तर दिया—बैठिए— उसने पानी माँगा। स्वामी जी ने अतिथि सत्कार को अपना धर्म समझते हुए सेवक को पानी लेने के लिए भेज दिया। परन्तु वह दुष्ट भेड़िया तो खून का प्यासा था। नौकर के बाहिर जाते ही दो-तीन गोलियां चला दीं।

दुष्टों की पापयोजना पूरी हुई। धर्मवीर स्वा० श्रद्धानन्द ने इस नश्वर शरीर का परित्याग किया। परन्तु उनका श्रद्धा रूपी शरीर आज भी जीवित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जागृत ज्योति के समान जगमगा रहा है।

कार्लमार्क्स के सिद्धांतों को स्टालिन ने कार्यों का रूप दिया, अशोक ने महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का देश-देशांतरों में प्रचार किया, इसी प्रकार यदि हम यह कहें कि स्वामी श्रद्धानन्द ने ऋषि दयानन्द के पवित्र सिद्धांत को कर्म का कलेवर पहिना कर संसार के सम्मुख उसका सच्चा, कल्याणमय और सुन्दर रूप रक्खा तो अतिरंजित न होगा।

आइए आज हम उस हुतात्मा के प्रति अपने भावों की श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने जीवन क्षेत्रों को भी श्रद्धा के जल से सींचकर हरा-भरा बनाएं जिससे वैदिक-उद्यान की सुगंधि विश्व भर को सुगंधित बनाए।

वीर सैनिक

स्वामी श्रद्धानन्द जी एक सुधारक थे। वे कर्मवीर थे, वाक्शूर नहीं। उनका जीवित जागृत विश्वास था। इसके लिये उन्होंने अनेक कष्ट उठाये थे। वे संकट आने पर कभी घबराते नहीं थे। वे एक वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग शय्या पर नहीं, किन्तु रणांगन में मरना पसन्द करता है।

ईश्वर उनके लिये धर्मवीर हुतात्मा की मृत्यु चाहते थे और इसलिये यद्यपि वे उस समय भी रोग-शय्या पर थे, एक घातक के हाथों से उनकी देह का अन्त हुआ। गीता के शब्दों में "सुखिनः क्षत्रियाःपार्थ लभन्ते युद्धीमीदृशम्।" धन्य और सौभाग्यशाली हैं वे वीर, जिनको ऐसी मृत्यु प्राप्त होती है।

मृत्यु किसी भी समय सुखदायक होती है। किन्तु वह उस वीर के लिये दुगुनी सुखदायक होती है, जो अपने ध्येय या सत्य के लिये मरता है। इसलिये मैं उनकी मृत्यु पर शोक नहीं मना सकता। उनसे तथा उनके अनुयायियों से मुझे एक प्रकार की ईर्ष्या होती है। क्योंकि यद्यपि स्वामी जी मर गये हैं तथापि वे जीवित हैं, जबकि वे अपनी विशाल देह के साथ हमारे समक्ष विचरण करते थे। जिस कुल में उनका जन्म हुआ और जिस देश के साथ उनका संबंध था वे उनकी इस प्रकार की शानदार मृत्यु पर बधाई के पात्र हैं। वे वीर के समान जिये और वीर के समान ही मरे।

—महात्मा गाँधी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रद्धानन्द-संकीर्तन

(१)

मरते-मरते भी हमें मरना सिखा कर चल दिये।
वे अमर जीवन का नुसख़ा बता कर चल दिये॥
आपकी हस्ती थी या तसवीरे इस्तक़लाल थी।
गोलियां पिस्तौल की सीने पर खाकर चल दिये॥
हुए तमंचे से कलेजे में सूराख़ तीन।
तीन अक्षर ओ३म् के दिल में दिखा कर चल दिये॥
लग गई अब खून की धारों से पक्की दाग़ बेल।
वीर पुत्रों के लिए रस्ता बता कर चल दिये॥
केस शुद्धि का न अब तनसीख़ के काबिल रहा।
फ़ैसले पर खून की मुहरें लगा कर चल दिये॥
अब चलीं शुद्धि के-पौदे की जड़ें पाताल को।
खूने दिल से बाग़वां पानी लगा कर चल दिये॥

(२)

हासिदों को था शराफ़त और अदालत पर गरूर।
आज़माना था उन्हें बस आज़मा कर चल दिये॥
देख कर क़ातिल को अपने सहज बुज़दिल जनखिसाल।
हथकड़ी की चूड़ियां कर में पिन्हा कर चल दिये॥
मुद्दआ यह न था औरों पर पड़े गर्दोगुबार।
धर्म के पथ में लहू अपना बहा कर चल दिये॥
कोई मां का लाल हो अब आके सज्जादः नशीं।
आप तो मठ में पवित्रासन बिछा कर चल दिए॥
आ गया था वन के अग्नी बाल, अग्नी का पयाम।
यों शरण में अग्नि की आनन्द पाकर चल दिये॥
हो गए बेताब श्रद्धानन्द स्वामी जब शहीद॥
धैर्य और संतोष सब दामन छुड़ा कर चल दिये॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हुआ देखो भारत पै कुर्बान स्वामी ।
यह संदेश घर घर सुनाना पड़ेगा ।।
किया क़त्ल है जिसने स्वामी हमारा ।
उसे भी तो छाती लगाना पड़ेगा ।।
न क़त्लों से होगी कभी बन्द शुद्धि ।
हमें बच्चा बच्चा कटाना पड़ेगा ।।
ज़माने से अब नाम कुफ़रो दग़ा को ।
तुम्हें आर्यो अब मिटाना पड़ेगा ।।
दयानन्द के हम हैं सच्चे सिपाही ।
जहां भर को आर्य बनाना पड़ेगा ।।
मरे तो नहीं बल्कि जिन्दा हैं स्वामी ।
अमर नाम उनका बनाना पड़ेगा ।।
तेरे दरसनों को हम आए हैं स्वामी ।
हमें अब तो दर्शन दिखाना पड़ेगा ।।

(३)

खिदमते धर्म में जो कि मर जायेंगे ।
नाम वे अपना दुनिया में कर जायेंगे ।।
धर्म-परचार करने में एक दो नहीं ।
देख लेना हजारों के सर जायेंगे ।।
यह न पूछो कि मर कर किधर जायेंगे
वह जिधर भेज देगा उधर जायेंगे ।।
आप दिखला रहे हैं किसे तुर्रशियां ।
ये नशे वे नहीं जो उतर जायेंगे ।।
टूटने पाये माला न यह प्रेम की ।
कीमती ये रतन सब बिखर जायेंगे ।।
लो अछूतों को अब मिला हिन्दुओ ।
वर्ना ये लाल गैरों के घर जायेंगे ।।
वेद की शुद्ध तालीम दो प्रेम से ।
लोग बिगड़े हुए भी सुधर जायेंगे ।।
या तो पहुँचेंगे मक़सद पै परकाश हम ।
या ज़माने से एक दिन गुजर जायेंगे ।।
आप माने न माने खुशी आप की ।
हम तो अपना फ़र्ज़ अदा कर जायेंगे ।।

Dr. Vivek Arya Memorial Trust

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(४)

तू पैदा हुआ था ज़माने की ख़ातिर ।
तू मारा गया आजमाने की ख़ातिर ।।
भला हम तेरा क्यों न अहसान मानें ।
कलेजे से उनको लगाने की ख़ातिर ।।
मरा है तू हमको जिलाने की ख़ातिर ।
जनाया गया खाक में किस लिए तू ।।
नजर में हम री समाने की ख़ातिर ।
हमेशा रही तुम को मलहूज़ स्वामी ।।
हर हिन्दोस्तां के घराने की ख़ातिर ।
मरे भी तो बन्दूक़ से तुम मरे हो ।
भला क्यों बहादुर कहाने की ख़ातिर ।।
मुसीबत उठाते रहे उम्र भर तुम ।
हमें सं.धे रस्ते पै लाने की ख़ातिर ।।
हमें मौत तेरी ये इबरत है स्वामी ।
नहीं दिल्लगी दिल लगाने की ख़ातिर ।।

(५)

शहीदों के खूं रंग लाते रहेंगे ।
ये खूने जिगर को बहाते रहेंगे ।।
चाहे क़त्ल करदो न कम होगी शुद्धि ।
धरम पर युंही सर कटाते रहेंगे ।।
न डर कर कभी हम तो पीछे रहेंगे ।
कदम आगे हर-दम बढ़ाते रहेंगे ।।
अलग हो गए पहले हम से जो भाई ।
उन्हें अब गले से लगाते रहेंगे ।।
छुआ छूत में जो समझते हैं हानी ।
यह उनके दिलों से हटाते रहेंगे ।।
जहालत के फूलों की माला बना कर ।
सदा बुज़दिलों को पिन्हाते रहेंगे ।।
धरम पर मुसीबत जो आये वह सहना ।
यह बच्चों को अपने पढ़ाते रहेंगे ।।
रहे कौम आज़ाद अपनी धर्म पर ।
सदा हम यही गीत गाते रहेंगे ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रो० भवानी लाल भारतीय

स्वामी श्रद्धानन्द

का

पुण्य स्मरण

अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द का पुण्य स्मरण आर्य जाति की सुप्त गरिमा को पुनः जागृति प्रदान करने वाला है। धर्म, समाज, शिक्षा, राजनीति साहित्य, भाषा और संस्कृति-प्रत्येक क्षेत्र में स्वामी जी ने देश को गौरवशाली नेतृत्व प्रदान किया। आर्यसमाज के वे सर्वमान्य नेता थे। उन्होंने पंजाब में आर्यसमाज के प्रादेशिक संगठन को वर्षों तक नेतृत्व प्रदान किया। उन्हीं की प्रेरणा से विश्व भर की आर्यसमाजों का केन्द्रीय संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के रूप में बन सका।

स्वामी दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट शिक्षा सिद्धान्तों को सक्रिय रूप देने हेतु स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की और स्वदेशी शिक्षा का सफल प्रयोग कर यह सिद्ध कर दिया कि विदेशी शासन द्वारा प्रचलित शिक्षण पद्धति दोषपूर्ण है और उसके स्थान पर भारतीय परम्पराओं की पोषक गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही सर्वाधिक उपयुक्त है।

आज शिक्षा का माध्यम एक जटिल प्रश्न बन गया है। अंग्रेजी के समर्थकों की ओर से यह युक्ति प्रस्तुत की जाती है कि स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं में विज्ञान की शिक्षा हिन्दी के माध्यम से नहीं दी जा सकती। ऐसे लोगों को यह ज्ञान होना चाहिये कि आज से ६० वर्ष पूर्व ही स्वामी श्रद्धानन्द के मार्गदर्शन में गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में विज्ञान, समाज शास्त्र, अर्थ शास्त्र, राजनीति, मनोविज्ञान और दर्शन जैसे विषयों की शिक्षा हिन्दी माध्यम से ही दी जाती थी और उस समय के गुरुकुल के प्राध्यापकों ने उच्चकोटि की पाठ्यपुस्तकों का भी निर्माण कर लिया था। इन पाठ्य पुस्तकों में से कतिपय निम्नलिखित हैं—

हिन्दी कैमिस्ट्री	ले०	प्रो० महेशचरण सिंह
विकासवाद	,,	प्रो० साठे, विनायक गणेश
भौतिकी	,,	प्रो० गोवर्धन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रसायन	लेखक	प्रो० गोवर्धन
गुणात्मक विश्लेषण	,,	प्रो० रामशरण दास सक्सेना
वनस्पति शास्त्र	,,	प्रो० सिन्हा
अर्थशास्त्र	,,	प्रो० प्राणनाथ विद्यालंकार
राजनीति शास्त्र	,,	,,
मनोविज्ञान	,,	प्रो० सुधाकर

उपर्युक्त उल्लेख से यह स्पष्ट है कि विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों का हिन्दी में निर्माण कर यह समस्या अत्यन्त सरलता पूर्वक सुलझा ली गई थी।

देश के स्वाधीनता संग्राम में स्वामी श्रद्धानन्द अविलम्ब कूद पड़े। परन्तु जब उन्होंने देखा कि मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति कांग्रेस को पथभ्रष्ट कर रही है तो वे तुरन्त कांग्रेस से पृथक् होकर हिन्दू संगठन और शुद्धि को काम में लग गये। अपने युग के वे हिन्दू समाज के निर्विवाद नेता थे।

पंजाब निवासी होने पर भी वे हिन्दी के दृढ़ समर्थक और उसे राष्ट्र भाषा पद पर प्रतिष्ठित किये जाने के इच्छुक थे। भागलपुर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वे सभापति बने थे। उनके द्वारा लिखित "कल्याण मार्ग का पथिक" हिन्दी के आत्मकथात्मक साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है। स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान आर्य जाति को युग युगान्तर तक प्रेरणा देता रहेगा।

*

अनुराग के आराध्य देवता

मेरी स्मृति और मेरे अनुराग के आराध्य देवता स्वामी श्रद्धानन्द वर्तमान सन्तति के सन्मुख एक ऐतिहासिक मूर्ति के रूप में विराजमान हैं। मैं सदैव अनुभव करती हूं कि स्वामी श्रद्धानन्द भारत के वीरकाल की एक दिव्य विभूति थे। अपनी भव्य मूर्ति और ऊंचे व्यक्तित्व के द्वारा वह अपने साथियों में देवता की नाईं रहा करते थे। एक समय वह एक बड़े शिक्षा केन्द्र (गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता थे। यद्यपि उन्होंने कभी किसी बड़े विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त नहीं की थी तो भी वह अपने जीवन की शहादत की अन्तिम घड़ियों तक साहस और कर्मयोग की अनुपम मूर्ति रहे और भारतीय जीवन के धार्मिक व आध्यात्मिक क्षेत्र में राष्ट्र सुधार के कार्यों में इन गुणों का सुन्दर परिचय देते रहे। मानव समाज की सेवा के सम्बन्ध में उनके उच्च भावों का मैं बहुत आदर करती हूं। —सरोजनी नायडु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वा० श्रद्धानन्द के अन्तिम क्षण

प्रो० इन्द्रजी प्रतिदिन की भांति दिनांक २३ दिसम्बर १९२६ की मध्यान्ह स्वामी श्रद्धानन्द के दर्शनों के लिए पहुँचे। कमरे सब खुले पड़े थे और भीतर सभी प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न थे। कई दिन-रात की सेवा से श्रान्त-क्लान्त स्वामी जी के मन्त्री श्री धर्मपाल विद्यालंकार पास के कमरे में विश्राम कर रहे थे और स्वामी जी का सेवक धर्म सिंह उन्हीं की चारपाई के समीप ही दरी पर लेटा नींद ले रहा था। इन्द्रजी ने किसी को सोते से जगाना उचित न समझा और सायंकाल दर्शन करने का निश्चय कर वापस लौट आए। ईसाई से आर्य समाजी बने एक लड़के को ऊपर भेज दिया, जिससे स्थान अरक्षित न रहे। लगभग ढाई बजे कतिपय सज्जन आ गए, जिसमें डाक्टर सुखदेव, कन्या गुरुकुल की आचार्या विद्यावती जी, भक्त जमुनादास जी आदि भी सम्मिलित थे। पौने चार बजे के लगभग स्वामी जी ने सब को विदा कर दिया। सेवक धर्मसिंह ने कमोडला दिया और स्वामी जी नित्य कर्मों से निवृत हो मसनद के सहारे सावधान होकर ऐसे बैठ गए कि मानो अमृतपान के लिए ही सिद्ध हों।

अभी सेवक ने कमोड उठाकर बाहर ही रखा था कि सीढ़ियों में एक व्यक्ति दृष्टिगोचर हुआ। डाक्टरों का निर्देश था कि अधिक व्यक्ति स्वामी जी के पास न आएं। आपको पूर्ण विश्राम करने दिया जाय। परन्तु सेवक के रोकने पर भी वह व्यक्ति दर्शन करने की हठ करता रहा। स्वामी जी ने उसकी आवाज सुनली थी और वे बोल उठे "कौन है, भीतर आने दो।" भला अन्तिम दिन का संदेश लेकर, जिसके आने की इतने दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे, उसको सीढ़ियों से ऊपर, घर के द्वार तक, आ जाने के उपरान्त भी खाली लौटा भी देते कैसे ? अन्दर आकर उसने स्वामी श्रद्धानन्द से कहा, "स्वामी जी, मैं आप से इस्लाम के मुतल्लिक कुछ गुफ्तगू करना चाहता हूँ।" स्वामी जी ने उत्तर दिया—"भाई मैं बीमार हूं, तुम्हारी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
दुआ से राजी ही जाऊंगा, तो मांगो क्या मांगते हो" कहकर स्वामी जी के आदेश पर सेवक ने उसे पानी भी पिला दिया।

पानी पीकर भीतर आते ही उस हत्यारे ने मसनद के सहारे बैठे स्वामी जी पर पिस्तौल से गोलियां दाग दीं। आंख झपकते ही दो फायर हो गये। लपक कर सेवक ने हत्यारे को पीछे से पकड़ लिया, परन्तु इसी बीच उसने तीसरी गोली भी चला दी थी। धर्मसिंह ने अपने प्राणों की चिन्ता छोड़कर उसके सामने आकर सामना करने का प्रयास किया तो उस हत्यारे ने धर्मसिंह पर भी गोली चला दी। रान पर गोली खाकर बेचारा धर्मसिह भूमि पर गिर पड़ा। हत्यारा भागने का प्रयास कर ही रहा था कि श्री धर्मपाल विद्यालंकार ने उसे धर दबाया। एक हाथ हत्यारे के रिवालवर वाले हाथ पर रखा और दूसरे से वे उसे अपने कब्जे में किये रहे और लगभग आधा घण्टे तक यही स्थिति रही।

धर्मसिंह लुढ़कता, पुड़कता मकान के छज्जे पर पहुंचा और उसने शोर किया तो लोग दौड़ते हुए वहां आने लगे। बिजली की तरह यह समाचार सम्पूर्ण दिल्ली में फैल गया। सम्पूर्ण राजधानी शोक के सागर में डूब गई, जिसने सुना वही सन्न रह गया। उनके स्वास्थ्य में सुधार का समाचार सुनने से आशान्वित लोग स्वामी जी के निधन का दुखपूर्ण समाचार सुनने को तो तैयार ही न थे। और निधन भी एक हत्यारे की गोली से, नया बाजार की हिन्दु बहुल आबादी में। सहसा ही लोगों को इस महान् दुर्घटना पर विश्वास ही नहीं हो पा रहा था।

लोग घटनास्थल की ओर दौड़े चले आ रहे थे। नए बाजार में चारों ओर लोग जमा होते जा रहे थे। स्वामी श्रद्धानन्द के अन्तिम दर्शनों के लिए आने वालों का यह सिलसिला बड़ी रात गए तक चलता रहा। दिल्ली की सड़कों, गलियों, बाजारों, मुहल्लों, दुकानों, घरों में बस एक ही चर्चा थी "स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या" की। यह कोरी दुर्घटना नहीं थी, अपितु सम्पूर्ण आर्य (हिन्दू) जगत पर कल्पनातीत भयंकर वज्रपात था। यह (२३ दिसम्बर, १९२६) वह दिन था, जिस दिन सूर्य भगवान् ने दक्षिण की ओर से उत्तर की ओर प्रस्थान किया था और लगभग ५ हज़ार वर्ष पूर्व महाभारत के महान् बली भीष्म पितामह ने शर शय्या पर पड़े हुए स्वेच्छया प्राण समर्पित किए थे और अब उस दिन दिल्ली के भीष्म पितामह, जनता के हृदय सम्राट् स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने भारत की प्राचीन संस्कृति के कुरुक्षेत्र में छाती पर गोली खाकर अपने प्राणों को विसर्जित कर दिया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डा० विमलजलाल, डा० असारी और डा० अब्दुलरहमान आदि ने परीक्षा की और शरीर निष्प्राण होने की सूचना दे दी। रोगी देह तो पहले से ही ठण्डी हो चुकी थी, गरम औषधियों की उष्णता से उसे बलात् गर्म रखकर यमराज के साथ लड़ाई लड़ते हुए, प्रकृति की अनिवार्य घटना को टालने का व्यर्थ प्रयास हो रहा था। भला वह कैसे टल पाती? पर उस कर्मशील जीवन को उस वृद्धावस्था में भी अन्तिम दिन, अन्तिम श्वांस रोग-शैय्या पर ही सिसकते हुए तो नहीं लेनी थी, अपितु जीवन की आवश्यम्भावी इस अन्तिम यात्रा को जीवन से भी अधिक स्फूर्तिदायक बना देना था, और इस संसार से विदा होते-होते भी कुछ करते हुए ही जाना था। मनोवाछित वर-दान के समान आपको वीरगति प्राप्त हुई। उकसाए हुए मदान्ध अब्दुल रसीद को क्या पता था कि जो कुछ वह कर गया है, होगा उससे ठीक विपरीत ही। वह नहीं जानता था कि वह अपने अमानवीय कृत्य से इस्लाम की चादर पर एक ऐसा बदनुमा धब्बा लगा जाएगा, जो कभी न धुल पायेगा परन्तु जिसको वह संसार से मिटाने आया है वह सदा सर्वदा के लिए अमर पद पा जाएगा। निश्चय ही स्वामी जी को अमर पद मिल गया, जिसकी खोज में लोग पत्थरों, पर्वतों, कन्दराओं, मन्दिरों, गिरजों और मथुरा, काशी और काबा में भटकते फिरते हैं।

गोली चलने के आधा घंटा बाद पुलिस घटनास्थल पर पहुंची। उसके थोड़े समय उपरान्त वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री मार्गन और शेख नजरुलहक भी वहां आए। हत्यारे को सिपाही को सौप दिया गया और जांच कार्य आरम्भ हो गया। कुछ दिन अभियोग चला और हत्यारे को मृत्यु-दण्ड सुना दिया गया। परन्तु उसके पैरोकारों ने प्रिवी कौंसिल तक मुकदमा लड़ा परन्तु फांसी की सजा बहाल ही रही। इस्लाम के अनेक-धर्मान्ध पुजारियों ने तो हत्यारे को गाजी (धर्मवीर) के पद से सुशोभित किया और प्रिवी कौंसिल में की गई अपील की अस्वीकृति पर भी स्वामी जी के औरस पुत्र के नाते प्रो० इन्द्रजी ने उसको फांसी न देकर उसे इस्लाम के हाथों दे उसका भाग्य निर्णय छोड़ देने की सम्मति प्रदान की।

स्वामी जी की पार्थिव देह का देहली में न भूतो भावी सम्मान हुआ। सुदूर प्रदेशों से लोग आकर शवयात्रा में सम्मिलित हुए। जिसके लिये भी दिल्ली पहुंचना संभव हो सका, वह पहुंचा। हरिद्वार से गुरुकुल कांगड़ी के प्रायः सभी ब्रह्मचारी और कर्मचारी अपने कुलपिता के अन्तिम दर्शनार्थ दिल्ली पहुंचे! गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ भी उठकर दिल्ली ही चला आया था। बलिदान के तीसरे दिन शनिवार को अर्थी का जो विराट् जलूस निकला, वह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
सम्राट के मन में भी डाह पैदा कर रहा था। तीन मील तक नरमुण्ड ही नरमुण्ड दृष्टिगोचर हो रहे थे। शव पर इतने अधिक पुष्प और मालाएँ तथा इत्र इत्यादि बरस रहा था कि जिसको सम्भालना कठिन हो रहा था। पुष्प वर्षा की झड़ी लग गई थी। प्रातःकाल चला जलूस दोपहर के उपरान्त ही श्मशान भूमि तक पहुंच पाया। अपने हृदय सम्राट् की नश्वर काया को अग्नि को समर्पित कर दिल्लीवासी अपने घरों को ऐसे खाली हाथ लौटे थे जैसे कोई व्यापारी पैंठ से सर्वस्व लुटाकर निराशमन वापस आता है। वस्तुतः ऐसी ही स्थिति थी उनकी जैसी कि लखपति बनने की आशा करते-करते किसी साहुकार का अचानक दिवाला निकल जाने पर हो जाती है।

महान् हुतात्मा का हिन्दू-जाति को संदेश

इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि हमारे श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दू जाति पर तथा हिन्दुस्तान की बलि वेदी पर अपने जीवन की आहुति दे दी। उसका संपूर्ण जीवन और विशेषकर उनकी शानदार मौत हिन्दू जाति के लिए एक स्पष्ट संदेश देती है, हिन्दू-राष्ट्र के प्रति हिन्दुओं का क्या कर्तव्य है। इसे मैं स्वामी जी के अपने शब्दों में ही रखना चाहता हूँ। सन् १९२६ के २९ अप्रैल के लिबरेटर पत्र में वे लिखते हैं—

'स्वराज्य तभी संभव हो सकता है, जब हिन्दू इतने अधिक संगठित और शक्तिशाली हो जाएं कि नौकरशाही तथा मुस्लिम धर्मोंमाद का मुकाबला कर सके।"

उपर्युक्त उद्धरण से हिन्दू जाति की तीव्र मांग का पता चल सकता है और विशेषकर ऐसे नाजुक समय में जब कि इस पर चारों ओर से आघात और आक्रमण हो रहे हों। हिन्दुओं का एक प्रबल संगठन ही चारों ओर से सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है और यही सब दुर्घटनाओं की एक-मात्र रामबाण ओषध है। यदि हिन्दू जाति को शान और सम्मान से जीवित रहना है तो उसे यही पाठ याद करना होगा और उसे अमल में लाना होगा। हे हिन्दुस्तान के हिन्दुओ! यदि तुमने उस महान हुतात्मा के बहुमूल्य आदेश और सम्मति की अवहेलना की तो तुम्हारा क्लेश और नाश निश्चित ही है। हां, यदि तुम इसे क्रियात्मक रूप दे सको तो तुम उस भयंकर युद्ध में अवश्य विजयी होगे, जो युद्ध चारों ओर से इस जाति पर असंख्य दुर्घटनाओं के साथ हो रहा है। तभी तुम जातीय गौरव को स्थापित कर सकोगे और हिन्दू-राष्ट्र को इस मर्त्यलोक में तीव्र ज्योति से चमकता हुआ राष्ट्र बना सकोगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजी पढ़े व्यक्तियों व विदेशों के लिए

प्रभावशाली अंग्रेजी साहित्य

1 LIGHT OF TRUTH

An English Translation of **Satyarth Prakash**

महर्षि दयानन्द के महान ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद १८x२२/८ साइज में, सजिल्द मूल्य १०), ५ प्रतियों का मूल्य ४५) १० प्रतियों का ८०), २५ प्रतियों का १८७)५०, ५० के ३५०) और ६००) की १०० प्रतियां ।

स्टाक बहुत थोड़ा शेष है शीघ्र मंगाएं ।

2. TECHAINGS OF SWAMI DAYANANDA

महर्षि दयानन्द की विचारधारा और शिक्षाओं से सभी को परिचित कराने के लिए अनुपम पुस्तक । मूल्य ७५ पैसे

3. TEN COMMANDMENTS

आर्य समाज के १० नियमों की अभूतपूर्व व्याख्या स्व० पं० चमूपति जी की लेखनी से— मूल्य १)

4. Message of the Arya Samaj to the Universe.

भारतेन्द्र नाथ साहित्यालंकार लिखित—आर्य समाज का संदेश फैलाने हेतु प्रभावशाली पुस्तिका—जिसका ८ भाषाओं में अनुवाद हो चुका है । मूल्य ३० पैसे २५) सैकड़ा

5. VEDIC PRAYER

संध्या, प्रार्थना मत्र—हवन स्वस्ति वाचन शांति प्रकरण आदि सभी की पूर्ण व्याख्या हिन्दी और अंग्रेजी में एक साथ और चुने हुए भजन भेंट के लिए अत्युत्तम मूल्य १)

[फिजी निवासी श्री स्व० हरिश्चन्द्र गाजी की पावन स्मृति में]

6. DAYANANDA THE GREAT

पं० वेद मित्र ठाकुर लिखित प्रभावशाली ट्रेक्ट मूल्य १५ पैसे

जन ज्ञान प्रकाशन

१५९७ हरध्यान सिंह मार्ग, (निकट ३१ नाई वाला)

करोल बाग, नई दिल्ली-५ ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंगाइए : बांटिये
और
देश को बचाइये

अधिक से अधिक मंगाकर बाँटें

१. ईसाई पादरी उत्तर दें.....	—स्वामी श्रद्धानन्द	३) सैकड़ा
२. A challage to the christian Faith	,,	३) सैकड़ा
३. Bible in the Balance	—चार्ल्स स्मिथ	१५) सैकड़ा
४. ज्ञान विज्ञान के शत्रु ईसाई मत	—ओम्प्रकाश त्यागी	१०) सैकड़ा
५. पोप की सेना का भारत-पर हमला	—भारतेन्द्रनाथ	१०) सैकड़ा
६. ईसाइयों की प्रचार प्रणाली	—जगत् कुमार	१०) सैकड़ा
७. पादरियों को चुनौती	—स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती	१०) सैकड़ा
८. बाइबल को चुनौती	—ओम्प्रकाश त्यागी	१५) सैकड़ा
९. और पादरी भाग गया	— ओम्प्रकाश त्यागी	१०) सैकड़ा
१०. ईसाइयत की वास्तविकता	—शांति प्रकाश महोपदेशक	१०) सैकड़ा
११. बाइबल कसौटी पर.....	—चार्ल्स स्मिथ	१५) सैकड़ा

जन-ज्ञान प्रकाशन

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली-५.

ईसाइयत रोकने में : उदारता पूर्वक सहयोग दें

[illegible] क्षेत्रों में ईसाई विरोधी साहित्य तो चाहिए पर वे धन नहीं भेज सकते, अतः वहां साहित्य भेजने के लिए सहयोग चाहिए। आप अपनी ओर से ईसाई प्रभावित क्षेत्रों में वितरण के लिए अधिक से अधिक साहित्य भिजवायें। यह राष्ट्र की महत्वपूर्ण सेवा होगी। इसके लिए जितनी सहायता हमें प्राप्त होगी उतना ही साहित्य हम भेजते जायेंगे उदारता पूर्वक सहयोग दीजिए।

— राकेश रानी
सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक आर्य समाज, कालेज, स्कूल तथा वाचनालय
और आर्य परिवार में रहना ही चाहिए

वैदिक धर्म सम्बन्धी साहित्य

1. The Arya Samaj it's cult, and creed.

आर्यसमाज के गौरव, प्रसिद्ध विद्वान आचार्य श्री वैद्यनाथ शास्त्री द्वारा लिखित अनमोल ग्रन्थ, जो प्रत्येक विरोधी विचार वाले व्यक्ति को वैदिक दिचारधारा का बनाने की सामर्थ्य रखता है। भेंट के लिए सर्वोत्तम।
सजिल्द, पृष्ठ २७०, मूल्य १०)

2. Germs of Aryan Wisdom मूल्य २.५०)

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री लिखित, अंग्रेजी में वैदिक विचार धारा वेद मन्त्रों के आधार पर प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत की गयी है। शिक्षित वर्ग की आँखे खोलते के लिये अनुपम।

3. Vedic Caste System

वैदिक वर्ण व्यवस्था पर आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री लिखित यह पुस्तिका

४. तत्वार्थदर्श। पृष्ठ २७० सजिल्द मूल्य ५.००

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, ईश्वर, जीव, प्रकृति आदि सभी दार्शनिक विषयों पर विद्वान लेखक ने अत्यन्त सुलझे और प्रभावशाली ढंग से अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। ग्रन्थ स्वाध्यायशील के लिए संग्रह योग्य है।

५. वैदिक इतिहास विमर्श। मूल्य ७.२५

वेद मे इतिहास नहीं है इस विषय पर सबसे अधिक प्रमाणिक ग्रन्थ। विरोधी विद्वानों के मस्तिष्क बदलने में समर्थ आचार्य जी का महत्वपूर्ण ग्रन्थ

६. वैदिकयुग और आदि मानव 'वैदिक एज' में प्रकाशित विचारों का मुह तोड़ उत्तर : आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री की सशक्त लेखनी से। मूल्य ४.००

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री द्वारा सम्पादित

अंग्रेजी में आर्यसमाज का एक मात्र मासिक

VEDIC-LIGHT

के सदस्य बनिए

नमूना पत्र लिखकर बिना मूल्य मंगाइये

वार्षिक मूल्य १० रु० विदेश में १ पौंड

प्रकाशन विभाग—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

रामलीला मैदान नई दिल्ली-१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"जन-ज्ञान" के

वेद-प्रचार-यज्ञ में प्राप्त आहुतियां

१	श्रद्धेय महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती	— १०१-००
२.	श्री रतनचन्द जी सूद, दिल्ली	— १०१-००
३.	राय साहिब चौ० प्रतापसिंह जी करनाल	— ५००-००
४.	श्री द्वारकादास खन्ना अमृतसर	— ५०-००
५.	श्री ऋषि राम बत्रा श्रीनगर	— ५१-००
६.	श्री संवलिया प्रसाद पलियाकला	— २१-००
७.	श्रीमती आज्ञावती अमृतसर	— २१-००
८.	श्री मोहनदास जालना	— २०-००
९.	श्री वेदप्रकाश गोहाटी	— २०-००
१०.	श्री पी० एन० अरोड़ा उधना	— ५०-००
११.	श्री प्रज्ञामित्र रडारकेला	— २१-००
१२	श्री रामयतन लाल लखावर	— १५-००
१३.	श्री सत्यपाल गुप्ता अम्बाला छावनी	— २५-००
१४.	श्री केशवलाल जी सेंदड़ा	— ३१-००
१५.	श्री सच्चिदानन्दसिन्हा हजारीबाग	— २१-००
१६	श्री सच्चिानन्दब्रह्मचारी भागीबन्दर	— २४-००
१७.	श्री एम. गंगाराम निज़ामाबाद	— १५-००
१८.	श्री अमरनाथ शर्मा, धनबाद	— २५-००
१९.	श्री सच्चिदानन्दब्रह्मचारी भागीबन्दर	— २४-००
२०.	श्री छबीलदास सेनी कलकत्ता	— २१-००
२१.	श्री एम० पी० नारंग धनबाद	— २५-००
२२.	श्री मराठी बालराज यादगिरी	— २०-००
२३.	श्री रामबाबू श्रीवास्तव सीहोर	— २५-००
२४	श्रीमती कमल जुनेजा बम्बई	— २०-००
२५.	श्री ए० एच० जुंग, जर्मनी	— ५२-९५
२६.	श्री डा० ठाकुर हरिपाल उदयपुर	— १५-००

"जन-ज्ञान" के सदस्यों की कृपा से अंग्रेजी सत्यार्थप्रकाश छपा। प्रभु कृपा करें कि हम अंग्रेजी में ऋषि जीवन भी छपा सकें। सभी का हार्दिक धन्यवाद।

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती महाराज जी से एक भेंट वार्ता

*

श्री पूज्य स्वामी योगेश्वरानन्द जी महाराज (भूतपूर्व बालब्रह्मचारी व्यास देव जी महाराज) के दर्शन करने के लिए हम योग निकेतत पहुंचे। इच्छा बहुत थी पर समय मिलता न था फिर भी अपने व्यस्त जीवन में से दो घंटे निकाले और श्री पूज्य स्वामी जी महाराज की सेवा में जाने का निश्चय कर ही लिया।

'योग निकेतन' का मार्ग

ऋषिकेश नगर से लगभग दो मील ऊपर, गंगा तट पर, स्वर्ग आश्रम के सामने ही मुनि की रेती पर स्वामी जो महाराज का आश्रम स्थित है जिसका नाम "योग निकेतन" है। चतुर्दिक प्राकृतिक सुषुमा से व्याप्त परिवेश में स्थित यह आश्रम आज के द्रुतगामी समस्या सकुल नागरिक जीवन से सत्रस्त व्यक्ति के हृदय में हठात शान्ति और उल्लास प्रवाहित कर देता है। "योग निकेतन" का निर्माण सुरुचिपूर्ण व्यवस्था का परिचायक है। पूज्य स्वामी जी की कुटिया के अतिरिक्त १०-१२ अन्य कुटियाएं बनी हुई हैं जिनमें साधक रहते हैं। यहा सब कुटियाएं आधुनिक सुख सुविधाओं से पूर्णतः सज्जित हैं। कुछ साधक स्थिर रूप से अपनी कुटिया बनाकर यहां रहते हैं। कुछ ऐसी कुटियाएं भी है जो धनी मानी व्यक्तियों ने अपने लिए बनवा रखी हैं, ताकि जब वे आयें, उनमें रह सकें। आगे-पीछे इन कुटियाओं में अन्य साधक रहते हैं। निकेतन में अतिथिशाला भी है और अतिथियों की देख-रेख का अच्छा प्रबन्ध है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी जी का व्यक्तित्व

स्वामी जी से मिलने का समय मध्याह्नोत्तर ३ से ५ बजे तक का है। जब हम वहां पहुंचे। स्वामी जी महाराज मृगचर्म पर पद्मासन पर उपविष्ट थे। मुख मण्डल तेजस्वी और स्थित हास्य-युक्त दीप्ति-युक्त नेत्रयुगल से प्राणीमात्र के लिए करुणा और हित भावना का प्रसारण, वाणी में माधुर्य, शान्ति और सहानुभूति। स्वामी जी ने कुटिया में प्रवेश करते ही, हमारे विनम्र प्रणाम के उत्तर में,— अत्यन्त स्नेह से स्वागत किया।

योगमार्ग में प्रवृत्ति कैसे ?

प्रारम्भिक कुशल क्षेम और यात्रा की चर्चा के बाद हमारा पहला प्रश्न था—

"स्वामी जी महाराज ! आपको योगमार्ग में प्रवृत्त होने की प्रेरणा किसी घटना विशेष से हुई या स्वतः प्रसूत थी ?"

अर्ध निमीलित नेत्र सहित तनिक विचार के बाद महाराज बोले—

"मैं बचपन से ही विचार शील और एकान्त प्रिय था। सदा गंभीर चिन्तन में डूबा रहता था। ११-१२ वर्ष के बच्चे चंचल, नटखट और घर में माता पिता के लिए सिरदर्द होते हैं। मैं इसके सर्वथा विपरीत था। मैं विश्व की समूची रचना के मूल कारण और इसके सृष्टा की समस्या का हल सोचने में ही डूबा रहता था। मेरे इस "स्वतः केन्द्रित" व्यवहार से माता-पिता भी चिन्तित रहते थे। इस समय मुझ पर स्वामी शंकराचार्य, महात्मा बुद्ध और स्वामी दयानन्द जी महाराज के जीवनों का गहरा प्रभाव पड़ा। मैंने निश्चय किया कि मैं शंकर के समान प्रकांड विद्वान, बुद्ध के सदृश तपस्वी त्यागी और महर्षि दयानन्द के सदृश नैष्ठिक ब्रह्मचारी और योगी बनूंगा।

चार गुरुचरणों की कृपा

दूसरा प्रश्न—महाराज ! आपको जीवन में कई गुरु मिले होंगे। क्या आप बता सकेंगे कि इन में से किस महानुभाव ने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया ?

स्वामी जी ने कहा—ऋषि दत्तात्रेय द्वारा की गुरु धारणा की तरह यूं तो मैंने लगभग डेढ़ दर्जन गुरुजनों के चरणों में बैठ शिक्षा प्राप्त की है। पर मेरे जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव डालने अथवा जीवन दिशाओं को एक दम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai
बदल देने और मुझे योग विद्या के गूढ़तम रहस्यों का ज्ञान देने वाले तीन गुरुजनों का नाम मैं सदा पूर्ण श्रद्धा से स्मरण करता हूं।

इनमें सबसे प्रथम तो स्वामी रामानन्द ही हैं जिन्होंने मुझे बचपन में हिन्दी और संस्कृत की शिक्षा देने के अतिरिक्त सन्ध्या और गायत्री मंत्र द्वारा ध्यान करने की विद्या सिखाई। सबसे अधिक उपकार जो स्वामी जी ने मुझ पर किया, वह था बचपन से ही मेरी उग्र वैराग्य भावना को देखकर और गृह त्याग के लिए मुझे दृढ़ निश्चय के समय उत्सुक देखकर इसमें मेरी सहायता की। हरिद्वार में स्वामी सत्यदेव से कजली वन में एक वृक्ष पर मचान बना कर ११ मास तक रहते हुए योगाभ्यास के लिए कठोर तप की शिक्षा ग्रहण की और १२ घंटों तक समाधिस्थ होने का अभ्यास किया। तीसरे गुरु अवधूत परमानन्द थे जिनसे मेरी भेंट श्रीनगर, हजारीबाग में हुई। ये कोपिन धारी साधु उच्चकोटी के योगी और जीवनमुक्त महात्मा थे। इनसे मैंने १२ घंटे की शून्य समाधि, ४० प्रकार के प्राणायाम, १८४ प्रकार के आसन, ब्रह्मचय इत्यादि की शिक्षा प्राप्त की। मेरे चौथे गुरु वे योगी थे जिनके दर्शन मैंने गंगाजी से आगे तिब्बत की ओर जाते हुए श्याम गंगा के किनारे एक गहन गुफा में किये थे। अत्यन्त कठिनता के साथ यहां तक पहुंच सका था। ये गुरु संसार से एकदम विरक्त कन्द मूल सेवी काष्ठ मौनी और योग विद्या के पारंगत थे। इनके चरणों में केवल तीन दिन रहने की ही स्वीकृति मुझे इस आत्मनिष्ठ परमयोगी से मिली पर इनसे मैंने योग विद्या के कई गूढ़तम रहस्यों को जाना। इन्होंने मुझे १७ घंटे तक अपने सन्मुख बैठा-कर कर समाधि लगाने की शिक्षा दी मैं इन सब ब्रह्म निष्ठ गुरुजनों का कितना आभारी हूँ—यह मैं वाणी से प्रकट नहीं कर सकता।

योग मार्ग में बाधाएं

तीसरा प्रश्न—योग मार्ग में सर्वाधिक प्रबल बाधा क्या है ?

स्वामी जी ने उत्तर दिया कि यह तो सर्व विदित है कि मन की चंच-लता प्रबल बाधा है पर मुझे अपने दीर्घकालीन साधना जीवन में अगर हजारों नहीं तो सैंकड़ों साधकों और योग विद्या के जिज्ञासुओं से पाला पड़ा है। मेरा यह दृढ़ विश्वास है और मैं प्रत्येक साधक से बल पूर्वक यह कह देता हूं कि जब तक वे दो प्रबल मानसिक शत्रुओं पर विजय प्राप्त नहीं करेंगे तब इस पथ पर चलने के अधिकारी कदापि नहीं बन सकते हैं। यह दो प्रबल शत्रु हैं, काम वासना और रसना। इन पर नियंत्रण करने के लिए कठोर आत्म बल प्राप्त करने की आवश्यकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानसिक शत्रुओं पर पूर्ण विजय

हम ने बड़ी नम्रता और इन शब्दों के साथ कि—आप तो योगीराज हैं नैष्ठिक ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यासी हुए हैं। इसलिए आपके प्रति रंचमात्र भी सन्देह करना महान् अनर्थ होगा, फिर भी जनता को आपके पुनीत जीवन की एक झाँकी दिखाने के लिए क्या हमारा यह विश्वास करना अनुचित तो न होगा कि आपने इन दोनों भयावह शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त कर लिया है ? अपने इस प्रश्न की पुष्टि में हमने यह भी निवेदन किया कि महर्षि दयानन्द से भी कलकत्ता में एक बंगाली विद्वान ने यही प्रश्न किया था।

स्वामी जी इस प्रश्न को सुन कर कुछ मुस्कराये कुछ क्षण मौन रहने के बाद बोले, आपका प्रश्न सर्वथा समुचित है। इसका जो उत्तर महर्षि ने दिया था, वह बड़ा अमूल्य है। मेरा भी वही उत्तर है कि ध्यान, चिंतन और लोक सेवा के कार्यों में मैं इतना व्यस्त रहता हूँ कि मुझे इन शत्रुओं के बारे में सोचने का अवकाश ही नहीं मिलता। इस के साथ मैं सतत आत्म निरीक्षण करता रहता हूँ। जिससे इस पाप का बीज वपन ही नहीं होने पाता।

आज का भटका मानव ?

पांचवां प्रश्न—आज के अत्यन्त व्यस्त और चौमुखी समस्याओं तथा उलझनों से परिपूर्ण जीवन को ध्यान में रखते हुए एक सामान्य व्यक्ति तक योग साधना के मार्ग पर चलने के लिए आप प्रारम्भिक पग के रूप में आप क्या निर्देश दे सकते हैं ?

स्वामी जी महाराज ने कहा कि मानव के सम्मुख सृष्टि के आदि काल से समस्याएं और उलझने रही हैं, भले ही देश, काल और परिस्थिति के अनुसार उनके बाह्य रूप में विभिन्न और विविधता प्रकट होती हो। आज का मनुष्य जिन प्रश्नों और कठिनाईयों को भयंकर समस्या और उलझा हुआ समझता है, उसका मूल कारण आत्म तत्त्व से अपने को असन्तुष्ट रखना तथा ईश्वरीय शक्ति के प्रति अनास्था तथा उससे विमुख होना है। अगर मानव भारतीय योग शास्त्र के अनुसार तनिक भी नियमित रूप से साधना करे, निश्चय ही इन, समस्याओं और उलझनों का हौआ, तत्काल, काफूर हो जाएगा।

इस मार्ग पर चलने के लिए, संक्षेपतः न्यूनतम साधना, प्रतिदिन, कम से कम दो घटाएक आसन पर स्थित एकान्त चिन्तन और मौन भाव के साथ ईश्वरार्पण तथा प्रभु नियमों का दृढ़ता से पालन आवश्यक है। ऐसा करते हुए मनुष्य योग मार्ग पर चलने का अधिकारी बन सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी जी का दैनिक कार्यक्रम

हमारा अंतिम प्रश्न था—स्वामी जी महाराज ! आपका दैनिक कार्यक्रम क्या है ?

महाराज ने उत्तर दिया—मैं प्रातः ३ बजे जागकर नित्यकर्मों से निवृत्त हो ४ बजे से ८ बजे तक समाधिस्थः, प्रातः ८ से ९॥ बजे तक योग आसन, प्राणायाम, हठयोग की प्रक्रियाएं, इसके पश्चात स्वाध्याय दोपहर को भोजन, विश्राम, ३ से ५ तक निकेतन के सत्संगियों अथवा बाहर से आये दर्शकों से वार्तालाप फिर सांय ५ से रात १० बजे तक समाधिस्थः, प्रार्थनाभजन और मौन। रात्री १० बजे शयन। रात को भोजन नहीं करता, केवल आधा सेर गो दुग्ध पीता हूँ।

पूज्य स्वामी जी महाराज के चरणों में विनम्रतापूर्वक हार्दिक धन्यवाद देते हुए हम योग निकेतन से विदा हुए। श्रद्धेय स्वामी जी का आशीर्वाद सदा ही हमें प्राप्त रहा है और रहेगा।

आवश्यकता है ?

सुन्दर, स्वस्थ्य, योग्य आर्य विचारों वाले युवक की, वैश्य अग्रवाल गर्ग गोत्रीय सम्पन्न आर्य परिवार की २२ वर्षीय, एम. ए. बी. एड., कन्या के लिए—अग्रवाल एवं इंजीनियर, डाक्टर अथवा उच्च अधिकारी पद पर नियुक्त युवक को प्राथमिकता दी जाएगी। पत्र व्यवहार शीघ्रातिशीघ्र। द्वारा के० आर० जन-ज्ञान प्रकाशन, १५९७, हरध्यान सिंह मार्ग नई दिल्ली-५ करें।

भूल सुधार

पृष्ठ ९० से आगे पृष्ठ संख्या फिर ८३ से आरंभ हो गयी है। पाठक, कृपया ८३ को ९१ समझ उससे आगे पृष्ठ ठीक कर लें।

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लक्ष्मीपति स्व० श्री जुगल किशोर जी बिरला
त्याग और योग की प्रतिमा
स्वामी योगेश्वरानन्द जी सरस्वती
के चरणों में

मुद्रक-प्रकाशक-संपादक पंडिता राकेश रानी द्वारा रावसीना
प्रिंटरी, दिल्ली में मुद्रित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक)
१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग
नई दिल्ली-५

मार्गशीर्ष २०२०
दिसंबर १९७०

Regd. No
D. 1631

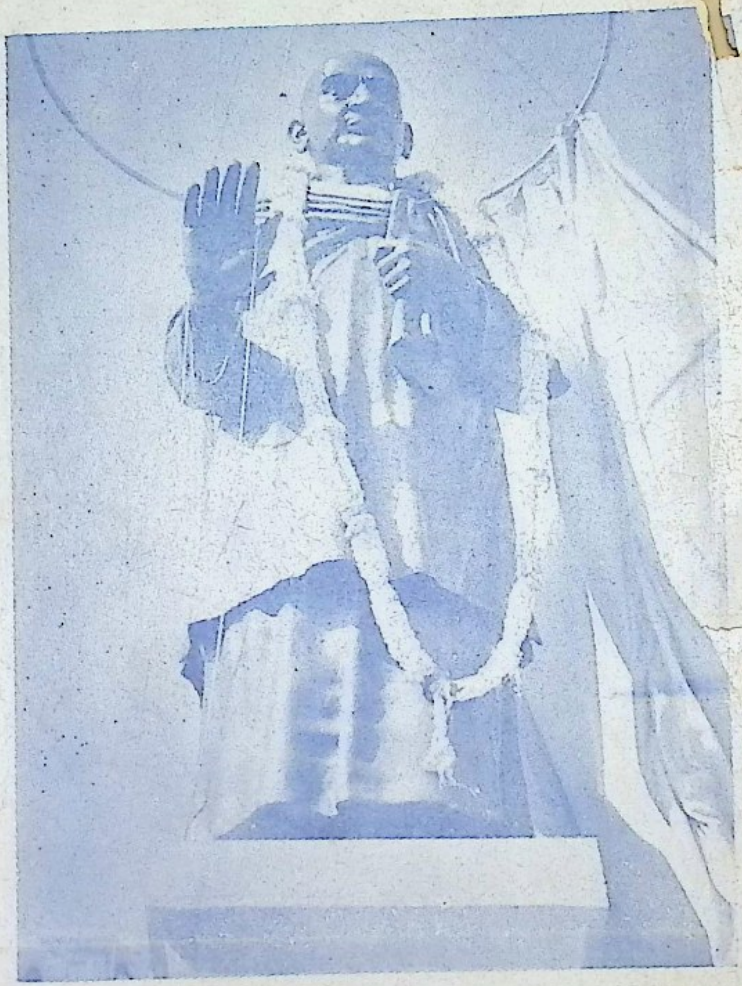

स्वामी श्रद्धानन्द की चांदनी चौक दिल्ली में स्थापित कांस्यप्रतिमा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi